शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

सत्र–5 पेपर 7 (DSE- E6)

सत्र–6 पेपर 12 (DSE- E131)

विधा विशेष का अध्ययन

(शैक्षिक वर्ष 2021-22 से)

बी. ए. भाग–3 हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2021
बी. ए. भाग 3 (हिंदी : बीजपत्र-7 और 12)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 300

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्रभारी कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-92887-81-9

★ दूरशिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

सलाहकार समिति

प्रा. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
मा. कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एम. एम. साळुंखे
माजी कुलगुरू,
यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नाशिक

प्रा. (डॉ.) के. एस. रंगाप्पा
मा. कुलगुरू,
म्हैसुर विश्वविद्यालय, म्हैसुर

प्रा. पी. प्रकाश
अतिरिक्त सचिव-II
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नवी दिल्ली

प्रा. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

प्रा. (डॉ.) आर. के. कामत
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान और तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एस. एस. महाजन
प्रभारी अधिष्ठाता, वाणिज्य और व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्य (डॉ.) आर. जी. कुलकर्णी
प्रभारी अधिष्ठाता, मानवविज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास
विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
प्रभारी कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्री. जी. आर. पळसे
प्रभारी संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्री. ए. बी. चौगुले
प्रभारी वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) डी. के. मोरे
(सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

डॉ. राजेंद्र पिलोबा भोसले
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
एवं
छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा

- **प्रो. डॉ. औदुंबर सरवदे**
  प्रभारी हिंदी विभाग प्रमुख,
  शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
- **डॉ. भारत खिलारे**
  कला व वाणिज्य कॉलेज, पुसेगांव, जि. सातारा
- **डॉ. संजय कांबळे**
  तुकाराम कृष्णाजी कोळेकर कला व वाणिज्य कॉलेज,
  नेसरी, ता. गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. बबन शंकर सातपुते**
  मिरज महाविद्यालय, मिरज, जि. सांगली
- **डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ**
  दादासाहेब जोतीराम गोडसे आर्टस, कॉमर्स, सायन्स
  कॉलेज, वडूज, तह. खटाव, जि. सातारा
- **डॉ. संजय पिराजी चिंदगे**
  देशभक्त आनंदराव बळवंतराव नाईक कला व विज्ञान
  कॉलेज, चिखली, ता. शिराळा, जि. सांगली
- **प्रो. (डॉ.) सुनील बापू बनसोडे**
  जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) एकनाथ श्रीपती पाटिल**
  राधानगरी महाविद्यालय, राधानगरी,
  जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. विष्णु रानबा सरवदे**
  प्रोफेसर, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- **डॉ. मोहन मंगेशराव सावंत**
  श्री. आण्णासाहेब डांगे कला, वाणिज्य व विज्ञान
  कॉलेज, हातकणंगले, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, वारणानगर,
  जि. कोल्हापुर
- **डॉ. मधुकर शंकरराव खराटे**
  कला, वाणिज्य व विज्ञान कॉलेज, बोदवड,
  जि. जळगाव
- **डॉ. श्रीमती सरोज संग्राम पाटिल**
  श्री शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, कोल्हापुर

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग–3 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन सामग्री सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। बी. ए. भाग 1, 2 तक की अध्ययन सामग्री से दूरशिक्षा योजना के छात्र जिस तरह लाभान्वित हुए हैं, उसी तरह बी. ए. भाग 3 के छात्र भी प्रस्तुत स्वयं–अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक–वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन–सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी. ए. भाग 3 के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी–अपनी इकाईयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, मा. प्र–कुलगुरू, प्र–कुलसचिव, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय–समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अतः इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद।

– संपादक

	सत्र 5	सत्र 6
★ **प्रो. (डॉ.) एस. बी. बनसोडे** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर	**1**	**-**
★ **डॉ. भारत खिलारे** कला वाणिज्य व शास्त्र महाविद्यालय, पुसेगांव, ता. खटाव, जि. सातारा	**2**	**-**
★ **डॉ. प्रकाश कांबळे** महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर	**3**	**-**
★ **डॉ. वसुंधरा उदयसिंह जाध** म. ह. शिंदे महाविद्यालय, तिसंगी, ता. गगनबावडा, जि. कोल्हापुर	**4**	**-**
★ **श्रीमती सुपर्णा संसुद्धी** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर	**-**	**1**
★ **प्रो. (डॉ.) एकनाथ एस. पाटील** राधानगरी महाविद्यालय, राधानगरी, ता. राधानगरी, जि. कोल्हापुर	**-**	**2**
★ **डॉ. दीपक रामा तुपे** विवेकानंद महाविद्यालय, ताराबाई पार्क, कोल्हापुर	**-**	**3**
★ **डॉ. संजय ब. देसाई** कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी	**-**	**4**

■ **सम्पादक** ■

प्रो. (डॉ.) एकनाथ एस. पाटील
राधानगरी महाविद्यालय, राधानगरी, ता. राधानगरी,
जि. कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. बी. बनसोडे
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ,
जि. कोल्हापुर

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	सत्र-5 पेपर 7 : विधा विशेष का अध्ययन	
1.	कुसुम कुमार का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं नाटककार कुसुम कुमार का सामान्य परिचय	1
2.	दिल्ली ऊँचा सुनती है - कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता	11
3.	पात्र चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल वातावरण	28
4.	दिल्ली ऊंचा सुनती है - भाषाशैली, उद्देश्य, अभिनेयता एवं समस्याएँ	46
	सत्र-6 पेपर 12 : विधा विशेष का अध्ययन	
1.	चंद्रकांता का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं उपन्यासकार चंद्रकांता का सामान्य परिचय	64
2.	अंतिम साक्ष्य - कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता	76
3.	अंतिम साक्ष्य : पात्र या चरित्र-चित्रण तथा संवाद	96
4.	अंतिम साक्ष्य : देश काल तथा वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ	112

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे–

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं–अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं–अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई 1

कुसुम कुमार का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं नाटककार

कुसुम कुमार का सामान्य परिचय

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय – विवरण

1.3.1 कुसुम कुमार का जीवन परिचय

1.3.2 कुसुम कुमार का व्यक्तित्व

1.3.3 कुसुम कुमार का कृतित्व

1.3.4 नाटककार कुसुम कुमार

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई को पढने के बाद आप–

1) कुसुम कुमार के जीवन एवं व्यक्तित्व से परिचित होंगे।

2) कुसुम कुमार के कृतित्व का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

3) कुसुम कुमार के साहित्यिक दृष्टिकोण से परिचित हो जाएंगे।

4) साठोत्तरी काल के साहित्यकारों में कुसुम कुमार के विशेष स्थान से परिचित हो जाएंगे।

5) कुसुम कुमार के नाटककार रूप से परिचित हो जाएंगे।

1.2 प्रस्तावना :

हिंदी महिला नाटककारों में कुसुम कुमार को एक सशक्त नाटककार से रूप में पहचाना जाता है। विशेषत: अस्सी के दशक में कुसुम कुमार ने नाट्य साहित्य में अपना मौलिक योगदान दिया है। सन 1978 में आपने नाट्य लेखन का आरंभ किया और लगभग सात नाटक तथा एक एकांकी का लेखन किया है। आठवे दशक की समाज जीवन की विविध समस्याएँ, सामाजिक एवं शैक्षिक विसंगतियाँ, भ्रष्टाचार, वर्गसंघर्ष, राजनीतिक, छात्र–कपट, भाई–भतीजावाद, अराजकता आदि का चित्रण आपके साहित्य में निर्भयता से चित्रित हैं। कुसुम कुमार ने अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना की है, जिनमें हिंदी नाट्य चिंतन महत्त्वपूर्ण कृति है। नाटक के साथ कविता, उपन्यास एवं अनुवाद क्षेत्र में भी आपका योगदान विशेष रूप से हैं। इनके अलावा भी कुसम कुमार ने हिंदी नाट्य विधा से संबंधित अनेक पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखे हैं। हिंदी नाट्य विधा की समीक्षिका, नाटक एवं रंगमंच के विकास में उनका योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है। मतलब कुसुम कुमार एक बहुमुखी प्रतिभा की धनी है।

1.3 विषय विवरण :

1.3.1 कुसुम कुमार का जीवन परिचय :

कुसुम कुमार का जन्म दिल्ली में पंजाब के क्षत्रिय वंश के परिवार में 5 अगस्ट 1939 को हुआ। आपके माता–पिता सनातनी और धर्मप्रवण वातावरण के थे। परिणामत: आप भी ईश्वरभक्ति और पूजा अर्चना में विश्वास रखती हैं। आपके पिताजी भवन निर्माण का कार्य करते थे, साथ ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे। माताजी मृदु मधुर स्वभाव की थी। आप पाच बेटों में इकलौती बेटी होने के कारण माता–पिता की विशेष लाडकी रही हैं। अत: बचपन से ही आप लाड प्यार में पली बढी हुई हैं। आपकी प्राथमिक शिक्षा सरस्वती बालिका विद्यालय दरियागंज, दिल्ली में हुई। महाविद्यालयीन शिक्षा दिल्ली में ही संपन्न हुई। विवाहोपरांत पंजाब विश्वविद्यालय से एम. ए. तथा उसी विश्वविद्यालय डॉ. इंद्रनाथ मदान जी की प्रेरणा से और प्रो. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त जी के निर्देशन में 'हिंदी नाट्य चिंतन' विषय पर पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। मतलब सुखमय वैवाहिक जीवन के साथ–साथ आपका शिक्षा का क्रम जारी रहा।

हिंदी के साथ-साथ आपने अंग्रेजी साहित्य में भी अध्ययन किया है। चित्रकला में भी रूचि होने के कारण अब तक आपने डेढ सौ से अधिक तैलचित्र बनाए हैं, जो आपके घर में आज भी मौजदू है।

बीस वर्ष की उम्र में आपका विवाह स्वदेश कुमार के साथ हुआ। आपका बेटा अतुल और बेटी अर्चना जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने-अपने क्षेत्र में कार्यरत हैं। आपकी आर्थिक स्थिति संपन्न होने के बावजूद भी आपने कुछ साल तक दिल्ली विश्वविद्यालय के जेसिस एण्ड मेरी तथा मैत्रेयी कॉलेज में अध्यापन का कार्य किया। किंतु महाविद्यालयीन वातावारण के कारण सन 1977 में नौकरी से मुक्त होकर आप स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य में जुडी रही हैं।

कुसुम कुमार ने देश के लगभग सभी राज्यों की यात्राएँ की है। आपने इंग्लैंड, फ्रान्स, जापान, थाइलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया, बालीद्वीप, हांगकांग आदि देशों की यात्रा कर सांस्कृतिक तौरपर आदान-प्रदान का काम किया साथ ही, देश-विदेश की अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में हिस्सा लेकर व्याख्यान दिए हैं। देश-विदेश की यात्राओं में आपने वहां के रंगमंच, नाटक एवं नाट्य चिंतन का भी अध्ययन अनुशीलन किया है।

1.3.2 कुसुम कुमार का व्यक्तित्त्व :

कुसुम कुमार के व्यापक अनुभव, करुणामय स्वभाव और संवेदनशीलता के कारण आपके भीतरी व्यक्तित्व में परिवेश के प्रति सजगता और समाज में व्याप्त अन्याय और शोषण के प्रति वेदना का भाव दिखाई देता है। चिंतनशीलता एवं गहरी संवेदनशीलता के कारण आप सहज ही साहित्य लेखन की ओर आकृष्ट हुई है। डॉ. दत्तात्रय मोहिते और उनकी पत्नी प्रतिभा दिसंबर 1995 में कुसुम कुमार के घर नई दिल्ली पीएच. डी. अनुसंधान के सिलसिले में साक्षात्कार लेने गए थे। तब उन्होंने देखा कि कुसुम कुमार गौर वर्ण, सुगठित शरीर, तेजस्वी चेहरा एवं वाणी की मीठास ने उनके व्यक्तित्व को और अधिक आकर्षक बनाया है। पीडित और दीन दुखियों के प्रति सहज करुणा और सहानुभूति कुसुम कुमार के व्यक्तित्व का अभिन्न पहलु है। आम आदमी के सुख-दुख के प्रति आप बहुत ही संवेदनशील है, इसी की झलक आपके साहित्य में जगह-जगह देखी जा सकती है। दिखावटी समाज सेवा, खुद को बुद्धिवादी एवं प्रतिष्ठित साबित करना आदि बातों से आप कोसों दूर हैं। आपकी व्यापक चिंतनशीलता आपके व्यक्तित्व की विशेष पहलु है जो आपके साहित्य में गहराई के साथ उतरा हुआ है। इस प्रकार कुसुम कुमार के व्यक्तित्व में वाणी की मिठास, असहाय लोगों के प्रति करुणा एवं सहानुभूति, संवेदनशील, चिंतनशीलता, एवं सामाजिक जागरूकता प्रमुखत: से दिखाई देती है।

1.3.3 कुसुम कुमार का कृतित्व :

बहुमुखी प्रतिभा की धनी कुसुम कुमार सक्रिय नाटककार है। उनका लेखन वैविध्यपूर्ण हैं। नाट्यलेखन के साथ-साथ उपन्यास, कविता, एकांकी, नुक्कड नाटक, अनुवाद आदि क्षेत्र में भी सक्रिय रही हैं सन 1965 में आपने लेखन का प्रारंभ काव्य-संग्रह ((तृष्णांकित) से किया। अपने शोध-प्रबंध 'हिंदी नाट्य चिंतन' नामक पहली पुस्तक प्रकाशित कर साहित्य सृजन का श्रीगणेश किया। समाज में जो देखा, महसूस किया उसे यथार्थता के साथ विविध विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का सिलसिला आज तक चल रहा हैं। कुसुम कुमार की साहित्य साधना इस प्रकार है -

1. नाटक :

1. ओम शांति शांति (1978)
2. सुनो शेफाली (1979)
3. संस्कार को नमस्कार (1982)
4. दिल्ली ऊंचा सुनती है (1982)
5. रावण लीला (1983)
6. पवन चतुर्वेदी की डायरी (1986)
7. लश्कर चौक (1994)
8. प्रश्नकाल

2. कविता :

1. अभी रहेंगे
2. तृष्णांकित (1965)
3. रास्तेभर जंगल (1989)
4. तीन अपराध (1988)
5. छत्र

3. उपन्यास :

1. हिरामन हायस्कूल (1989)
2. पूर्वी्वार (2004)
3. परदाबाडी (2000)
4. मीठी नीम (2012)

4. नुक्कड नाटक :

1. सलामी मंच
2. विधिवत प्रजा
3. खाबगाह
4. सुखीजन

5. एकांकी संग्रह :

1. मादा मिट्टी (1979)

6. नाट्यानुवाद :

1. हिमालय की छाया – वसंत कानेटकर
2. बिना चेहरों के पुरूष – वसंत कानेटकर
3. संध्या छाया – जयवंत दळवी
4. सूर्यास्त – जयवंत दळवी
5. पापा खो गए – विजय तेंदुलकर
6. उसकी जात – विजय तेंदुलकर
7. कस्तूरी मृग – पु. ल. देशपांडे

7. समीक्षा ग्रंथ :

1. हिंदी नाट्य चिंतन (1977)

8. नाटक संकलन :

1. छः मंच नाटक (1992)

✱ पुरस्कार :

1. कुसुम कुमार को नाट्य लेखन के लिए सन 1882-83 तथा 1997-98 में हिंदी अकादमी दिल्ली की ओर से 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित किया गया।

2. सन 1988-89 में 'हीरामन हाईस्कूल' उपन्यास के लिए हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा पुरस्कार दिया गया।

3. विशिष्ट नाट्यकार सम्मान (2009)

4. नटसम्राट पुरस्कार (2011)

1.3.4 नाटककार कुसुम कुमार :

स्वतंत्रता के बाद हिंदी नाटक के इतिहास में विशेषत: हिंदी महिला नाटककारों में कुसुम कुमार अत्यंत प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। कुसुम कुमार का नाट्य चिंतन वैविध्यपूर्ण रहा है। आपने हिंदी नाट्य समीक्षा में मौलिक ग्रंथों की रचना कर, समीक्षाएँ लिखकर हिंदी नाटक विधा को संपन्न एवं समृद्ध बनाने का कार्य किया हैं। सन 1977 में प्रकाशित 'हिंदी नाट्य चिंतन' ग्रंथ हिंदी नाटकों के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ में नाटक और रंगमंच के बारे में कुछ आलोचकों एवं नाटककारों के विचारों को रेखांकित कर नाट्य समीक्षा के बदलते मानदण्डों को चित्रित किया गया है। इनके अलावा कुसुम कुमार ने हिंदी नाट्य विधा से संबंधित अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे हैं।

कुसुम कुमार के नाटक समय-समय पर देशभर में चर्चित एवं प्रशंसित रहे हैं और अनुभवी निर्देशकों द्वारा

बार-बार मंचित हुए हैं। इसलिए उनके नाटकों को श्रेष्ठतम नाटकों में गिना जाता है। आपके लगभग सभी नाटकों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद और मंचन हुआ है। आपके नाटकों में प्रमुख रूप से स्त्री विमर्श, दमित वर्ग, मानवीय समस्याएँ एवं रिश्तों की पडताल, समकालीन समाज का परिवेश से सघर्ष आदि का चित्रण प्रखरता से हुआ है। अब तक आपके आठ नाटक प्रकाशित हुए हैं जिनके नाम इस प्रकार है - ओम क्रांति क्रांति, सुनो शेफाली, संस्कार को नमस्कार, दिल्ली ऊंचा सुनती है, रावणलीला, पवन चतुर्वेदी की डायरी, लश्कर चौक और प्रश्नकाल। उपलब्ध नाटकों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

1. ओम क्रांति क्रांति :

सन 1978 में प्रकाशित यह कुसुम कुमार का पहला नाटक है। इसका विषय शिक्षा क्षेत्र से संबंधित है। अध्ययन अध्यापन में रुचि न रखने वाले, प्राध्यापकों के आपसी संबंध तथा छात्रप्रिय बनने के लिए अध्यापकों द्वारा अपनाए गए विविध हथकंडे आदी कई विषयों को इसमें उभारा गया हैं।

2. सुनो शेफाली :

सन 1979 में प्रकाशित यह नाटक राजनीतिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखा गया है। नाटक की नायिका शेफाली जो दलित युवती है जो बकुल के साथ प्रेम करती है। जब उसे मालूम हो जाता है कि बकुल और उसके पिता इसके दलितत्त्व का लाभ उठाकर राजनीति करना चाहते हैं तो वह अपने प्रेम की कुर्बानी देती है। शेफाली की करूण कथा को चित्रित करना लेखिका का उद्देश्य है।

3. संस्कार को नमस्कार :

सन 1982 में प्रकाशित इस नाटक में नारी शोषण की दर्दनाक स्थिति का चित्रण करनेवाला बहुचर्चित नाटक है। नारी उद्धार की आड में महिलाश्रमों में होनेवाले नारी शोषण को चित्रित किया गया है। दो अंकों में विभाजित इस नाटक में राजनेताओं के भ्रष्ट आचरण के साथ-साथ नारी द्वारा किए हुए नारी शोषण का पर्दाफाश किया है।

4. दिल्ली ऊंचा सुनती है :

सन 1982 में प्रकाशित इस नाटक में नौकरशाही की लापरवाही के जाल में फंसे रिटायर्ड क्लर्क की करुण कथा को चित्रित किया गया है। मध्यम वर्ग के अवकाशप्राप्त माधोसिंह को पेंशन नहीं मिलती क्योंकि प्रशासन की अकर्मण्यता, लापरवाही, कर्मचारियों की मनमानी, उत्तर दायित्व हीनता, मंत्रियों की उदासीनता, बढती रिश्वतखोरी आदि प्रमुखत: कारण है। जिसकी वजह से आम आदमी का जीवन अंत तक संघर्षमय रहता है।

5. रावणलीला :

सन 1983 में 'रावणलीला' नाटक प्रकाशित हुआ है। रामलीला की शैली में लिखा 'रावणलीला' नाटक भाषा, शैली, शिल्प एवं मंचीयता की दृष्टि से चर्चित नाटक है। कस्बाई अशिक्षित पात्र संयोजक से अपना मेहनताना बढाने की मांग करते हैं, तो हंगामा मच जाता है। साथ ही करतारसिंह नामक पात्र के माध्यम से समाज में पनप रही रावणी प्रवृत्तियों को बडी कुशलता के साथ उभारा गया है।

6. पवन चतुर्वेदी की डायरी :

सन 1986 में प्रकाशित नाटक एक विख्यात पिता के साधारण बेटे की कहानी को अंकित करता है। डायरी शैली में लिखा नाटक का प्रमुख पात्र पवन विख्यात डॉक्टर चतुर्वेदी का बेटा है। पवन फिल्म क्षेत्र में नाम कमाकर अपना स्वतंत्र मार्ग बनाना चाहता है। डॉक्टर चतुर्वेदी अपने विचार पवन पर थोपने की कोशिश करते हैं तो दोनों में संघर्ष हो जाता है। परिस्थितियों से टूटे पवन की मानसिक कुंठा को इस नाटक में चित्रित किया है।

7. लश्कर चौक :

'लश्कर चौक' नाटक का प्रकाशन सन 1994 में हुआ है। इस नाटक की घटनाओं क काल स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से आरंभ होकर स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्षों तक चलता है। साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकार नारी शोषण करनेवाली प्रवृत्तियों को इस नाटक में उभारा गया है। साथ ही नारी के काम करके की शक्ति को भी इसमें अंकित किया गया है। मतलब साम्प्रदायिकता और धर्मांधता की आग में दहकती नारी वेदनावाणी देनेवाला बहुचर्चित नाटक है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) कुसुम कुमार का जन्म ..... में पंजाब के क्षत्रिय वंश के परिवार में हुआ।
   अ) दिल्ली ब) पंजाब क) हरियाणा ड) लखनऊ

2) कुसुम कुमार का जन्म ५ अगस्त ..... को हुआ।
   अ) 1939 ब) 1940 क) 1942 ड) 1949

3) कुसुम कुमार के पिताजी ..... निर्माण का काम करते थे।
   अ) मंदिर ब) भवन क) तालाब ड) सडक

4) कुसुम कुमार की प्राथमिक शिक्षा ..... बालिका विद्यालय, दरियागंज, दिल्ली, में हुई।
   अ) शारदा ब) सरस्वती क) मीरा ड) आदर्श

5) कुसुम कुमार की महाविद्यालयीन शिक्षा ..... में ही संपन्न हुई।
   अ) पंजाब ब) हरियाणा क) लखनऊ ड) दिल्ली

6) कुसुम कुमार ने एम. ए. की शिक्षा ..... विश्वविद्यालय से प्राप्त की।
   अ) काशी ब) पंजाब क) दिल्ली ड) नालंदा

7) कुसुम कुमार ने ..... के निर्देशन में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।
   अ) डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ब) डॉ. भोलानाथ तिवारी
   क) डॉ. इंद्रनाथ मदान ड) डॉ. श्यामसुंदरदास

8) कुसुम कुमार का विवाह ..... वर्ष की उम्र में हुआ।

अ) उन्नीस ब) बीस क) बाईस ड) पच्चीस

9) कुसुम कुमार का विवाह ..... के साथ हुआ।

अ) स्वदेश कुमार ब) स्वदेश दीपक क) राजेश कुमार ड) अरविंद कुमार

10) कुसुम कुमार सन ..... में नौकरी से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य करने लगी।

अ) 1975 ब) 1977 क) 1979 ड) 1982

11) कुसुम कुमार ने सन 1965 में ..... काव्य-संग्रह लिखकर अपने लेखन का प्रारंभ किया।

अ) तृष्णांकित ब) अभी रहेंगे क) तीन अपराध ड) छत्र

12) कुसुम कुमार के 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक का प्रकाशन सन ..... में हुआ।

अ) 1980 ब) 1982 क) 19883 ड) 1986

13) कुसुम कुमार के हिंदी नाट्य चिंतन' समीक्षा ग्रंथ का प्रकाशन सन ..... में हुआ।

अ) 1975 ब) 1977 क) 1978 ड) 1979

14) कुसुम कुमार ने सन ..... में नाट्य लेखन का आरंभ किया।

अ) 1978 ब) 1977 क) 1976 ड) 1979

15) कुसुम कुमार के नाट्य लेखन के लिए हिंदी अकादमी, दिल्ली की ओर से ..... से सम्मानित किया गया।

अ) साहित्य सम्मान ब) साहित्यकार सम्मान

क) साहित्य अकादमी ड) साहित्य पंडित

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1) **भाई-भतीजावाद –** दोस्तवाद के बाद आनेवाली एक राजनीतिक शब्दावली है जिसमें योग्यता को नजर अंदाज करके अयोग्य परिजनों को उच्च पदों पर आसीन कर दिया जाता है।

2) **क्षत्रिय –** क्षत्रिय शब्द राजवर्ग के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। जो दूसरों को क्षत से बचाये। योद्धा जाति।

3) **सनातनी –** सनातन धर्म का अनुयायी।

4) **धर्मप्रवण –** धर्मनिष्ठा

5) **तैलचित्र –** चित्र के उस अंकनविधान का नाम है। जिसमें तेल में घोंटे गए रंगों का प्रयोग होता है।

6) **कस्तुरी मृग –** ऐसा हरिण जिसकी नाभि के पास की थैली में कस्तुरी पाई जाए।

1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) अ – दिल्ली
2) अ – 1939
3) ब – भवन
4) ब – सरस्वती
5) ड – दिल्ली
6) ब – पंजाब
7) अ – डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
8) ब – बीस
9) अ – स्वदेशकुमार
10) ब – 1977
11) अ – तृष्णांकित
12) ब – 1982
13) ब – 1977
14) अ – 1978
15) ब – साहित्यकार सम्मान

1.7 सारांश :

1) हिंदी महिला नाटककारों में कुसुम कुमार एक सशक्त नाटककार है।

2) हिंदी नाट्य विधा की समीक्षिका, नाटक एवं रंगमंच के विकास में कुसुम कुमार का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

3) कुसुम कुमार ने शादी के बाद एम. ए. एवं पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। मतलब यहाँ उनकी शिक्षा के प्रति लगन अधोरेखीत होती है।

4) कुसुम कुमार ने देश–विदेशी की यात्रा कर अपने साहित्य को अनुभव संपन्न बनाया है।

5) कुसुम कुमार के व्यक्तित्व में वाणी की मिठास, असहाय व्यक्ति के प्रति करुणा एवं सहानुभूति, संवेदनशीलता, चिंतनशीलता एवं सामाजिक जागरूकता दिखाई देती है।

6) कुसुम कुमार बहुमुखी प्रतिभा की धनी एवं वैविध्यपूर्ण निरंतर लेखन करनेवाली नाटककार है।

7) कुसुम कुमार के नाटकों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद एवं मंचन हुआ है।

8) कुसुम कुमार ने कविता, नाटक, उपन्यास आदि विधाओं में लेखन किया है उसके साथ ही मराठी के प्रथितयश नाटककारों के नाटकों का अनुवाद भी किया है।

9) कुसुम कुमार के साहित्य में स्त्री विमर्श के अलावा दमित वर्ग, आम आदमी की समस्याएँ, रिश्तों की पडताल, लालफीताशाही, भ्रष्टाचार, शिक्षा क्षेत्र की अव्यवस्था, राजनीतिक तिकडमबाजी, साम्प्रदायिकता आदि का चित्रण भी बेबाकी के साथ मिलता है।

1.8 स्वाध्याय :

1) कुसुम कुमार का जीवन परिचय दीजिए।

2) कुसुम कुमार के व्यक्तित्व के बारे विवेचन कीजिए।

3) कुसुम कुमार के कृतित्व का परिचय दीजिए।

4) नाटककार कुसुम कुमार का परिचय दीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) कुसुम कुमार का जीवन परिचय एवं रचनात्मक परिचय का मराठी में अनुवाद कीजिए।

2) मराठी की स्त्री नाटककार सई परांजपे के नाटकों के साथ कुसुम कुमार के नाटकों की तुलना कीजिए।

3) कुसुम कुमार के किसी एक नाटक का मराठी में अनुवाद करने का प्रयास कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. हिंदी नाट्य चिंतन – कुसुम कुमार
2. 'चपराक दिवाळी' अंक 2012. – डॉ. वि. भा. देशपांडे जी का लेख
3. डॉ. कुसुम कुमार एक प्रयोगधर्मी नाटककार – डॉ. दत्तात्रय मोहिते
4. समग्र नाटक – कुसुम कुमार, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
5. समकालीन हिंदी नाटक – डॉ. जशवंतभाई डी. पंड्या
6. हिंदी महिला नाटककार – डॉ. भगवान जाधव

●●●

इकाई 2

दिल्ली ऊँचा सुनती है – कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय – विवरण

2.3.1 दिल्ली ऊँचा सुनती है – नाटक का परिचय

2.3.2 दिल्ली ऊँचा सुनती है – कथावस्तु

2.3.3 दिल्ली ऊँचा सुनती है – नाटक के शीर्षक की सार्थकता

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई को पढने के बाद आप–

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक की कथावस्तु को समझ पायेंगे।

2) कार्यालयीन व्यवस्था के शिकार बने आम आदमी की कथा को जान पाएँगे।

3) माधोसिंह जैसे रिटायर्ड व्यक्ति को पेंशन न मिलने पर घर की आर्थिक स्थिति कितनी दयनीय होती है इससे परिचित हो जायेंगे।

4) शासकीय प्रणाली और वहाँ काम करनेवाले कर्मचारियों की प्रवृत्ति एवं लापरवाही तथा पारिवारिक उलझनों में फँसे आम आदमी की व्यथा को समझ सकेंगे।

5) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के शीर्षक की सार्थकता से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने काव्य के विषय, रचना पद्धति, गुण विस्तार, श्लोकों की संख्या, तत्त्व, आस्वादक इंद्रिय तथा अन्य कई आधारों पर अनेक भेद गिनाए हैं। उनमें आस्वादक इंद्रिय के आधार पर किए जानेवाले भेदों (दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य) को विशेष महत्त्व दिया है। वास्तव में दृश्य काव्य का संबंध कानों से भी है। तथापि उसकी सार्थकता दृश्यों को देख सकने वाली आँखे आदि इंद्रियों पर निर्भर है। इसी कारण इसे यह नाम दिया गया है। संस्कृत में दृश्य काव्य के दो भेद (रूपक और उपरूपक) मिलते हैं। संस्कृत के आचार्यों ने रूपक को दस और उपरूपक के अठारह भेद स्वीकार किए हैं। उन भेदों में नाटक को विशेष महत्त्व देकर उसकी विस्तार से चर्चा की है।

2.3 विषय विवरण :

2.3.1 दिल्ली ऊँचा सुनती है – नाटक का परिचय :

नाटक का कथानक केंद्रित है माधोसिंह पर। वे छत्तीस साल की सरकारी क्लर्क की प्रदीर्घ सेवा से निवृत्त हुए हैं। पेंशन के पैसों से बडे शहर में तीन व्यक्तियों का पेट पाल नहीं सकते इसलिए पैतृक गांव रहकर जीवन के शेष दिन बिताने का संकल्प कर चुके हैं। वे गाँव में मगनलाल का घर किराए पर लेकर रहते हैं। इनकी बेटी नीति परित्यक्ता है। वह सुंदर है किंतु अपनी समस्या के कारण अधिकांश समय अस्वस्थ, उदास रहती है। वह अस्वस्थता के कारण मानसिकता की शिकार बनती है। माधोसिंह की पत्नी कमला शहर छोडकर गाँव आनेपर नाराज है। माधोसिंह मजबुर है। वह छत्तीस साल अर्थ मंत्रालय की क्लर्की करते हुए रोज बीस मील की दूरी साइकिल से तय करते–करते थक गए हैं। अब गाँव आकर राहत महसूस करते हैं।

दिल्ली की महंगाई से गाँव के खर्चे कुछ कम होने से माधोसिंह यह फैसला करते है। और एक कारण नीति भी है गाँव के खुले माहौल में उसका मन प्रसन्न रहेगा, खुली हवा, खुला आसमान मन के विचारों से दूर ले जायेगा और उसे मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त होगा। गाँव आने के पश्चात उनकी पेंशन छः महीने से बंद हुई है। वह अबतक

उस दफ्तर के नाम छः चिठ्ठियाँ लिख चुके हैं। उनमें घर की, बेटी की दशा को बता चुके हैं। उनकी चिठ्ठी का कोई जवाब नहीं आता। वैसे भी आम आदमी की जल्दी कौन सुनता है – आखिरकार तंग आकर वह स्वयं दिल्ली चले जाते हैं। वह पेंशन के कार्यालय पहुँचते हैं। वहाँ केवल चपरासी मौजूद है। कुछ समय बाद क्लार्क उन्हें रुकने के लिए कहता है। उसे वही–वही काम कर उमस महसूस होने लगी है। उसे अफसोस है कि वह ऐसी जगह काम कैसे करता है जहाँ सारे बुजुर्ग आते हैं जिनसे ऊपरी कमाई मिल नहीं सकती। ''यहाँ साला कोई आकर कुछ पेश करे तब ना। रिश्वत मिलेगी और यहाँ? हुं ह। भूखे नगों का दफ्तर है यह.... सब कानी कौडी के मोहताज साले... खुद पेंशन पर गुजर करनेवाले। उनसे रिश्वत मिलेगी? भूल जा, डी. आर. भूल जा।... यहाँ तो जहान भर के सठियाए हुए लोग... पट्ठे बाप का दफ्तर समझकर चले आएँगे।''

चपरासी और क्लर्क की नोंक–झोंक के बाद साठे ग्यारह बजे काम–काज शुरू होता है। माधोसिंह अपनी समस्या बताते हैं। उन्होंने चिठ्ठियाँ डायरेक्टर के नाम से लिखी थी जो पिछले दो महीने से छुट्टी पर है, एक्टिंग डायरेक्टर तीन हफ्ते से छुट्टी पर और उनकी जगह काम देखने वाला एक हफ्ते की छुट्टी पर है और उनका काम देखनेवाला और कोई नहीं। ऐसी कार्यालयीन यंत्रणा कार्यरत है, जो नकारे प्रवृत्ति, कार्य के प्रति उदासीनता को स्पष्ट करती है। हर कार्यालय में ऐसे ही नमूने देखने को मिलते हैं। वह माधोसिंह के भेजे हुए चिट्ठियों के प्रुफ मांगते हैं। किंतु उनके पास कोई प्रुफ नहीं है। कार्यालयीन कर्मचारी उनकी उपेक्षा करते हैं। उसी कार्यालय में कार्यरत अलका आती है। वह नीति की दोस्त है। वह माधोसिंह को पहचान लेती है। अपने अधिकार में वह उनका रेकार्ड देखने के लिए कहती है। उसे रेकॉर्ड में माधोसिंह कोठारी को नियमित पेंशन जाती है। लेकिन दूसरे माधोसिंह नाम के व्यक्ति की डैथ हो चुकी है। अलका कहती है, ''शट अप डैथ कैसे हो चुकी है। उन्हें अपने जीवित होने के प्रमाण देने होंगे कैसी विडंबना है कार्यालय में।'' कार्यरत अलका स्वयं माधोसिंह को जानते हुए भी उन्हें अपने जीवित होने के प्रमाण मांगे जाते हैं। वह एक अर्जी लिखकर देते हैं और अपने जीवित होने के प्रमाण जुटाने लगते हैं। कार्यालयीन कर्मचारी इसे अजीब हादसा मानते हैं।

माधोसिंह डॉक्टर के पास अपने जीवित होने का सर्टिफिकेट लेने जाते हैं। डॉक्टर साफ इन्कार कर देते है। वह किसी पेचदिगी में पडना नहीं चाहते। माधोसिंह साफ–साफ कहते है, ''इसमें कैसी पेचीदगी डाक्टरसाहेब? सच को सच कहने में कैसी पेचीदगी? मैं आपसे कोई झूठा काम, कोई झूठी गवाही तो दिलवाने नहीं जा रहा।'' झूठ को सच करते समय लोग डरते नहीं मगर सच को सच कहने में लोग डरते हैं। डॉक्टर उन्हें सरकारी अस्पताल के लिए एक चिट्ठी लिखकर देते हैं। वह सरकारी अस्पताल जाते हैं वहाँ भी परेशानी झेलनी पडती है। वहाँ भी एक अर्जी लिखकर दे आते हैं। पंद्रह दिन बीत जाते हैं कोई जवाब हीं आता। घर में दोनों परेशान हो जाते हैं। घर में चुल्हा तक नहीं जलता। जो काम पैसा करता है उसे आदमी नहीं कर सकता। इन्सान के बजाय पैसों का मूल्य अधिक है। माधोसिंह विवश होकर कहते हैं, ''एक बार मरकर फिर से जिंदा होना इतना आसान नहीं होता... और फिर इस जमाने में सिर्फ साँस लेने का मतलब जिंदा रहना थोडे है। पैसा चाहिए, पैसा। पैसा आदमी को मारता है, पैसा जिलाता है।

मगना उनकी स्थिति से भली–भाँति परिचित है इसलिए वह किसी ना किसी बहाने उनकी सहायता करता

है। वह नीति से शर्ते हारता रहता है और उनके खर्चे के लिए पैसों का जुगाड करता रहता है। सर्टिफिकेट के लिए माधोसिंह अस्पताल के लिए चक्कर काटते रहते हैं। एक दिन लिफाफा आ ही जाता है। उसमें उनके जिंदा होने का प्रमाण है मगर उसमें माधोसिंह की जगह माधवसिंह स्पेलिंग की गलती हो जाती है। उसे सुधारने के लिए मगना एक अर्जी लिखकर ले जाता है। लालफीताशाही के सामने आम आदमी की क्या चलती है। चारों और कीचड भरा हैं इसमें आम आदमी की साँस घुटने लगती है। इनके घुटन को केवल एक बार ही देखा, सुना और जाना जाता है जब उन्हें वोटों की जरूरत होती है। तब आम आदमी खास बनता है। नेता चुनकर आता है। सत्ता हथियाता है तब आम आदमी फिर से अपने स्थान पर रह जाता है। उसे अपनी परेशानियों से खुद ही जूझना पडता है।

आखिरकार माधोसिंह का बर्थ सर्टिफिकेट आ जाता है। फिर पे एण्ड एकाउन्टस् कार्यालय से माधोसिंह की इनक्वायरी की जाती है। फाईले आगे भेज दी जाती है। वह लालफीताशाही के कामकाज से तंग आते हैं – ''गले में फाँसी का फंदा डाल लूँ और....।'' सामान्य व्यक्ति परेशानियों को झेलते-झेलते थक जाता है, जिंदगी से हार जाता है। उसे जीवन से बेहतर मौत लगने लगती हैं । माधोसिंह की परेशानियों को देखकर मगना उन्हें अपने साथ गृहमंत्री के पास ले जाते हैं। सारी जानकारी प्राप्त कर वह कहते हैं – ''हम यह काम जरूर कर देते। लेकिन तब जब कि तुम्हारा केस फ्रॉड होता... फ्रॉड केस के लिए फ्रॉड साधन अपना लिए जाते हैं... आपका केस जैन्युईन है, इसलिए ऊपर से नीचे तक हर तथ्य रेकॉर्डेड है... अब कुछ नहीं हो सकता... सचाई को अपनी रफ्तार से चलने दीजिए।।'' सचाई के काम के लिए देर लगती है वह इतनी कि व्यक्ति की उम्र बीत जाती है। मगर झूठ, फरेब भ्रष्टाचार आदि से काम तुरंत हो जाते हैं। नेता केवल गलत कार्य ही कर सकते हैं। नीति-नियमों के कार्य उनसे नहीं हो पाते फिर भी गृहमंत्री फाइनैन्स सेक्रेटरी से बात कर उनसे मिलने के लिए कहते हैं।

घर के हालात दवाई का खर्च, पिता की छटपटाहट आदि को समझते हुए नीति अपनी समस्या का समाधान ढूँढ लेती है। वह रात में कुछ खा लेती है। उसकी मौत माधोसिंह को तोड देती है। वे अब ज्यादा दिन जी न सेकेंगे क्योंकि जीने की आस नीति थी अब वही नहीं रही। वह निर्विकार, भावविहीन हो जाते हैं। फिर एक चिट्ठी मिलती है अब की बार अर्थ सचिव ने मामला निपटाने के लिए एक इन्वेस्टीगेशन आफिसर मुकर्रर कर दिया है। यह जानकर उनकी आँखों के सामने अँधेरा घिर आता है वह सिनेपर हाथ रखकर लुढक जाते हैं। उनकी जीवनयात्रा समाप्त होती है। पहले नीति फिर माधोसिंह परिस्थितियों के सामने हार जाते हैं। घर पर अब केवल कमला है। दरवाजे पर दस्तक होती हैं। पे एण्ड एकाउण्टस ऑफिस से उनके नाम रजिस्ट्री आती हैं किंतु उन्हें जाकर चार माह हो गए है। मृतवत कमला घर के अंदर चली जाती है। लालफितशाही का यह निष्ठुर व्यवहार मर्तांतक वेदना का यथार्थ चित्रण है। सेवानिवृत्त, व्यक्तियों के साथ किया जानेवाला व्यवहार उनकी आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक स्थितियाँ, अकार्यशील कार्यालयीन कर्मचारी, पैंशनरों की उपेक्षा कार्य शिथिलता, मंत्रियों के आश्वासन, अपने कर्तव्य से मुँह फेरते डाक्टर आदि का सूक्ष्म चित्रण इसमें किया गया है। नाटक की तमाम गतिविधियों के माध्यम से देश में चल रही नौकरशाही और लालफीताशाही का अत्यंत सटीक वर्णन प्रस्तुत किया

है। हृदयहीनता और मानवीय संवेदना का अभाव यहाँ दिखाई देता है। करूण व्यंग्य की धार पर खडे सेवानिवृत्त माधोसिंह का विवश संघर्ष नीति की आत्महत्या और माधोसिंह की मृत्यु सरकारी यंत्रणा की जडता को नहीं तोडती ऐसी स्थितियों से जूझना आज व्यक्ति की नियति है।

2.3.2 दिल्ली ऊँचा सुनती है – कथावस्तु :

शहर से एक छोटा परिवार अपनी गुजर करने आया है, जो मगनलाल के मकान में किरायेपर रहते लगता है। इस परिवार के तीन सदस्य है – माधोसिंह, इनकी पत्नी कमला और एक बेटी जिसका नाम नीति है। माधोसिंह की उम्र लगभग अठ्ठावन वर्ष, कमला पचपन के आसपास और नीति की उम्र पच्चीस वर्ष के करीब है। माधोसिंह कुछ ही महीने हुए, सरकारी क्लर्क की नौकरी से सेवानिवृत्त हुए हैं। छत्तीस साल उन्होंने दिल्ली शहर में छोटीसी नौकरी करते हुए बिताए हैं। और अब सेवानिवृत्त होकर वे खुद अपनी पेंशन के पैसों से वे बडे शहर में रहकर तीन जनों का पेट नहीं पाल सकते थे। इसलिए यहाँ अपने पैतृक गाँव में रहकर जीवन के शेष दिन बिताते का निश्चय किया है। मगनलाल से माधोसिंह का पूराना परिचय था। इसीलिए उन्होंने इसका मकान किराए पर लिया है। आज इस मकान में माधोसिंह और उनके परिवार का दूसरा ही दिन है।

माधोसिंह की बेटी नीति परित्यक्ता है। वह सुंदर है किंतु अधिकांश समय अस्वस्थ, उदास रहती है। उसकी अस्वस्थता, मनोवैज्ञानिक है, मानसिक है। सुबह के समय में मगनलाल चाय पिते हुए समाचार जोर–जोर से पढ़ते हैं। माधोसिंह की पत्नी कमला दिन निकल आया है फिर भी वह निंद से उठती नहीं है। तब माधोसिंह उसे उठने के लिए कहते हैं और वह उसे यह भी कहते हैं कि इस तरह देख क्या रही हो? माफ नहीं किया मुझे? कमला तुम मुझसे नाराज हो। जैसे मैं चाहता था तुमसे तुम्हारा शहर छुडवाना? अपनी मजबूरियाँ हमें यहाँ लाई हैं मैं भी पैसेवाला होता तो... तब कमला माधोसिंह से कहती है कि आपको दोष भला कौन दे रहा है? नई जगह है... यों ही मेरा मन कुछ उदास माधोसिंह के ऐसा कहने पर कमला कहने लगती है अभी दूसरा दिन है। और फिर यहाँ इतना खुश होने को है ही क्या? सारी उमर शहर में बिताई है, अब गांव में तो बस दिन पूरे करनेवाली बात है। तब कमला के अनुसार हालात कौन से अच्छे हो गए? हालात अच्छे होते तो किसे पडी थी शहर छोड यहाँ आने की। इसका मतलब यह है कि शहर छोडकर देहात में आकर रहना कमला को पसंद नहीं है। वह माधोसिंह की मजबुरी को समज लेती है। माधोसिंह वास्तव में अपनी आर्थिक स्थिति को भलिभाँति समज लेते हैं, इसलिए वह बहाना बनाकर कमला को झूठी सांत्वना देते हैं कि बरसों के बाद खुला आसमान देख रहा हूँ कच्चा फर्श यहा... परिंदो की आवाज तुम्हे चिंता किस बात की है? पेंशन जो मिलेगी, उसमें यहाँ गुजारा हो ही जाएगा। चुपचाप पडे रहेंगे मजे का शांत जीवन इससे अच्छा और कहां बीत सकता है? वहाँ दिल्ली में वहाँ की जिदंगी भी कोई जिंदगी थी? छत्तीस साल अर्थ मंत्रालय की क्लर्की की और छत्तीस साल ही घर से दप्तर, दप्तर से घर, रोज वीस मील की दूरी साईकिल से तो ऐसी तैसी हुई। ठीक है, शहर जैसी रौनक यहाँ नहीं है, पर वैसी सुई की नोंक से बिधी जिंदगी भी किस काम की? सच पूछो तो मुझे तो बडी राहत महसूस हो रही है... मजे से पेंशन खाते गुजरेगी...।

मकान मालिक मगनलाल माधोसिंह के पास आकर अपने मकान के बारे में पूछताछ करता है कि माधोसिंह

के घरवालों को मकान पसंद आया की नहीं? माधोसिंह का कहना है कि सब पसंद आने लगेगा धीरे-धीरे। मगनलाल माधोसिंह को धीरज देते हुए कहते हैं कि किसी भी चीज की तकलीफ हो माधोसिंह भाई, तो हमे बताइएगा... हम किसलिए है? इन दोनों की बातचित सुनकर कमला कहने लगती है आप चाय लेंगे? तब नीति दो कप चाय लेकर आती है। नीति को देखकर मगनलाल कहते हैं कि दामाद बहादूर क्या करते हैं? माधोसिंह उदासी से कहते कि भगवान जाने। कुछ करते होंगे नीति हमारे पास रहती है। यह सब सुनकर मगनलाल माधोसिंह को कहते हैं कि, आपने नौकरी कब छोडी? तब माधोसिंह कहता है कि, मैंने नौकरी नहीं छोडी नौकरी से रिटायर हुआ हूँ। बहुतेरी कर ली नौकरी भी मगना। मगनलाल माधोसिंह को उसकी पेंशन के बारे में पूछते हैं कि पेंशन कितनी मिल जाती है तब माधोसिंह कहते हैं कि सवा दो सौ रुपए। इतनी सी पेंशन में शहर में घर चलाना मुश्किल हो जाता है। यहाँ देहात है यहाँ क्या है? मैं तो खुश हूँ मगना। मैंने रिटायर होने से पहले ही सोच लिया था कि रिटायर होकर यही आकर रहूँगा। दप्तर में हमेशा फाइले, सर्कुलर चिट्ठियाँ, खटखट जब वे सब खत्म हो गए तो हम भी खत्म हो गए। यह सुनकर मगनलाल कहने लगते हैं कि, अब आपकी चिंता हमारी चिंता अगर आप अकेले अपनी चिंता करने लगे तो अभी भी आपको दिल्ली का रास्ता खुला है। यह सब सुनकर माधोसिंह कहने लगते हैं, कि रही-सही जिंदगी का दु:ख सुख अब तुम्हारे साथ ही करेगा। इसी बातचित के दौरान मगनलाल कमला को चिलम जलाने के लिए कच्ची आंच माँगते हैं और चिलम लाने के लिए अपने घर चले जाते हैं। कमला माधोसिंह को पूछती है कि पेंशनवालों का कोई जवाब आया कि नही तब माधोसिंह के नहीं यह शब्द सुनकर कमला माधोसिंह एक और चिट्ठी डालने के लिए कहती है। माधोसिंह का कहना कि बेकार चिट्ठियाँ डालने से क्या फायदा। परंतु कमला का कहना है कि यहाँ इतनी लिखी है वहाँ एक और लिख दो। माधोसिंह कमला को समझाते हुए कहते हैं कि, अबतक छह चिट्ठियाँ लिख चुका हूँ। कोई जवाब नहीं आया अब सातवी चिट्ठी लिखने से उनकी सोई बला जाग जाएगी? वह कहने लगते हैं कि सरकारी मुलाजमत मैंने भी की है... जानता हूँ सब इन दप्तरों में आम आदमी की सुनवाई कितनी होती है। कमला माधोसिंह का कहना मानने के लिए कहती है कि हमारी लडकी बीमार रहती है उसकी दवा-दारू के लिए पैसे खर्च करना पडते है। माधोसिंह का कहना है कि, मैंने सबकुछ लिख दिया है जो लिखना चाहिए वह। कमला के सामने सवाल यह है कि कर्जा किससे माँगे खाते-खाते कुएं भी खाली पड जाते हैं। कमला माधोसिंह को आग्रह करने लगती है आप एक बार दिल्ली हो आइए। सारे रुके हुए पैसे मिल जाएँगे। माधोसिंह को आने-जाने पर खर्च होगा उसकी चिंता सताती है मगर कमला का विचार है कि रुकी हुई रकम मिलेगी तब ऊपर का खर्चा भी सह लेंगे। माधोसिंह कमला के विचार की ओर नकारात्मक दृष्टी से देखने लगते हैं। उनका अनुमान है अगर एक बार जाने में मामला तय नहीं हुआ तो क्या करेंगे। कमला इतना भी कहती है कि बडी अडचन हो तो दो दिन और वहा रहकर काम निपटा आइएगा। कमला का विचार सुनकर माधोसिंह दिल्ली जाने के लिए तैयार होते हैं, लेकिन माधोसिंह को घर, परिवार की चिंता सताने लगती है तब कमला और मगनलाल माधोसिंह को परिवार की चिंता से बेफिक्र रहने के लिए कहते हैं। माधोसिंह के चले जाने के बाद मगनलाल नीति को उसके नाम के बारे में छेडते हैं कि तुम्हारा नाम बडा बारीक है। पता नहीं शहरवाले ऐसा नाम क्यों रखते हैं। अपने जिस्म के साथ-साथ अपने नाम भी इतने कमजोर और इतने पतले क्यों रखते हैं। इस बहाने मगनलाल नीति को खुश रखने का प्रयत्न करने लगते है। किंतु

उसकी मनोवैज्ञानिक अस्वस्थता का कारण पूछते नहीं। मगनलाल और नीति के बीत चलती हुई चर्चा को सुनकर कमला कहने लगती है कि आपका अपना नाम भी तो हलका फुलका ही है भाईजी। मगनलाल पुकारने में कितने मन वजन उठाना पडता है? तब मगनलाल कहते हैं कि मेरा नाम पुकारने में औरतों की सांस फूलने लगती है। नाम है पहलवान मगनलाल अलीगढिया। हमने अपने नाम के आगे-पीछे कुछ लगा लिया पर हम इस लडकी का नाम सुई जैसा क्या रख दिया आपने? जब देखो हुडी पर हाथ रखे बैठी रहती है। यह सुनकर कमला नीति के सर पर अपना ममता भरा हाथ फेरकर कहने लगती है कि, नीति बहुत प्यारा नाम है, मेरी बेटी का मन प्यारा है। नाम प्यारा है, इतने गुन हे मेरी बेटी में भाईजी...। सुनकर मगनलाल अपना विचार स्पष्ट करता है कि दुनिया में आदमी का सबसे बडा गुन खुश रहना है। हमेशा अपना करे पर कभी दूसरों के लिए तनिक खुश रहना पडे तो इसमें मुश्किल क्या है? मगनलाल की यह बाँते सुनकर नीति कहती है कि, सब है दुनिया में मेरे सब सबमें मैं नहीं... समझ लीजिए मैं नहीं। मगनलाल नीति की उदासी का कारण समझना चाहता है कि उसकी समस्या को जानना चाहता है। तब कमला उसे सब कुछ समझाती है कि, नीति के साथ क्या हुआ है। वह यह भी बताती है कि डॉक्टर का कहना है कि उसके बारे में कुछ भी उसके सामने मत कहें। कुछ बुरा भी लगे तो जोश में मत आइए...। सब कुछ सुनकर मगनलाल अपना मत स्पष्ट करता है कि, नीति को कोई बीमारी नहीं है। योंही सबने बीमार समझकर उसे सचमुच बीमार कर दिया है। आप चिंता न करे सब ठिक हो जाएगा।

प्रस्तुत नाटक के प्रथम अंक के दूसरे दृश्य में डॉ. कुसुमकुमार जी ने दिल्ली के सरकारी कार्यालय का चित्रण किया है। नाटक का प्रमुख पात्र माधोसिंह अपनी पेंशन के बारे में पूछताछ करने के लिए सरकारी कार्यालय में पहूँच जाते हैं। वहाँ काम करनेवाले सरकारी कर्मचारी किस प्रकार अपने ही सहकर्मियों के साथ बेरहमी से पेश आते हैं, इसका वर्णन किया है। कार्यालय में काम करनेवाले व्यक्ति को माधोसिंह पूछते हैं कि, आप ही रेकॉर्ड असिस्टेंट है यहाँ? तब मिस्टर ए नाम का व्यक्ति जी कहकर अपने ही विचारों में खोया हुआ दिखाई देता है। माधोसिंह फिर से उसे अपने काम के बारे में बताना चाहते हैं मगर मिस्टर ए माधोसिंह को अभी काम शुरू नहीं हुआ है कहकर माधोसिंह को चाय पिने के लिए कहते हैं और फिर अपना काम बताने के लिए कहते हैं। तब डी. आर. नाम का व्यक्ति चाय लाने चला जाता है। मिस्टर ए कुछ फाइले इधर उधर रखने लगते तब डी. आर. के हाथों में फाइल पर लगी धूल लग जाती है। डी. आर. को गुस्से में आकर मिस्टर ए कहते हैं कि हर वक्त की तुम्हारी कामचोरी साली मुझसे बर्दाइश नहीं होती। परंतु डी. आर. उसे कहने लगता है कि, मैंने तो सारा कमरा साफ किया है, पानी भरकर रख दिया है। फाइले ठीक से लगाकर रखी है। किंतु फाइलों पर पडी धूल को लेकर दोनों में देर तक झगडा शुरू होता है। माधोसिंह डी. आर. को अपने काम के बारे में बताना चाहते हैं कि, मेरी पेंशन पिछले छह महीने से रुकी हुई है, पता नहीं किस कारण रुकी हुई हैं? डी. आर. उल्टे माधोसिंह को कहने लगते हैं कि आपकी पेंशन छह महीने से रुकी हुई तो आप एकाध चिट्ठी डाल देते। माधोसिंह कहते हैं कि, कई बार रिमाइंडर भेजे लेकिन आप की तरफ से कोई जवाब नहीं। माधोसिंह का कहना सुनकर मिस्टर ए पूछने लगते हैं कि आप किसके नाम चिट्ठी और रिमाइंडर भेजते थे? माधोसिंह कहते हैं कि डायरेक्टर के नाम से चिट्ठियाँ लिखता रहा। डायरेक्टर का नाम सुनते ही मिस्टर ए कहता है कि, तभी मामला गडबड है क्योंकि

डायरेक्टर दो महीने से छुट्टी पर है। उसकी जगह पर काम करनेवाले भी परसों से एक हप्ते के लिए छुट्टी पर गए हैं। तत्पश्चात उसी कार्यालय में काम करनेवाला सोनी नाम का कर्मचारी वहाँ आता है तब मिस्टर ए सोनी से माधोसिंह के पेंशन केस के बारे में बताते हैं कि, माधोसिंह को पिछले छह महीने से पेंशन नहीं मिली और कई चिट्ठियाँ लिखी उसका जवाब भी नहीं पहुँचा। यह सुनकर सोनी कहने लगते हैं कि, अबे यार, जवाब क्या एक दिन में चला जाता है इन्हें? सरकारी दफ्तर है यह बाबा, किसी महबूबा का दिल नहीं जो सवाल भी उसी पल हो और जवाब भी उसी पल। यह सुनकर माधोसिंह सोनी को रेकार्ड देखने के लिए कहते हैं। इतने में वहाँ अलका आती है। अलका को देखकर मिस्टर ए कहने लगते हैं कि कलवाली पिक्चर में आपकी बडी याद आई क्योंकि पिक्चर की हिरोइन की शक्ल आपसे इतनी मिलती जुलती थी कि लगता था आप दोनों जुडवा बहने हो। अलका छत की और देखकर कहने लगती है कि मैं बहुत ही जल्दी इस दफ्तर की नौकरी छोडकर जानेवाली हूँ। दयाराम मिस्टर ए को कहते हैं कि, वह बैठे हैं उनका काम तो जरा पहले कर दीजिए साहब। अलका को देखकर माधोसिंह कहते हैं कि तुम अलका हो न बेटी? मेरी पेंशन अटकी हुई है बेटी। उसी सिलसिले में यहाँ आया हूँ। तब अलका कहने लगती है कि मुझे बता देते अंकल मैं सब पता करके आपके पैसे आपको भिजवा देती। अलका अपनी सहेली नीति के बारे में माधोसिंह से पूछताछ करती है। तब माधोसिंह कहते है कि, नीति बाहर से तो अच्छी हैं लेकिन भीतर से कैसे महसूस करती है पता नहीं। अलका सोनी को कहती है कि, सोनी जी यह मेरे अंकल है। जरा इनका रेकॉर्ड तो देखिए। इनकी छह महीने से पेंशन अटकी हुई है। सोनी रेकॉर्ड देखकर कहता है कि यहाँ तो माधोसिंह नाम के आदमी की रेकॉर्ड में डेथ हो चुकी है, सो सॉरी अंकल। यह सुनकर अलका कहती है कि डेथ कैसे हो चुकी है? अंकल तो हमारे सामने खडे है। तब सोनी कहते हैं कि रेकॉर्ड तो कह रहा है कि माधोसिंह नाम आदमी की डेथ हो चुकी है। रेकॉर्ड में जिंदा रहकर ही पेंशन मिलेगी ना। अलका सोनी से पूछती है कि अब क्या करना होगा। सोनी बताती है कि प्रमाणित करना होगा कि अंकल जिंदा है। यह सब सुनकर माधोसिंह कहते हैं कि कैसे प्रमाणित करना होगा। आपके रेकॉर्ड में जो गलती हुई उसे सुधारना चाहिए। किंतु सोनी माधोसिंह को कहते हैं कि आप हमे समझने की कोशिश कीजिए। आप ऐसा कीजिए एक अर्जी लिखकर दीजिए और जिंदा होने का प्रमाण दीजिए। मिस्टर ए सोनी से कहते हैं कि, आप जरा प्रेम से बात करो यार। मिस्टर एक सोनी की बात सुनकर कहते हैं कि, अर्जी लिखिए और अपना हस्ताक्षर करने से मत भूलना। माधोसिंह अलका को कहते हैं कि हो सके तो नीति को पत्र लिखना बेटी। अलका, मिस्टर ए और सोनी दयाराम आपस में चर्चा करते हैं कि, अपने रेकॉर्ड में इतनी बडी गलती कैसे हो सकती है। तब दयाराम कहता है कि गरीबमार इसी को तो कहते हैं साहब। मिस्टर ए अलका का गुस्सा देखकर उसे सॉरी बोलता है और इस केस को सिरियसली लेने का वादा करता है।

पहले अंक के तीसरे दृश्य में प्रस्तुत नाटक में डॉ. कुसुमकुमार जी ने यह दिखाया है कि, माधोसिंह किसी डॉक्टर के पास स्वयं जीवित होने का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए जाते हैं। माधोसिंह को डॉक्टर पूछते हैं कि, बहुत दिनों से आप दिखाई दे रहे हो। माधोसिंह डॉक्टर को कहते हैं कि मैं अब दिल्ली में नहीं रहता। अलीगढ के पास एक कस्बा है उस गाँव में मैं और परिवार रहने गये हैं। डॉक्टर नीति की तबियत के बारे में पूछते हैं और कैसे आना हुआ यह भी पूछते हैं, तब माधोसिंह कहते हैं कि मेरे साथ एक बडी दुर्घटना हुई हैं कि, सरकारी

रेकॉर्ड के अनुसार मेरी मौत हो चुकी है। पेंशन विभागवालों के फैसले के मुताबिक मैं अब जिंदा नहीं हूँ। पे एंड एकाउंटस डिपार्टमेंट वालों ने एक ऐसा मेडिकल सर्टिफिकेट मांगा है जिसके आधार पर यह सिद्ध हो सके कि मैं मेरा नहीं अभी जिंदा हूँ। तब डॉक्टर कहते हैं मेरे पास आप वही मेडिकल सर्टिफिकेट लेने आए हैं? मामला पेचिदा है माधोसिंह जी। मैंने आजतक ऐसा सर्टिफिकेट किसी को दिया नहीं, मुश्किल है यह सर्टिफिकेट आपको देने से कोई बडा बखेडा मुझपर खडा हो गया तो? इसपर माधोसिंह का कहना है कि, मैं आपको कोई गलत काम करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। मैं एक जीता-जागता इंसान आपके सामने खडा हूँ और आपसे यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे एक ऐसा मेडिकल सर्टिफिकेट चाहिए जिसके आधारपर यह प्रमाणित हो सके कि मैं जिंदा हूँ। किंतु डॉक्टर माधोसिंह का कहना मानने के लिए तैयार नहीं होते। डॉक्टर ऐसा सर्टिफिकेट देने के लिए साफ इनकार कर देते हैं। माधोसिंह डॉक्टर से बहुत अनुनय विनय करते हैं मगर मैं किसी पेचीदगी में नहीं पडना चाहता कहकर सर्टिफिकेट देने से इनकार कर देते हैं। माधोसिंह का डॉक्टर से कहना है कि, आप मुझे बीस साल से जानते हैं और संकट के समय सर्टिफिकेट बनाकर देने से आप इनकार कर रहे हैं? परंतु डॉक्टर माधोसिंह को समझने की कोशिश करने के लिए कहते हैं। इसके साथ ही साथ डॉक्टर माधोसिंह को एक चिट्ठी लिखकर देते हैं और कहते हैं कि आप यह मेरी चिट्ठी किसी सरकारी अस्पताल के डॉक्टर के पास ले जाइए... जो कोई भी होगा आपकी मदद करेगा, मैंने सब लिख दिया है।

प्रथम अंक के चौथे दृश्य में डॉ. कुसुमकुमार जी ने यह चित्रित किया है कि, माधोसिंह सरकारी अस्पताल में मेडिकल सर्टिफिकेट लेने के लिए पहुँच जाते हैं। माधोसिंह सरकारी अस्पताल में काम करनेवाले कर्मचारी को डॉक्टर कब आनेवाले हैं इसकी जानकारी लेना चाहते हैं। परंतु वह कर्मचारी माधोसिंह को लाईन में खडे रहने के लिए कहता है। माधोसिंह का विचार है कि मेरा केवल एक मिनट का काम है, मैं क्यों लाइन में खडा रहूँ। किंतु वहाँ का कर्मचारी लाइन में खडा रहने के लिए माधोसिंह से आग्रह करते हैं। अंत में वह कर्मचारी माधोसिंह को एक ॲप्लीकेशन लिखकर छोड जाने के लिए कहता है और माधोसिंह को वह यह भी कहता है कि आपका सर्टिफिकेट घर पहुँच जायेगा। उस कर्मचारी के अनुसार माधोसिंह ॲप्लीकेशन लिखकर देते हैं और अपने घर आते हैं। कई दिनों के बाद माधोसिंह की पत्नी कमला माधोसिंह को डाकखाने में माधोसिंह का पता लगवाने के लिए कहती है और वह इतना भी कहती है कि क्या मालूम वहीं कहीं इधर-उधर हो गया हो सर्टिफिकेट। वह इतना भी कहती है कि आपको दिल्ली से आकर पंद्रह दिन हो गये जाने कब सुनवाई होगी दिल्ली में हमारी। तब माधोसिंह कहता है कि दिल्ली ऊँचा सुनती है। दिल्ली का एक और चक्कर लगाना पडेगा। एक बार मरकर फिर से जिंदा होना इतना आसान नहीं होता और फिर इस जमाने में सिर्फ सांस लेने का मतलब जिंदा रहना थोडे है। पैसा चाहिए, पैसा आदमी को मारता है। पैसा जिलाता है। माधोसिंह के इस विचार पर कमला का कहना है कि, पैसा सबकुछ है फिर भी आपकी जिंदगी से बढकर कुछ नहीं.. आप यों ही अपने आपको कोसते रहते हैं, मुझे नहीं अच्छा लगता। तब माधोसिंह कमला को कहते हैं कि, क्या मुझे घर में बुझा हुआ चूल्हा क्या अच्छा लगता है? जो पैसा कर सकता है, आदमी नहीं कर सकता कमला। आज सुबह से घर में चूल्हा नहीं जला। लगता है पूरे घर की सांस बंद है। इसी बीच मगनलाल आकर कमला को चिनी, चाय-पत्ती और दूध देता है और पचास रुपये भी देता है। मगनलाल किसी-न-किसी बहाने माधोसिंह के परिवार को मदद

करना चाहता है। परंतु कमला उसे मदद करने के लिए मना कर देती है तब माधोसिंह कमला को समझाते हैं और मदद लेने के लिए कमला को मजबूर कर देते है।

प्रथम अंक के पांचवे दृश्य में लेखिका डॉ. कुसुमकुमार जी ने यह चित्रित किया है कि, माधोसिंह अस्पताल में पहुँच गये हैं क्योंकि उन्हें सरकारी अस्पताल के डॉक्टर के द्वारा पत्र दिया है कि, आप जीवित होने का ठोस प्रमाण देना चाहिए, इसलिए माधोसिंह अस्पताल में पहूँच गये हैं। वहाँ की लंबी भीड को देख रहे हैं और कतार में खडे लागे अस्पताल में काम करने वाले कर्मचारियों के साथ पहले कौन आया है और पहला नंबर किसका है इस विषय को लेकर विवाद चल रहा है। इतने में वहां लेडी डॉक्टर आती है और माधोसिंह को लाईन में खडे रहने का आदेश देती है। किंतु माधोसिंह लेडी डॉक्टर को मेरा काम दूसरा है, मगर वह लेडी डॉक्टर माधोसिंह को लाइन में खडा रहने के लिए कहती है। लेडी डॉक्टर की ऊँची आवाज सुनकर सब मरीज चूप हो जाते हैं, परंतु हरिओम नाम का व्यक्ति सबसे बाद आकर अपनी पर्ची सबसे ऊपर रखता है और सबसे पीछे जाकर खडा हो जाता है। लेडी डॉक्टर हरिओम का नाम पुकारती है। नाम सुनते ही कतार में खडे लोग अचरज से देखते हैं। लेडी डॉक्टर हरिओम से पूछती है कि तुम्हारी पर्ची सबसे ऊपर लगी है तब तुरंत वहां कर्मचारी आकर लेडी डॉक्टर के कानों में कहता है कि सरकार अपना पडोसी है। यहाँ लेखिका ने व्यंग्य किया है कि सरकारी अस्पताल में भी अपने जान-पहचानवाले तथा पडोस में रहनेवाले लोगों की मर्जी संभाली जाती है। लेडी डॉक्टर मरीजों को चैकअप करने के बगैर किसी को फोन करने के लिए जाती है। फोनपर किसी के साथ हँसती है और फिर से अपनी जगह आकर बैठ जाती है। तब माधोसिंह उसे अपना एक मिनट का काम है ऐसा कहने का प्रयत्न करते हैं, परंतु वह लेडी डॉक्टर माधोसिंह को कल आने के लिए कहती है। दूसरे दिन माधोसिंह अस्पताल में पहुंच जाते हैं तब माधोसिंह को वहाँ के कर्मचारी के द्वारा पता चलता है कि डॉक्टर की बदली हुई है और नये डॉक्टर की नियुक्ती होनेवाली है। वहाँ का कर्मचारी कहता है कि जिसे जादा तकलीफ हो वह प्राइवेट इलाज कर सकते हैं। मुफ्त दवाओं का जादा असर नहीं होता। सभी मरीज घर लौट जाते हैं। अकेले माधोसिंह को वहाँ खडा देखकर कर्मचारी उसे कहने लगता है कि हमारे डॉक्टर कह रहे थे कि आपका काम बहुत जल्दी होगा क्योंकि जिंदा आदमी को जिंदा कहने में क्या मुश्किल है? शायद आप अंग्रेजी बोलना नहीं जानते नहीं तो एक ही जुमला दोहराते बार-बार ट्राई टू अंडरस्टैंड। वाय कांट यू अंउरस्टैंड? प्लीज मॅन, ट्राई टू अंडरस्टैन्ड द सिचुएशन। विश वी कुड हेल्प यू अंडरस्टैंड?

माधोसिंह सरकारी अस्पताल से अपने घर आ जाते हैं तब नीति उनके सामने आकर कहने लगती है कि, मैं आपकी चिंता बनी रही हमेशा। आपकी मुसीबतें बढती रही। आपपर बोझ हूँ पापा मैं। नीति का यह कहना सुनकर माधोसिंह नीति को समझाते हैं कि नहीं नीति बिटिया, तू ऐसा एकदम मत समझ। तू खुद को संभाल ले तुझे किस की चिंता है। घर की चिंता के लिए मैं जो हूँ। इस प्रकार माधोसिंह अपनी बेटी नीति के विचार परिवर्तन करने का प्रयत्न करते हैं।

द्वितीय अंक के प्रथम दृश्य में नाटककार डॉ. कुसुमकुमार जी ने यह लिखा है कि, माधोसिंह अस्वस्थ हुए है। उनकी तबियत ठीक नहीं है। कमला उन्हें पानी और दवा देने की कोशिश करती है और उसे यह भी

कहती है कि आपको रातभर दिल्ली के सडकों पर रात गुजारने की क्या पडी थी अगर किसी जान-पहचानवाले के घर जाते तो अच्छा होता। माधोसिंह स्वयं की चिंता न करते हुए नीति को दवा ली है या नहीं इसकी पूछताछ करते हैं। माधोसिंह नीति को अपने घर में ही बच्चों का स्कूल खोलने का विचार व्यक्त करते हैं। परंतु कमला उन्हें यह कहकर मना कर देती है कि फीस देकर यहाँ बच्चों को पढने भेजता ही कौन है? और अगर भेजता भी है तो तीस-चालीस रुपए में गृहस्थी चल जाएगी। माधोसिंह का विचार है कि न सही नीति का मन तो बहल जायेगा। इतने में मगनलाल वहाँ आ जाता है और वह नीति को चाय बनाने के लिए कहता है इतना ही नहीं तो नीति को एक खुशखबरी सुनने के लिए भी कहता है। मगनलाल अपने हाथ का लिफाफा माधोसिंह की ओर बढाते हैं। माधोसिंह यह कहते हुए लिफाफा खोल देता है कि आखिर दूध का दूध हुआ, पानी का पानी। यह कागज मेरे होने का सुबूत है। माधोसिंह सर्टिफिकेट गौर से देखते हुए एकदम चिल्लाते हैं कि मगना माधोसिंह की जगह माधवसिंह लिखा है। अब इस गलती का क्या होगा मेरे नाम के स्पेलींग गलत लिखे गए अब क्या होगा? मगनलाल माधोसिंह को सांत्वना देते हैं कि चिंता मत कीजिए माधोभाई आपके नाम के इस्पेलिंग ही तो गलत है। इस सनद में ठीक हो जाएंगे। एक बार दिल्ली हो तो जाना पडेगा। कोई हरज नही इस बार मैं दिल्ली जाऊँगा। मगनलाल यह भी कहता है कि एक अर्जी आप लिखकर दीजिए। कमला को वह कागज और कलम देने के लिए कहता है।

द्वितीय अंक के दूसरे दृश्य में यह दिखाया है कि माधोसिंह मगनलाल को आज के पेपर में प्रधानमंत्री का भाषण पढने के बारे में पूछते हैं और यह भी पूछते हैं कि पढकर आपको हँसी नहीं आई? मगनलाल के सामने माधोसिंह अपने देश की जो हालत हुई है उस बारे में स्पष्ट करते हैं कि देश की उन्नति होने के अलावा हमारे देश की अवनीति कैसे हुई हैं इस बारे में स्पष्ट करते हैं माधोसिंह देश के बारे में चिंता करने लगते हैं। माधोसिंह इतना भी कहते हैं कि हर हर महादेव का भी हर फैसला लाल फीते से ही बंधकर न रह जाए तो मेरा नाम बदल देना। तब मगनलाल व्यंग्य से माधोसिंह को कहता है, आपका नाम सरकार ने जो बदल दिया है। अभी तक उसे ठीक कराने के ही लाले पडे हैं। माधोसिंह मगनलाल को मजाक की बात छोडकर सिरियसली कहते हैं कि देश में चारों तरफ भ्रष्टाचार रुपी दल-दल है और दल-दल में सामान्य व्यक्ति को सांस लेना मुश्किल हो गया है। किंतु मगनलाल का कहना है कि सामान्य आदमी की सांस इस मुल्क में बस एक बार तेज हो जाती है वोट लेते बखत। परंतु जब तक यह भ्रष्टाचाररूपी दलदल सूख जायेगी तब यह देश खुली सांस लेगा। नीति माधोसिंह के नाम का लिफाफा माधोसिंह को देती है। माधोसिंह लिफाफे की ओर देखकर मुस्कुराते हैं और कमला को कहते हैं कि कमला, देखो तुम्हारा पति फिर से जी उठा। कमला, आज से मगना के लिए उसकी खालिस देती चाय बनाकर लाओ। आज से मगना के लिए काली चाय बंद। माधोसिंह नीति को कहते हैं कि तुम देखती जा मैं कैसे पे अँड एकाउंटस ऑफिस को चिट्ठी लिखकर अपने सारे पैसे बटोरता हूँ। और कागज, कलम लेकर चिट्ठी लिखने लगते हैं। चिट्ठी लिखने के बाद माधोसिंह नीति को कहते हैं कि, अगली बार जब हम दिल्ली जाएंगे तो... यह सुनते ही नीति माधोसिंह से कहती है कि अब हम दिल्ली नहीं जाएंगे। पापा आगरा जाएंगे। इन दोनों की बातें सुनकर कमला वहाँ आकर कहने लगती है कि नहीं आगरा नहीं जाएंगे। मथुरा-वृंदावन जाएंगे आगरा में क्या धरा है? माधोसिंह नीति को समझाते हुए कहते हैं कि 'हम आगरा ही जाएंगे बिटियाँ।

द्वितीय अंक के तिसरे दृश्य में यह दिखाया है कि – माधोसिंह पे एंड एकांउट्स कार्यालय में आ गये है। साथ में मगनलाल भी है। कार्यालय में काम करनेवाले कर्मचारियों में मिस्टर पी, जरीवाला, तथा मिस्टर क्यू अपना–अपना काम कर रहे हैं। माधोसिंह को मिस्टर पी. अपनी केस के बारे में बताने के लिए कहते हैं। माधोसिंह कहने लगते हैं कि मैने तो सोचा था सब काम हो गया आपके दफ्तर में चिट्ठी लिखने के बाद मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि अब और किसी तरह की एन्क्वायरी होनी बाकी है। यहाँ आपके दफ्तर में भी मेरे पैसे किसी कारण से रुक सकते हैं। माधोसिंह की बात सुनकर मिस्टर कहते हैं कि यहीं पर तो हमे आदमी की असली एन्क्वायरी कनी पडती हैं जेंटलमैन। पैसों का मामला है... ऊपर से नीचे तक सब तरह की क्लियरेंस यही तो जरूरी है? दिस इज पे एंड एकाउंटस् ऑफिस। यह कोई किसी के घर की टकसाल तो नहीं कि जो आए, अपना हक बताए, पैसा ले और चलता बने समझे न आप? माधोसिंह केवल जी कहकर चुप हो जाते हैं। मिस्टर पी आगे कहते हैं कि हम फिर भी आपके केस पर पूरी हमदर्दी से विचार करेंगे – समझें जेंटलमैन? मिस्टर पी 'फॉर इमीडिएट डिस्पोजल लिखता है और जरीवाला को देता है, यह कहते हुए कि फाइल जल्दी मिस्टर क्यू के पास भिजवाओ जरीवाला के हाथ से फाइल लेकर पुन: उसपर लिखता है 'डिसीजन टुबी टेकन इमीडिएटली। इसके साथ ही साथ मिस्टर पी जरीवाला को कहते हैं कि मिस्टर क्यूं से कहना फाइल आगे जल्दी मिस्टर आर तक भिजवा दें। मिस्टर पी माधोसिंह को कहते हैं कि अब तो खुश हो सब काम आपके सामने समझा दिया है। अब आप जाइए... अपना फैसला हम आपके जल्दी बता देंगे। माधोसिंह ऑफिस से बाहर आते हैं। माधोसिंह की उदासी जाती नहीं तब मगनलाल माधोसिंह को कहते हैं कि मैं किसी पर अन्याय होता हुआ देख नहीं सकता था। किसी पर अन्याय होता तो मचल पडता था। किसी की बदमाशी की खीर पकते देखना मेरे लिए उतना ही मुश्किल था जितना अब नीति को उदास बैठी देखना। बाबा ने मरते समय कसम खिलाई थी कि मैं बाकी जैसे चाहू जिंदगी बिताऊँ पर कभी किसी पर हाथ ना उठाऊं लेकिन नहीं, अब वह प्रण टूटकर रहेगा। मगनलाल माधोसिंह को गृहमंत्री के पास ले जाना चाहता है मगर माधोसिंह किसी मंत्रियों के चक्कर में पडना नहीं चाहते।

द्वितीय अंक के चौथे दृश्य में यह दिखाया गया है कि मगनलाल माधोसिंह को लेकर मंत्री के पास आ जाते हैं। मंत्री कहते है कि, इतने वर्षों बाद तुम हमसे कैसे मिलने चले आए? सब खैरियत तो है। तुम्हें इंतजार करना पडा होगा क्या किया जाय मगनलाल हम लोगों का अपने ही जिंदगी पर अपने ही टाईम पर बस नहीं चालता। जितना बडा देश उतनी बडी तादाद में लोग उससे भी बडी तादाद में समस्याएँ मंत्री और मगनलाल में चर्चा चलती रहती है। तब मगनलाल माधोसिंह का परिचय मंत्री से करवाता है माधोसिंह की समस्या माधोसिंह के मुह से मंत्री को सुनवाता है। मंत्री अपनी ओर से सफाई देते हुआ कहता है कि तुम लोग बहुत देर से आए हो। महीने भर पहले आए होते तो दो दिन में तुम्हारा काम हो सकता था, एक जमाना था पार्लियामेंट में हमारी पार्टी की मैजोरिटी थी। स्याह करें या सफेद करें सब चलता था। अब वह बात नहीं अर्थमंत्री दूसरी पार्टी का आदमी है मिजाज का बेहद अक्खड.. तुम्हारा केस फैसले के लिए अंत में उसी के पास जाएगा या फिर अर्थ सचिव के पास जा सकता है। मैंने तुम्हारे साथ कुछ रियासत करने को कहा तो वह जानबूझकर कुछ उलटा–सिधा फैसला लेंगे। ऐसा कहकर मंत्री माधोसिंह का काम करने से इनकार कर देते हैं। इसी दृश्य

में यह भी दिखाया गया है कि कमला और नीति आपस में बातें कर रही है। नीति का कहना है कि आज कल मेरी दवा पर बहुत खर्च हो रहा है, इसलिए नीति उदास है। परंतु कमला उसे समझाने का प्रयत्न करती है।

द्वितीय अंक के पाँचवें और अंतिम दृश्य में यह दिखाया गया है, कि माधोसिंह और मगनलाल गाव वापस आते हैं। माधोसिंह और मगनलाल कमला और नीति को पुकारते हैं, किंतु कोई भी जवाब नहीं मिलता। घर में सन्नाटा छाया हुआ है। एक कोने में कमला रोती हुई बैठी है। माधोसिंह कमला को रोने की वजह पूछते हैं और नीति के बारे में पूछताछ करते हैं। लेकिन कमला कोई भी जवाब नहीं देती। माधोसिंह कहते है कि मेरी मौत से बूरी खबर तो नहीं। तब कमला केवल 'मेरी बेटी' कह पाती है। माधोसिंह कांपने लगते हैं। मगनलाल भी जडवत् खडा रहता है। मगनलाल कमल को पूछता है कि यह हुआ कैसे? तब कमला कहने लगती है कि, जिस दिन आप दिल्ली चले गए उसी दिन उसी रात को कुछ खा लिया उसने। उस दिन रात मुझसे देर तक बातें करती रही... फिर बचपन का एक फोटो देखते-देखते और कमला रोने लगती है। माधोसिंह मगनलाल को कहते हैं कि मुझे किसी चीज की आस नहीं अब नीति बेटी मेरे होते चल बसी। मगना कौन सी आस बची है अब मेरे लिए? मगनलाल माधोसिंह को समझाते हैं कि, ना रही कोई आस माधो भाई फिर भी आप जिंदा रहेंगे भाभी को भी साहस बंधाएँगे। चलिए उठिए माधोभाई चलकर भाभी को धीरज बंधाइए। दूसरे दिन मगनलाल, कमला और माधोसिंह तीनों मिलकर आपस में चर्चा करते हुए बैठे हैं। मगनलाल बताता है, सत्यपाल नाम का जाना-पहचाना व्यक्ति था। अच्छ भली गृहस्थी चल रही थी। अचानक एक दिन उसके मन में क्या आया कि वह सबकुछ छोडकर संन्यास ले ले मन के व्यापार बडे अजीब होते हैं भाभी। उसी समय दरवाजे पर दस्तक के साथ एक पत्र गिरा है, उसे उठाकर मगनलाल माधोसिंह को देते हैं। पत्र पढ़कर माधोसिंह कहते हैं कि, अब कहीं जाकर सरकार के सिर जूं रेंगी। यह सुनकर कमला उदास होकर कहती है कि, अब चाहे जू रेंगे या साप लोटे किसी के सिर पे अब किसी चीज की कोई खुशी नहीं मुझे। अपनी पत्नी की उदासी देखकर माधोसिंह कहते हैं कि, खुश होने को अभी हुआ क्या है? अभी तो एक और इन्क्वायरी होनी है। अर्थ सचिव ने मामला निपटाने के लिए एक इनवेस्टीगेशन ऑफिसर मुकर्रर कर दिया है। आगे लिखा है, आपको दिल्ली आने की जरूरत नहीं। कई दिनों के बाद माधोसिंह के दरवाजे पर डाकिया आता है और कमला को कहता है कि उन्हें बुलाइए उनके नाम रजिस्ट्री है माधोसिंह कोठारी। कमला डाकिया को कहती है कि, वे नहीं रहे तब डाकिया पूछता है कब गुजरे वे? कमला बताती है चार महीने हो गए। अंत में डाकिया कहता है, रजिस्ट्री तो उनके नाम है। यहाँ नाटक की कथावस्तु समाप्त होती है।

2.3.3 दिल्ली ऊँचा सुनती है – नाटक के शीर्षक की सार्थकता :

नाटक का शीर्षक महत्त्वपूर्ण होता है। शीर्षक मनुष्य के सिर के समान होता है। जिस प्रकार शीश से मनुष्य पहचाना जाता है, उसी प्रकार शीर्षक नाटक की पूर्ण पहचान बनता है। नाटककार नाटक का शीर्षक विशेष पात्र, स्थान, प्रमुख घटना, मूल या केंद्रीय भाव, उद्देश्य आदि में किसी एक या अनेक आधारों पर करता है। शीर्षक या नामकरण करना नाटककार की कुशलता और योग्यता का प्रतीक माना जाता है। नाटक का शीर्षक प्रभावी

कलात्मक, सरल, स्पष्ट, मौलिक, नवीन–विषयानुकूल, आकर्षक संक्षिप्त आदि गुणों से युक्त हो ऐसा माना जाता है।

प्रस्तुत नाटक में वर्तमानकालीन कार्यालयीन व्यवस्था के शिकार बने आम आदमी की कहानी है। नाटक का प्रमुख पात्र माधोसिंह सेवानिवृत्त क्लर्क है। रिटायर के पश्चात वे दिल्ली से अपने पैतृक गाव आकर मगनलाल के घर किराये पर रहते हैं। रिटायर होकर कुछ महीने बीत जाने के बाद पेंशन बंद हो जाती है। छह महीनों तक पेंशन न मिलने के कारण संबंधित कार्यालय से पत्राचार करते हैं। पत्राचार से काम न बनने पर वे स्वयं कार्यालय में पहूँच जाते हैं। सरकारी कार्यालय में उन्हें अफसरशाही का सामना करना पडता है। माधोसिंह की बेटी नीति की सहेली उसी दफ्तर में काम करती है – जिसका नाम अलका है। अलका माधोसिंह को सही व्यक्ति के पास ले जाती है। वहाँ उन्हें पता चलता है कि माधोसिंह नामक व्यक्ति की छह महीने पूर्व ही मृत्यू हो चुकी है। अपने आपको जीवित सिद्ध करने के लिए मेडिकल सर्टिफिकेट की जरुरत पडती है। इसलिए वे अपनी पहचान के डॉक्टर के घर तथा अस्पताल के चक्कर काटते हैं। किसी तरह प्रमाणपत्र मिल जाता है। दुर्भाग्य से उसमें वर्तनी की गलती हो जाती है। उसे ठीक करने के लिये माधोसिंह पुन: व्यवस्था से संघर्ष करते हैं। इसमें माधोसिंह की मृत्यु हो जाती है।

प्रस्तुत नाटक का शीर्षक बडी ही खुबी से इस भाव को उभरता है कि, आम आदमी की दबी हुई आवाज दिल्ली अर्थात सरकारी कार्यालयीन व्यवस्था तथा वहाँ काम करनेवाले बाबू लोग सुन नहीं पाते। इस अर्थ में 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' यह शीर्षक सार्थक लगता है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का प्रमुख पुरुष पात्र ..... है।

अ) सुरेंद्रसिंह ब) नरेंद्रसिंह क) परमजितसिंह ड) माधोसिंह

2) नीति के सहेली का नाम ..... है।

अ) अलका ब) कमला क) राधा ड) रचना

3) सरकारी कार्यालयीन व्यवस्था ..... पर विश्वास करती है।

अ) कलम ब) कागज क) व्यक्ति ड) गवाह

4) माधोसिंह ..... के घर में किराये पर रहते हैं।

अ) सोहनलाल ब) रतनलाल क) मगनलाल ड) सूरजपाल

5) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में ..... अंक है।

अ) तीन ब) चार क) पाँच ड) दो

6) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में कुल ..... दृश्य है।

अ) पाँच ब) छः क) सात ड) दस

7) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र ..... है।

अ) विमला ब) कमला क) अलका ड) नीति

8) डॉ. कुसुमकुमार ने अब तक ..... नाटकों की रचना की है।

अ) चार ब) पाँच क) छः ड) सात

9) डॉ. कुसुमकुमार ने ..... की प्रेरणा से हिंदी नाट्य चिंतन विषय पर अनुसंधान कार्य किया।

अ) इंद्रनाथ मदान ब) चंद्रनाथ मदान क) राजेंद्रनाथ मदान ड) गहनीनाथ मदान

10) ..... साल में डॉ. कुसुमकुमार जी नौकरी से मुक्त होकर निरंतर चिंतन लेखन में रत है।

अ) 1977 ब) 1978 क) 1979 ड) 1980

11) डा. कुसुमकुमार जी का 'मादा मिट्टी' यह एकांकी संग्रह ..... में प्रकाशित हुआ।

अ) 1977 ब) 1978 क) 1979 ड) 1980

12) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है।' नाटक का शीर्षक ..... है।

अ) पात्र प्रधान ब) प्रतीकात्मक क) कथनात्मक ड) नायकप्रधान

2.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) माधोसिंह 2) अलका

3) कागज 4) मगनलाल

5) दो 6) दस

7) कमला 8) सात

9) इंद्रनाथ मदान 10) 1977

11) 1979 12) प्रतीकात्मक

2.7 सारांश :

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' यह डॉ. कुसुमकुमार का सन 1981 में प्रकाशित नाटक है।

2) प्रस्तुत नाटक में सरकारी कार्यप्रणाली में पिसनेवाले आम आदमी की कहानी चित्रित की गई हैं।

3) आम आदमी की जीवन पीडा को केंद्रवर्ती रूप में चित्रित किया है।

4) माधोसिंह की पीडा जहाँ एक ओर पारिवारिक स्थितियों को उभारती है वहीं दूसरी ओर सरकारी कार्यालयों की अमानवीय तथा भ्रष्ट कार्यप्रणाली का भी खुलकर चित्रण किया है।

5) नाटक की तमाम गतिविधियों के माध्यम से देश में चल रही नौकरशाही और लालफीतशाही का अत्यंत सटीक वर्णन प्रस्तुत किया है।

6) करुण व्यंग्य की धार पर खडे सेवानिवृत्त माधोसिंह का विवश संघर्ष, नीति की आत्महत्या और माधोसिंह की मृत्यु सरकारी यंत्रणा कहीं जडता को नहीं तोडती ऐसी स्थितियों से जूझना आज व्यक्ति की नियति है।

7) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में यह चित्रित किया है कि, लालफीताशाही के सामने आम आदमी की क्या चलती है। चारों ओर कीचड भरा है। इसमें आम आदमी की साँस घुटने लगती है। इनके घुटन को केवल एक ही बार देखा, सुना और जाना जाता है। तब उन्हें वोटों की जरुरत होती है। तब आम आदमी खास बनता है। नेता चुनकर आताहै। सत्ता हथियाता है तब आम आदमी फिर से अपने स्थानपर रह जाता है। उसे अपनी परेशानियों से खुद ही जूझन पडता है।

8) माधोसिंह की मृत्यु होकर चार माह बीत जाते हैं तब पे एण्ड एकाउण्टस ऑफिस से उनके नाम रजिस्ट्री आती है। लालफीतशाही का यह निष्ठुर व्यवहार मर्मांतक वेदना का यथार्थ चित्रण है। सेवानिवृत्त व्यक्तियों के साथ किया जानेवाला व्यवहार, उनकी आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक, स्थितियाँ, अकार्यशील कार्यालयीन कर्मचारी, पेंशनरों की उपेक्षा, कार्यशिथिलता, मंत्रियों के आश्वासन, अपने कर्तव्य से मुँह फेरते डॉक्टर आदि का सूक्ष्म चित्रण इसमें किया गया है।

9) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का शीर्षक प्रतीकात्मक है। आम आदमी की दबी हुई आवाज दिल्ली अर्थात सरकारी कार्यालयीन व्यवस्था तथा वहाँ काम करनेवाले बाबू लोग सुन नहीं पाते हैं। इस अर्थ में 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' शीर्षक सार्थक है।

2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का परिचय लिखिए।

2) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के शीर्षक की सार्थकता के स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का कथानक लिखिए।

2) नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' की समीक्षा कीजिए।

इ) संसदर्भ प्रश्न :

1) ''आपको दोष भला कौन दे रहा है? नई जगह है... यों ही मेरा मन कुछ उदास है।''

2) ''हुआ यह कि तुम दसवी पास करके चपरासी लग गए और हम बारहवी पास करके क्लर्क।''

3) ''चिट्ठियाँ बहुत लिखी बरखुरदार... बहुत रिमाइंडर भेजे... लेकिन आपकी तरफ से कोई जवाब नहीं।''

4) ''फिर वही बात।... आप अपनी ही बात की रट लगाए है। देखिए, मैंने आज तक ऐसे सर्टिफिकेट किसी को दिया नहीं और...''

5) ''अरे हम बोले रहिन, तुम्हार काम हो जाइल पर तू है कि...''

6) ''नही पहूँचा? लगता है, अभी हमारे ग्रह नहीं टले। आज पूरे पंद्रह दिन हो गए आपको दिल्ली से लौटकर भी आए।''

7) ''रख लो कमला... खुद को और मत उघाडो... रख लो... अपने हालात की सच्चाई कब तक ऐसे 'ना-ना' करके झुठलाओगी... मगना सारी बाजियां हारने के लिए क्यों लगाता है... समझ जाओ कि वह नहीं चाहता, हमारे चेहरे की लाली उसका हर उपकार हजम करके भी किसी तरह कम न हो... वह जो भी दे... जिस रूप में भी दे... लेती जाओ कमला। चुपचाप लेती जाओ।''

8) ''आओ... सालों, यहाँ आओ अब करके दिखाओ इन पर्चियों में हेराफेरी।''

9) ''हम तो बहुतेरा मना करत रहिन.... बहुत समझाए रहिन - अरे भैया, मत लगा लाइन मा... मत... लगा पर ये मानत नहीं, हम का करो?''

10) ''अब कहोंगे कि आप खाना भी खाते थे- सुस्ताते भी थे - मनुष्य जो करता है वह सभी कुछ आप करते थे... मनुष्य तो हम भी है आखिर।''

11) ''खुश होने को अभी हुआ क्या है? अभी ते एक और इन्क्वायरी होनी है... अर्थ सचिव ने मामला निपटाने के लिए एक इनवेस्टीगेशन ऑफिसर मुकर्रर कर दिया है।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का मंचन कीजिए।

2) साठोत्तरी महिला नाटककारों के नाटकों की सूची बनाइए।

3) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का मराठी में अनुवाद करने का प्रयास कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. शांति मेहरोत्रा : 'ठहरा हुआ पानी'
2. मृणाल पांडे : 'मुक्तिगाथा'
3. डॉ. कुसुमकुमार : 'ओम क्रांति क्रांति'
4. नादिरा जहीर बब्बर : 'दयाशंकर की डायरी'
5. विभा रानी : 'आओ। तनिक प्रेम करें।'

●●●

इकाई 3

पात्र चरित्र–चित्रण, संवाद, देश–काल वातावरण

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय – विवरण

3.3.1 पात्र

3.3.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण

3.3.3 संवाद

3.3.4 देश–काल वातावरण

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को अध्ययन के बाद आप–

1. 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के पात्रों से परिचित हो सकेंगे।
2. 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को समझ सकेंगे।
3. 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के संवादों का महत्त्व तथा विशेषताओं से परिचित हो जाएंगे।
4. 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के देश–काल वातावरण को समझ सकोगे।

3.2 प्रस्तावना :

इसके पूर्व की इकाइयों में हमने 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक की कथावस्तु का अध्ययन किया है। यह एक सामाजिक तथा समस्याप्रधान नाटक है जिसमें प्रशासन व्यवस्था की दसर दिरंगाई तथा लापरवाही से एक रिटायर्ड क्लर्क को अपनी जान गँवानी पडी है। नाटककार ने बडी संवेदनशीलता का से क्लर्क तथा उसके परिवार की त्रासदी का वर्णन करते हुए समाज में व्याप्त कई विसंगतियों तथा विषमताओं की ओर हमारा ध्यान खिंचा है।

नाटक मूलत: दृश्य विधा है। नाटक की कथा नाटक का आधार होती है। नाटक की कथा को पात्रों के संवादों द्वारा आगे बढाया जाता है। नाटक कथात्मक विधा होने तथा अभिनयय से साक्षात होने के कारण इसमें पात्रों-चरित्र चित्रण का विशेष महत्त्व रहता है। नाटक की कथा के घटना-प्रसंगों का निर्माता चरित्र ही होता है। ये चरित्र अपने व्यवहार, संवाद तथा क्रिया व्यापारों से मानव स्वभाव के नमूने प्रस्तुत करते हैं। इनके व्यवहार या व्यापार संवादों द्वारा प्रस्तुत होते हैं। पात्रों के बीच की बातचित ही संवाद हैं। नाटककार जो कुछ कहना चाहता है, अपने उद्देश्यों को पाठकों तक पहुँचाना चाहता है, उसे संवादों के द्वारा ही बताना पडता है। ये संवाद मात्र पढने की दृष्टि से नहीं बल्कि अभिनेयता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तथा अनिवार्य होते हैं। नाटक में घटित घटनाएँ तथा कार्य-व्यापार के लिए रुप से स्थान, समय तथा परिवेश की आवश्यकता होती है। नाटक में वातावरण की दृष्टि से मंचसज्जा, प्रकाश योजना, संगीत और ध्वनि प्रभाव, वेशविन्यास और रूपविन्याय महत्त्वपूर्ण होते हैं। 'दिल्ली ऊँचा सुनती हैं' नाटक पात्र-चरित्र चित्रण, संवाद तथा देश-काल वातावरण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत इकाई में नाटक के इन्हीं तत्त्वों का विस्तार से विवेचन किया जाएगा।

3.3 विषय विवरण :

नाटककार कुसुम कुमार ने 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के माध्यम से समूचे देश में व्याप्त नौकरशाही, लालफीताशाही और भ्रष्टाचार को उजागर किया है। नाटक के पात्र, संवाद विशेष हैं जो उक्त कथावस्तु को आगे ले जाते हैं। परिवेश या वातावरण निर्माण करनेवाले, प्रस्तुतीकरण सभी पक्ष सबल हैं। प्रस्तुत है इस नाटक के पात्र-चरित्र, संवाद तथा देश-काल वातावरण का विस्तृत विवेचन -

3.3.1 नाटक के पात्र :

किसी भी नाट्य-कृति में कथावस्तु के साथ-साथ पात्र-योजना की भूमिका निर्णायक रहती है। पात्र ही कथा को गति प्रदान करते हैं। रंगमंच पर पात्रों के माध्यम से कथा को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। नाटककार कथावस्तु की आवश्यकता को ध्यान में रखकर तथा नाटक के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पात्र-योजना को बुनता है। संस्कृत तथा हिंदी काव्यशास्त्र में पात्रों के प्रकारों पर बडे विस्तार के साथ विचार मिलते हैं। विशेषत: नाटक के प्रमुख तथा गौण पात्र होते हैं जो संवादों तथा अभिनेयता के माध्यम से कथावस्तु को आगे ले जाते हैं। नाटक का प्रमुख पात्र नायक कहलाता है जिसके जीवन तथा कार्य को केंद्र में रखकर कथावस्तु लिखी जाती है। प्रमुख पात्रों के साथ-साथ गौण पात्रों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है।

पात्र योजना की दृष्टि से 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' सफल नाटक रहा है। इसमें प्रमुख पात्रों के साथ-साथ गौण पात्र भी हैं जो संवादों द्‌वारा कथावस्तु को आगे ले जाने में मददगार सिद्‌ध होते हैं। प्रस्तुत नाटक का प्रमुख पात्र 'माधोसिंह कोठारी' एक रिटायर्ड क्लर्क है, पिछले छह महिनों से उसकी पेन्शन रुकी हुई है। पेन्शन पाने की उसकी जहोजहद, सरकारी यंत्रणा की लालफीताशाही और उसका किया गया शोषण, उसकी मृत्यु आदि घटनाओं को दो अंकों तथा दस दृश्यों द्‌वारा दर्शाया गया है। गौण पात्रों में माधोंसिंह के परिवार जन है। कमला माधोंसिंह की पत्नी है, नीति उसकी बेटी है। मगनलाल पडोसी के साथ-साथ घर के मालिक हैं। माधोसिंह का परिवार इनके घर किराए पर रहता है।

नाटक के अन्य पात्र प्रशासन व्यवस्था से जुडे हैं। इस नाटक में तीन सरकारी कार्यालयों का चित्रण हुआ है। इनके माध्यम से सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों की लापरवाही, आलसी प्रवृत्ति, लालफिताशाही तथा भाई-भतिजावाद की प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। पहला ऑफिस पेन्शन का कार्यालय है। जहाँ मिस्टर ए, सोनी, उलका और चपरासी डी. आर. (दयाराम) हैं। ये सभी पात्र बडे यथार्थ के साथ अपनी अपनी भूमिका को निभाते हैं। इनके संवादों तथा व्यवहार से इनके चरित्र, नौकरी के प्रति बेईमानी, रिश्वतखोरी, आलस्य, स्त्री के प्रति गलत दृष्टिकोण का पता चलता है। कार्यालयों में कामकाजी स्त्री को पुरुषों के गलत व्यवहार का अश्लील शब्दों तथा अश्लील नजर का हमेशा सामना करना पडता है। नाटक में ऐसी स्त्री वर्ग का प्रतिनिधित्व अलका करती है।

प्रस्तुत नाटक में एक सरकारी अस्पताल का दृश्य है। यहाँ के डॉक्टर कभी-कभार ही अस्पताल में आते हैं। सारी बागडौर अन्य कर्मचारी संभालते हैं। एक लेडी डॉक्टर भी है जो अस्पलात में जाते ही मरिजों का इलाज करने से ज्यादा अपने दोस्त से फोन पर बातें अधिक करती है। नाटक के दूसरे अंक का तीसरा दृश्य पे एकाउंटस् कार्यालय का है। यहाँ के डायरेक्टर जनरल मिस्टर पी. हैं। इनके साथ ही इस हाई-फाई कार्यालय में काम करनेवाले मिस्टर क्यू, मिस्टर टी., मिस्टर जे. और मिस्टर एस. भी हैं। वे सभी अंग्रेजी में वार्तालाप करते हैं। नाटक का अंत डाकिए द्‌वारा माधोसिंह के नाम की रैजिस्ट्री लेकर आने के प्रसंग से होता है। लेकिन इससे पहले ही माधोसिंह यह दुनिया छोडकर चले जाते हैं।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत नाटक में प्रमुख पात्र माधोसिंह तथा उनके परिवार के सदस्यों के साथ-साथ कथावस्तु की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अन्य पात्रों का संयोजन किया है। कहीं-कहीं पात्रों के नाम अँग्रेजी वर्णमाला के आधारपर या नामों का संक्षिप्तीकरण करके दिए हैं। उदा. मिस्टर पी, मस्टर क्यू आदि। नाटक के प्रसंगों तथा दृश्यों को देखें तो पात्रों की उपस्थिति बिलकुल सटीक तथा सार्थक नजर आती है। कोई भी पात्र अनावश्यक तथा अवास्तव नहीं लगता। माधोसिंह का परिवार तथा पडोसी मगनलाल को छोड दे तो अन्य सभी पात्र प्रशासन वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये पात्र अपनी समस्त वास्तविकताओं तथा विशेषताओं के साथ नाटक में उपस्थित हैं। इसके संवादों से इनके चरित्र का पता चलता है।

पात्र-संयोजन या योजना की दृष्टि से नाटक सफल रहा है।

3.3.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण :

नाटक पढा जाता है साथ ही रंगमंच पर खेला भी जाता है। इस दृष्टि से दृश्य–श्रव्य विधा है। नाटक के पात्रों की सोच, उनकी कार्यपद्धति, दृष्टिकोण आदि के आधार पर पात्र का चरित्र–चित्रण किया जाता है। नाटक में पात्र का बाह्य तथा अंतरंग चित्रण किया जाता है। बाह्य चित्रण उसकी वेशभूषा, शरीर रचना, ऊँचाई, रंग, नाक–नक्शा आदि को नाटककार स्पष्ट रूप से वर्णन करता है। पात्र के व्यक्तित्व की विशेषताएँ मात्र उसके संवाद तथा कार्य या व्यापार से ही पता चलती है। पात्र अपने–अपने चरित्रों या अपनी–अपनी भूमिका को लेकर नाटक को सफल बनाते हैं। 'दिल्ली ऊँचा सुनती है।' नाटक के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं –

■ माधोसिंह :

'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के प्रमुख पात्र 'नायक'माधोसिंह हैं। क्योंकि ये नाटक की शुरुआत से लेकर अंत तक कथा में उपस्थित है और नाटक का उद्देश्य इनके कार्य व्यापार पर ही निश्चित हुआ है। माधोसिंह नाटक के प्रमुख पात्र हैं मात्र उनके जीवन की त्रासदी इस नाटक में चित्रित है।

माधोसिंह कोठारी जी की उम्र लगभग अट्ठावन वर्ष की हैं। वे अर्थमंत्रालय में क्लर्क की नौकरी करते थे। कुछ महीने पूर्व वे सेवा–निवृत्त हुए हैं। उन्हें सव्वा दो सौ रुपय पेन्शन मिलेनवाली है लेकिन छह महीने हुए उन्हें पेन्शन नहीं मिली है। माधोसिंह का छोटा परिवार है। परिवार में पत्नी कमला और बेटी नीति है। माधोसिंह स्वभाव से गरीब आदमी है और पैसों की तंगी के कारण दिल्ली शहर को छोडकर अलीगढ के पास छोटे से कस्बे में आकर किराए के मकान में रह रहे हैं। इसी मकान के आँगन में पहले अंक का पहला दृश्य चित्रित है। प्रस्तुत है नाटक के नायक 'माधोसिंह कोठारी' जी के चरित्र की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ –

1. व्यवस्था का शिकार माधोसिंह :

प्रस्तुत नाटक का प्रधान उद्देश्य प्रशासन व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों, भ्रष्टाचार, लालफिताशाही के साथ–साथ भाई–भतीजावाद के परिणामस्वरूप सामान्य या आम आदमी के जीवन की त्रासदी को दर्शाना रहा है। नाटक के नायक माधोसिंह अर्थ मंत्रालय से क्लर्क की नौकरी से सेवा–निवृत्त हुए हैं। पिछले छह महिनों से पेन्शन प्राप्ति के लिए प्रयास कर रहे हैं। उनकी पेन्शन सरकारी अधिकारियों की लापरवाही तथा लालफीताशाही में अटकी हुई है। बेचारे माधोसिंह पेन्शन मिलने की उम्मीद रखकर कई चिट्ठियाँ लिख चुके हैं। स्वयं दिल्ली के पेन्शन ऑफिस में जानेपर उन्हें पता चलता हैं कि ऑफिस के रेकार्ड के अनुसार माधोसिंह को मृत घोषित किया गया है। अब दूबारा अपने आप को जीवित साबित करने के लिए उन्हें सरकारी अस्पताल से 'जीवित होने का प्रमाणापत्र' देना पडा। उसके पश्चात् भी माधोसिंह की पेन्शन अटकी रही। पे अण्ड अकाउण्ट विभाग द्वारा इन्वैस्टीगेशन ऑफिसर की नियुक्त की गई । इधर बेटी की असमय मृत्यु से माधोसिंह पेन्शन की उम्मीद छोड जाते हैं और इसी दु:ख में एक दिन उनकी मृत्यु हो जाती है।

2. माधोसिंह की गरीबी :

प्रस्तुत नाटक के नायक 'माधोसिंह' सरकारी क्लर्क की नौकरी से सेवा-निवृत्त हुए हैं। वे दिल्ली जैसे बडे महानगर में रहते थे लेकिन अब सव्वा दो सौ रुपए की पेन्शन से परिवार का गुजारा नहीं हो पाएगा। उसमें भी आधे-अधिक पैसे बेटी नीति की दवापर खर्च होते हैं। पैसों की अभावग्रस्तता के कारण ही वे दिल्ली जैसे महानगर को छोडकर अलीगढ के पास एक छोटे से कस्बे में दूसरे के घर में किराए के मकान में रहते हैं। पैसे की अभावग्रस्तता इतनी है कि पेन्शन के काम के हेतु दिल्ली जाते समय उनका पडोसी मगनलाल पैसा देता है। दिल्ली में भी वे घर से दफ़्तर और दफ़्तर से घर की बीस मील की दूरी साइकिल से तय करते थे। बेचारे बहुत थक जाते थे। लेकिन अपनी गरीबी के कारण कोई इलाज भी नहीं था। माधोसिंह की गरीबी उनकी बेटी की मृत्यु का कारण बन जाती है। बेटी को बार-बार लगता है कि गरीब माँ-बाप के लिए मैं एक प्रकार से बोझ बन बैठी हूँ। इसी मानसिकता से वह आत्महत्या कर लेती है। गरीबी के कारण बेचारे माधोसिंह लाचार सी जिंदगी जी रहे हैं। उनका पडोसी मगनलाल कोई न कोई बहाना बनाकर उनकी मदद करता रहता है।

3. दुर्घटनाग्रस्त :

प्रस्तुत नाटक के नायक माधोसिंह के जीवन में एक साथ कई हादसे घटित हुए। उनके जीवन की पहली दुर्घटना तो सरकारी अफसरों की आलसी तथा कामचोर प्रवृत्ति के कारण घटित हुई। बहुत सारी चिठियाँ लिखने के बाद भी जब पेन्शन के ऑफिस से कोई उत्तर नहीं आया। माधोसिंह स्वयं दिल्ली में जाकर जब पूछताछ करते हैं तो पाया जाता है कि पेन्शन के दफ़्तर के अनुसार वे मृत घोषित किए गए हैं। सरकारी रेकॉर्ड में उनकी मौत ही चुकी है। अब पेन्शन पाने के लिए उन्हें डॉक्टर से जीवित होने के प्रमाणपत्र लाना होगा तभी उन्हें पेन्शन संभव होगी। वे बडी जद्दोजहद करके सरकारी अस्पताल के डॉक्टर से प्रमाणपत्र तो प्राप्त करते हैं लेकिन उसमें भी उनके नाम को लेकर गलती हो जाती है। प्रमाणपत्र पर माधोसिंह की जगह 'माधवसिंह' लिखा जाता है। पुन: प्रयास करने पडते हैं। हर जगह उन्हें प्रशासन में व्याप्त लापरवाही, आलस्य, भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद का सामना करता पडता है। माधोसिंह के जीवन में सबसे बडा हादसा बेटी नीति की मृत्यु रही है। पिता की आर्थिक दूरावस्था तथा परिवार की खस्ता हालात को देख वह आत्महत्या कर लेती है। स्पष्ट है एक गरीब तथा आम आदमी का जीवन संकटों, समस्याओं, दुर्घटनाओं से भरा होता है। माधोसिंह के जीवन में भी कई सारी दुर्घटनाएँ घटित हुई हैं।

4. व्यवस्था द्वारा शोषित :

वर्तमान प्रशासन व्यवस्था में आर्थिक शोषण बहुत बडी समस्या रही है। किसी भी सरकारी कार्यालय में जब हम किसी काम हेतु जाते हैं तो हमारे सामने यह समस्या खडी हो जाती है। माधोसिंह को भी पेन्शन के दफ़्तर में प्रशासन व्यवस्था की भ्रष्टता तथा लालफीताशाही का सामना करना पडा है। माधोसिंह के कागजात सही समय और सही ढंग से प्रस्तुत किए जाते तो बेचारे को सही समय पर पेन्शन मिल पाती। उसका परिवार अपना गुजारा कर लेता। बेटी आत्महत्या नहीं करती, माधोसिंह भी मृत्यु को नहीं अपनाते। नाटक में माधोसिंह

जहाँ-जहाँ, जिस-जिस सरकारी कार्यालय में गए हैं वहीं उनका शोषण ही हुआ है। यहाँ तक की जनता के सेवक बने फिरते हमारे राजनेता भी भले आदमी का काम नहीं करते हैं। स्पष्ट है, माधोसिंह की मृत्यु के लिए प्रशासन जिम्मेदार है। माधोसिंह के द्वारा नाटककार के प्रशासन व्यवस्था द्वारा सामान्य या आम आदमी के शोषण को वाणी दी है।

5. अभागा पिता :

माधोसिंह का छोटा सा परिवार है। परिवार में पत्नी कमला और बेटी नीति है। तीनों परिवार की अवस्था से भली-भाँति परिचित है। नीति मानसिक रूप से बिमार रहती है जिसकी दवाइयोंपर परिवार का अधिकतर पैसा खर्च होता है। बेचारे माधोसिंह को छह महीनों से पेन्शन नहीं मिल पाई है। पेन्शन के सिलसिले में वे दो-तीन बार दिल्ली के चक्कर काट चुके हैं। इस बार भी वे मगन के साथ दिल्ली गए हैं और इधर नीति उसी रात जहर खाकर आत्महत्या कर लेती है। बेचारे माधोसिंह दूसरे दिन जब घर वापस आते हैं तब उन्हें इस बात की खबर मिलती है। वे जोर-जोर रोते हैं। उन्हें लगता है कि मेरी आर्थिक स्थिति यदि अच्छी होती तो नीति का अच्छी तरह से इलाज कर पाता। अपने परिवार को खुश रख पाता। बेटी की मृत्यु से माधोसिंह निराशावादी बन जाते हैं। मगन से कहते हैं, ''मुझे अब किसी चीज की आस नहीं रहीं... नीति बेटी मेरे होते हुए चल बसी। उन्होंने नीति से वादा किया था कि पेन्शन के मिलते ही वे ताजमहल देखने आगरा ले जाएँगे। लेकिन उनका सपना अधूरा रह गया।

6. आम आदमी के प्रतिनिधि :

प्रस्तुत उपन्यास में माधोसिंह सेवा निवृत्त क्लार्क के रुप में परिचित हैं। लेकिन सेवा निवृत्त हो जाने के बाद उनका जीवन आम आदमी के जैसा बिलकुल साधारण जीवन बना हुआ है। उसका प्रशासन व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, लालफीता शाही, भाई-भतीजावाद से हुआ परिचय या साक्षात्कार आम आदमी के जैसा ही रहा है। वह आम आदमी जो शोषण को सहता है, लाचार होकर रहता है। उसकी बेबसी उसे लाचार बनाती है। न उसकी किसी बडे नेता से जान-पहचान है और न ही उसके पास इतने पैसे हैं कि जिन्हें देकर वह अपना काम करा सकें। वह दर-दर भटकता है। निराश तथा हताश है। माधोसिंह प्रतिनिधि है उस गरीब तथा आम आदमी का जो प्रशासन की लापरवाही का शिकार हुआ है।

माधोसिंह बडे संवेदनशील इन्सान हैं। अपनी लाचारी, बेबसी के साथ ही दूसरों के प्रति आदर रखने की प्रवृत्ति के कारण अपने ऊपर होते हुए अन्याय के बावजूद वे कभी किसी को भला-बूरा नहीं कहते। वे बडे सहनशील स्वभाव के आदमी हैं। उनमें आशावाद तो है ही लेकिन परिस्थिति उन्हें निराशा की गिरफ्त में धकेलती है। वे अच्छे पडोसी हैं साथ ही मगन के मित्र भी।

स्पष्ट है नाटककार ने माधोसिंह को प्रमुख पात्र या नायक के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके चरित्र को कई विशेषताओं द्वारा रेखांकित किया है।

कमला :

नाटक के नायक माधोसिंह की पत्नी कमला है। उनकी उम्र पचपन के आसपास है। अपनी मजबूरी के कारण दिल्ली जैसे शहर को छोडकर अलीगढ के नजदीक एक छोटे से कस्बे में आकर रह रहे हैं। कमला को इस बात का दु:ख है। वह स्वयं कहती है कि हालात अच्छे होते तो किसे पडी थी शहर छोड यहाँ आने की। कमला अपने परिवार की आर्थिक स्थिति से भली-भाँति परिचित है। वह अपने पति की रुकी हुई पेन्शन जल्दी मिलने की आस बंधाए बैठी है। वह माधोसिंह के साथ बेटी नीति का भी खयाल रखती है। अपनी बेटी के गुण गाए वह थकती नहीं है। अपने पति को जब सर्दी लग जाती है तो उन्हें दवाइयाँ देकर पट्टी भी बांध देती है।

कमला बडी आशावादी नारी है। वह अपने परिवार को हमेशा हसता-खेलता देखना पसंद करती है भगवान पर विश्वास या आस्था रखती है। नीति बेटी को समझाती रहती है कि भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं। वह अपने बेटी की हिम्मत बनाए रखती है। इसके बावजूद बटी आत्महत्या कर लेती है जिसका बडा सदमा कमला को लग जाता है। इसके पश्चात् माधोसिंह भी चल बसते हैं। बेचारी कमला अकेली रह जाती है। नियति उसके साथ खेल खेलती है। जीवनभर पेन्शन के लिए जद्दोजहद करनेवाले माधोसिंह की मृत्यु के पश्चात् कमला के घर के दरवाजे पर डाकिया पेन्शन संबंधी रैजिस्ट्री लेकर आता है। कमला बेचारी धीमे और मृत स्वर में उसे माधोसिंह की मृत्यु का समाचार सुनाती है।

स्पष्ट है कमला के चरित्र में हमें संवेदनशीलता, सहनशीलता, माँ का ममत्त्व, परिवार का खयाल रखनेवाली, आशावादी के साथ-साथ अकेलेपन से लडनेवाली नारी की विशेषताएँ नजर आती हैं।

नीति :

'नीति' माधोसिंह की बेटी है जिसकी उम्र पचीस वर्ष के करीब है। वह परित्यक्ता है। सुंदर तो है पर अधिकांशय समय अस्वस्थ, उदास रहती है। उसकी अस्वस्थता मनोवैज्ञानिक है, मानसिक है। नीति बडी संवेदनशील है इसी वजह से परिवार की खस्ता हालत को देखकर अपनी दवाइयों पर होता खर्च बंद करना चाहती है। वह अपने आप में खोई रहती है उसे लगता है कि वह परिवार पर बोझ बनी हुई है। नाटककार ने बीच-बीच में उसे थोडी आशावादी भी दिखायी है। पिता की पेन्शन मिलने पर वह आगरे का ताजमहल देखने की इच्छा व्यक्त करती है। लेकिन पिता के जीवन में एक के बाद एक आती दुर्घटनाओं को देखकर वह टूट सी जाती है। एक रात जब माधोसिंह और मगन घर में नहीं थे, वह कुछ खाकर आत्महत्या कर लेती है। इससे माधोसिंह पूरी तरह से टूट जाते हैं।

प्रस्तुत नाटक में दो महत्त्वपूर्ण स्त्री पात्र कमला और नीति हैं। ये दोनों दिन-रात घर में रहने के कारण इनके बीच ही अधिकतर संवाद हैं। नीति अपने माँ-बाप से प्यार करती है तथा उनका खयाल भी रखती है।

मगनलाल :

नाटक के पात्र मगनलाल कथा नायक माधोसिंह के घर मालिक, पडोसी तथा मित्र हैं। वह चालीस के

आस-पास है। शादीशुदा नहीं है। व्यायाम का शौक है। पहलवान किस्म के हैं। दिल के अच्छे हैं। माधोसिंह से जब आर्थिक परिस्थिति की जानकारी पाते हैं तो कोई न कोई बहाना बनाकर माधोसिंह के परिवार को आर्थिक मदद करते हैं। माधोसिंह की बेटी नीति का बडा खयाल रखते हैं। उसे गुमसूम बैठी देखकर वे परेशान हो जाते हैं। नीति को खुश रखने की कोशिश करते हैं। स्त्रियों के प्रति बडा आदर रखते हैं माधोसिंह ने जब सबसे पहली बार पत्नी कमला से परिचित करवाया तो सिर निचा करके बातचीत करके पाए गए हैं। माधोसिंह हर संभव मदद करते हैं। यहाँ तक की पेन्शन के सिलसिले में एक बार माधोसिंह के साथ अपने पैसे से दिल्ली भी जाते हैं। अपनी पहचानवाले मंत्री जी से माधोसिंह को मिलवाते हैं। नीति द्वारा आत्महत्या करने पर वे ही माधोसिंह और कमला को धीरज देते हैं। दूसरों की मदद के लिए तत्पर, संवेदनशील, स्त्रियों के प्रति आदर सम्मान रखनेवाले तथा एक अच्छे पडोसी तथा मित्र के रूप में मगनलाल का परिचय मिलता है।

मिस्टर ए :

प्रस्तुत नाटक में सरकारी अफसरों के नाम अँग्रेजी वर्णमाला के आधारपर दिए नजर आते हैं। जैसे कि मिस्टर पी., मिस्टर आर., मिस्टर क्यू आदि। मिस्टर ए पेन्शन विभाग में अधिकारी हैं। ये अपना काम शुरू करने से पहले चपरासी से कहकर अखबार और चाय की माँग करते हैं। ये अपनी नौकरी से इसलिए नाराज हैं क्योंकि पेंशन के ऑफिस में कोई रिश्वत नहीं देता है। इन्होंने बडी उम्मीद से यू. पी. एस. सी. का टेस्ट दिया था कि कस्टम या इनकमटैक्स के ऑफिस में नौकरी लग जाएगी। लेकिन इन्हें नौकरी मिलती हैं पेन्शन विभाग में। यहाँ आनेवाले बुजुर्ग लोगों के साथ इनका व्यवहार अच्छा नहीं है। ये अपने काम में आलसी है तथा फाईलों का समय पर निपटारा नहीं करते हैं। ऑफिस के खुलने का समय सुबह दस बजे हैं लेकिन ये माधोसिंह को साढे ग्यारह बजे तक इंतजार करवाते हैं। ये ऑफिस की महिला कर्मचारी के साथ भी अच्छा आचरण नहीं रखते हैं। अलका को पिछली रात देखी गयी फिल्म की स्टोरी बताने में समय बिताते हैं यह भी बताते हैं कि फिल्म की हिरोइन की शक्ल बिलकुल आपसे मिलती थी। ये माधोसिंह को वहीं बिठाकर अधिकतर समय अलका के साथ बाते करने में बिताते हैं। अलका को स्वीट गर्ल कहकर बुलाते हैं।

मिस्टर ए. प्रशासन में व्याप्त आलस्य, लालफीतशाही, भ्रष्टाचार, कामचोरी के प्रतिनिधि पात्र हैं। इनके इसी व्यवहार के कारण माधोसिंह जैसे आम आदमी को पेन्शन पाने के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड रही है। प्रशासन व्यवस्था की इन्हीं विसंगतियों तथा विषमताओं के शिकार आज कल माधोसिंह जैसे आदमी है। प्रस्तुत नाटक में पेन्शन ऑफिस, सरकारी अस्पताल, पे अण्ड अकाउण्ट सेक्शन के अधिकारी भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था के प्रतिनिधि चेहरे हैं।

3.3.3 संवाद :

संवाद नाटक का प्राण तत्त्व है। नाटककार कथावस्तु को पाठकों या दर्शकों के सामने रखने या प्रस्तुत करने के लिए संवादों को ही माध्यम बनाता है। वह नाटक के रूप में जो कुछ लिखता है वे पात्रों के परस्पर संवाद ही है। संवाद नाटक की क्रिया में भाग लेनेवाले पात्रों की बातचीत है। इसी कारण संवादों को नाटक का कलेवर माना जाता है। नाटक की सफलता संवादों पर निर्भर होती है। संवाद सरल, सुबोध, स्वाभाविक,

पात्र के अनुकूल, प्रसंग के अनुकूल, पात्रों की मनोदशा को दर्शानेवाले होते हैं । प्रस्तुत है 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के संवादों की विशेषताएँ –

1. संवाद पात्र के अनुकूल :

प्रस्तुत नाटक के संवाद पात्र के चरित्र, उसकी मनोदशा, उसका व्यवहार-आचरण आदि को स्पष्ट करनेवाले हैं। प्रस्तुत नाटक के नायक माधोसिंह के संवाद उनकी गरीबी, लाचारी, बेबसी के साथ-साथ जीवन में आए संघर्षों की कहानी को बयान करते हैं। शुरुआती दौर में माधोसिंह बडे आशावादी थे। शहर छोडकर गाँव में आकर रहने लगे तो अपनी पत्नी का हौसला, बेटी से प्यार जताते उन्हें परिस्थिति से अवगत कराते हैं। लेकिन जैसे-जैसे उनके जीवन में एक-के बाद दुर्घटनाएँ घटीत हो जाती हैं वे बेचारे लाचार से बने नजर आते हैं डॉक्टर के सामने प्रार्थना करते माधोसिंह –

''डॉक्टर साहेब, मैं आपसे किसी मरे हुए आदमी के जीवित होने का प्रमाणपत्र नहीं माँग रहा हूँ। मैं एक जीता जागता इंसान आपके सामने खडा है और आपसे यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे एक ऐसा मेडिकल सर्टिफिकेट...''

अपनी बेटी तथा परिवार की चिंता करनेवाले माधोसिंह बेटी को भरोसा दिलाते हैं। उनके प्रस्तुत संवाद से बेटी के प्रति प्यार नजर आता है –

''नीति बेटे, तू बस खुद को संभाल.... तुझे किस बात की चिंता है। घर की चिंता के लिए मैं जो हूँ। अपना मन नहीं ढाते पगली....

नाटक के पात्र मिस्टर ए. के संवाद उनकी रिश्वतखोर प्रवृत्ति को दर्शातें हैं। वे हर वक्त अपने आप पर तथा कभी-कभी पेन्शन का काम लेकर आए रिटायर लोगों पर इस बात का गुस्सा निकालते हैं कि उन्हें रिश्वत नहीं मिलती। मिस्टर ए. चपरासी डी. आर. से संवाद जिसमें बडे गुस्से से वे डी. आर. से कहते हैं-

''यहाँ साला कोई आकर कुछ पेश करे तब ना। रिश्वत मिलेगी और यहाँ? हुहें! भूखे-नंगों का दफ्तर है यह.... सब कानी कोंडी के मोहताज साले... खुद पैंशन पर गुजर करनेवाले। उनसे रिश्वत मिलेगी? भूल जा डी. आर., भूल जा!''

पहले अंक के पाँचवे दृश्य की लेडी डाक्टर कामचोर है साथ ही काम के प्रति लापरवाह भी। उसके लिए मरीज महत्त्वपूर्ण नहीं है। तडपते मरिजों को छोडकर अस्पताल में आते ही वह अपने मित्र से फोनपर बातें शुरू कर देती हैं –

''हॅलो! हॅलो विक्रम? हाऊ आर यू? एम. फाइन! हाँ अभी पहूँची हूँ। अभी तो लंबी लाइन लगी है – ऐनी वे – दैटस नॉट सो इपोरटैण्ट...''

इस प्रकार हर पात्र अपने चरित्र के अनुसार अपने संवादों को अभिव्यक्त करता है।

2. संवाद प्रसंग के अनुकूल :

प्रस्तुत नाटक दो अंक और दस दृश्यों में चित्रित है। नाटक में कई प्रसंग हैं जो संवादों के कारण जीवंत, मार्मिक, नाटकीय तथा संवेदनशील बने हैं। नाटक में कई संवाद ऐसे हैं जो प्रशासन की भ्रष्टता, लालफीताशाही, कामचोरी को दर्शाते हैं। वहाँ कई प्रसंग ऐसे हैं जिनसे सामान्य तया आम नागरिकों पर किया जानेवाला अन्याय सामने आता है। नाटक का प्रसंग है जिसमें अस्पताल का कर्मचारी अपनी जान पहचानवाले व्यक्ति जो सबसे अंत में आया है लेकिन उसकी पर्ची सबसे ऊपर रखता है। बाकी लोगों से वह लडता भी है। उसका साथ लेडी डॉक्टर देती है। प्रसंग देखें –

लेडी डॉक्टर : तुम्हारी पर्ची सबसे ऊपर कैसी लगी है?

कर्मचारी : (डाक्टर के कान के पास) सरकार, अपना पडोसी है।

लेडी डॉक्टर : ओ! लेकिन इसे खडा भी तो आगे कर देते!

युवक : इसकी हालत बहुत खराब है डाक्टर साहब, इसका जितना जल्द हो सके इलाज कीजिए।

लेडी डॉक्टर : (कर्मचारी से) मैं अभी आई। एक जरुरी फोन करना है।

प्रस्तुत संवादों से लेडी डॉक्टर की काम के प्रति लापरवाही के साथ-साथ भ्रष्टाचार को बढावा देने की प्रवृत्ति नजर आती है।

नाटक के कुछ संवाद बडे संवेदनशील तथा भावनिक है। माधोसिंह और मगन पेन्शन के सिलसिले में दिल्ली जाते हैं उसी रात नीति आत्महत्त्या कर लेती है। माधोसिंह दिल्ली से वापस आकर दरवाजेपर नीति-नीते कहकर पुकारते हैं तो कमला के रोने की आावज आती है। संवाद देखें –

माधोसिंह : नीति ... नीते। (कमला का रुलाई का स्वर....)

मगन : क्या हुआ भाभी? कुछ बताएँ तो सही (कमला अभी भी रो रही है।)

माधोसिंह : क्या हुआ है? कुछ बोलोगी भी, मेरी मौत से बुरी खबर तो नहीं ना? (कमला केवल मेरी बेटी कह पाती है।)

मगन : भाभी बताइए तो सही, यह सब कैसे हुआ? कब हुआ?

प्रस्तुत नाटक का अंतिम प्रसंग बडा ही भावूक बन पडा है। जिस पेन्शन को पाने के लिए माधोसिंह इतनी जद्दोजहद करते हैं, अपनी बेटी को खो देते हैं, स्वयं मृत्यु को अपनाते हैं उसके कुछ महीनों बाद उनकी पेन्शन मंजूरी की रैजिस्ट्री लेकर डाकिया दरवाजे पर दस्तक देता है। कमला बेचारी को किसी चीज का कोई आस नहीं रही। प्रसंग देखें –

कमला : कौन?

डाकिया : आपकी रैजिस्ट्री।

कमला : कहाँ से?

डाकिया : दिल्ली से - पे एण्ड एकाउण्टस् आफिस से।

कमला : (केवल आगे बढती है। वह नितांत मूक है।)

डाकिया : उन्हें बुलाइए - उनके नाम है.... माधोसिंह कोठारी।

कमला : (घीमे और मृत स्वर में) वे नहीं रहे...

स्पष्ट है प्रस्तुत संवादों से कमला का अकेलापन, बेबसी, निराशा स्पष्ट होती है। साथ ही पाठकों के मन में यह भाव पैदा होते हैं कि शायद डाकिया चार महिने पहिले आया होता तो माधोसिंह की जान बच पाती।

प्रस्तुत नाटक में कई ऐसे प्रसंग आए हैं जो अलग-अलग भावों, संवेदनाओं, प्रशासन की लापरवाही, प्रमुख पात्र की गरीबी या बेबसी, भ्रष्टाचार आदि को बडे मार्मिक संवादों के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं।

नाटकीय संवाद :

यह एक गंभीर नाटक हैं इस नाटक में उठाई गई समस्याएँ, आम आदमी के जीवन की त्रासदी, गरीबी, व्यवस्था द्वारा किया जानेवाला शोषण आदि के चित्रण के कारण नाटक में हास्यात्मकता तथा नाटकीयता नजर नहीं आती। फिर भी परिवार नाटक के पात्र मगनलाल नीति को हँसाने तथा उसका मन बहलाने के लिए थोडा बहुत हँसी-मजाक करते पाए जाते हैं। नीति के नाम को लेकर मगन, कमला और नीति के बीच के संवाद को देखिए -

मगन : नीति बहना, तुम्हारा नाम बडा बारीक है।

नीति : नाम बारीक माने क्या हुआ काका?

मगन : नाम बारीक माने जिस नाम को मुँह भरकर बोला भी न जा सके, वह भी भला कोई नाम हुआ?

औरत का नाम होना चाहिए ऐसा कि बुलाने में घर के चारों कोने गूंजने लगें। भगवती!... भानुमती!... अन्नपूरना!....

कमला : आपका नाम भी तो हल्का-फुल्का है भाईजी।

मगन : मेरा पूरा नाम आप नहीं जानती भाभी। मेरा पूरा नाम पुकारने में औरतों की तो सांस फूल जाए।

कमला : बताइए-बताइए.. देखें भला कितनी सांस फूलती है।

मगन : पहलवान मगनलाल अलीगढिया।

व्यंग्यात्मक संवाद :

प्रस्तुत नाटक में कई प्रसंगों में व्यंग्यात्मक संवादो का चित्रण मिलता है। पेन्शन विभाग के दो सिनियर क्लर्क मिस्टर ए कामचोर, रिश्वतखोर है। ऑफिस के सभी लोग विशेषता चपरासी (डी. आर.) इस बात को

भली भाँति जानता है इसी कारण जब भी मौका मिलता है मिस्टर ए की कामचोरी तथा आलसी प्रवृत्ति पर व्यंग करता हे। देखें –

मिस्टर ए : और फाइलों पर पडी धूल क्या मैं साफ करूँगा?

डी. आर. : नहीं आप क्यों करेंगे साहब? आप लोक हमारी तरह निकम्मे थोडे हैं? हम साफ करेंगे सब कुछ... हम... फाइलों पर पडी धूल हम झाडेंगे। हमने दसवीं पास की है, आपने बारहवीं।...

पात्रों की मानसिकता के अनुकूल :

प्रस्तुत नाटक का हर पात्र अपने चरित्र के अनुसार व्यवहार करता है। वह अपनी भूमिकिा को अपने संवादों द्वारा उजागर करता है। मिस्टर ए तथा अन्य कर्मचारी भ्रष्टता का दर्शन करते हैं। गृहमंत्री भाई–भतीजावाद को बढावा देनेवाला पात्र है।। नाटक का नायक माधोसिंह बेचारा, बेबस, लाचार बनकर अपने पेन्शन के इंतजार में हर दफ्तर के चक्कर लगाता है। दफ्तर के अधिकारियों से जब वह बातचीत करता है तब उसकी मजबूरी और लाचारी साफ झलकती है। पे अण्ड अकाउण्ट विभाग के अधिकारी से माधोसिंह का संवाद देखें –

मिस्टर पी. : वाह! यही पर तो हमें आदमी की असली एनक्वायरी करनी पडती है। जैण्टलमैन!... पैसों का मामला है!... समझे न आप?

माधोसिंह : जी!

मिस्टर पी. : यहाँ पर हर चीज कायदे, कानून से होती है... यू सी...?

माधोसिंह : जी।

मिस्टर पी. : और फिर आपका तो केस बडा अजीब सा है?...

माधोसिंह : जी।

मिस्टर पी. : हम फिर भी आपके केस पर पूरी हमदर्दी से विचार करेंगे जैण्टलमैन।

माधोसिंह : जी, समझा।

स्पष्ट है कि 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' संवादों की दृष्टि से सफल नाटक रहा है। इस नाटक के संवाद पात्र–प्रसंग के अनुकूल तो है ही साथ ही समाज में व्याप्त विषमताओं तथा विसंगतियों पर व्यंग भी करते हैं संवाद सहज, सरल तथा बोधगम्य हैं। प्रस्तुत संवाद अभिनेयता की दृष्टि से भी सार्थक बन पडे हैं। कहीं–कहीं नाटकीय बने हैं तो कहीं लयात्मक भी। संवादों से प्रसंग जीवंत बने हैं साथ ही पात्र की मनोदशा भी स्पष्ट हो पायी है।

3.3.4 देश–काल वातावरण :

नाटक और नाटकेतर विधाओं में देश–काल तथा वातावरण के चित्रण की दृष्टि से बडा अंतर नजर आता है। नाटक संवाद, अभिनेय और रंगमंच द्वारा देश–काल–वातावरण को प्रस्तुत करता है। नाटककार मंचसज्जा, प्रकाश योजना, वेशविन्यास और रूपविन्यास के साथ संगीत और ध्वनिप्रभाव द्वारा स्थान–समय और परिवेश

को प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक को देखें तो इसका सफल मंचन कई बार किया गया है। साथ हर एक अंक एवं दृश्य के चित्रण के साथ पात्रों के संवादों के समय कोष्टक का आधार लेकर परिवेश निर्माण संबंधी सूचनाएँ दी गयी है।

मंच की सजावट दृश्य के लिए अनुकूल वातावरण निर्माण करती है। प्रस्तुत नाटक में दस दृश्यों का चित्रण हैं। नाटक का पहला दृश्य बडे घर के अंगन के दो हिस्सों का है। दो परिवार सुबह-सुबह एक दूसरे से परिचित हो रहे हैं। नाटक का दूसरा दृश्य सरकारी कार्यालय का हैं चार कुर्सियाँ, मेज पास-पास लगे हैं। एक मेज के दाएं-बाएं फाइलें ही फाइलें रखी है। इस सजावट को देखकर ही हमें स्थान का पता लग जाता है। तीसरा दृश्य निजी अस्पताल का है। चौथे दृश्य से मात्र सरकारी अस्पताल और उसकी खस्ता हालत मंच सज्जा से पता चलती है। मरीज लाईन में हैं। कोई खांस रहा है, किसी के घुटने में दर्द हैं। अस्पताल का पान खानेवाला कर्मचारी इन सभी को लाइन में लगने का आदेश दे रहा है.... पांचवा दृश्य भी इसी अस्पताल का है।

दूसरे अंक का तीसरा दृश्य भी सरकारी कार्यालय का ही है लेकिन यह कार्यालय बडा हाई-फाई है। यह पे ॲण्ड अकाऊण्ट विभाग है। यहाँ के सारे अफसर सूट पहने हैं। सभी के सभी अँग्रेजी में वार्तालाप करते हैं तथा फाइलों पर टिप्पणियाँ लिखते हैं।

नाटक में प्रकाश योजना का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। मंच पर दृश्य में परिवर्तनन करने, दूरी का आभास निर्माण करने, पात्र की भाव दशा को व्यंजित करने का कार्य प्रकाश योजना से ही किया जाता है। नाटक के अंतिम दृश्य में जब नीति आत्महत्या कर लेती है, माधोसिंह और मगन घर आकर इस खबर को सुनते हैं तो माधोसिंह बिल्कुल टूट जाते हैं। कमला के पास आकर कुछ देर चुपचाप देखते रहते हैं, फिर बिना कुछ बोले उसे उठाते हैं। उसके कंधे पर हाथ रखकर फूट-फूटकर रोते हैं। यहाँ अंधेरा किया गया है। दृश्य को बदला गया है। नया दृश्य सामने आता है। इसके बाद जब लाइट लग जाती है तो कमला, माधोसिंह और मगन तीनों नीचे बैठकर चाय पी रहे हैं।

माधोसिंह की मृत्यु के समय भी मंच पर धीरे-धीरे अंधेरा होने लगता है। माधोसिंह अपना विलाप करता हुआ सीने पर हाथ रखकर एक ओर लुढक जाते हैं और मंच पर अंधेरा छा जाता है। यहाँ माधोसिंह की मृत्यु दिखाई है।

पात्रों की वेशभूषा, केशभूषा, रूपिवन्यास की दृष्टि से देखें तो माधोसिंह और उसके परिवार के परिचय में ही उनकी उम्र और आर्थिक परिस्थिति का पता चलता है। माधोसिंह अठ्ठावन वर्ष, कमला पचपन के आसपास और नीति की उम्र पचीस वर्ष की है। माधोसिंह का पहनावा सेवा निवृत्त क्लर्क का ही है। सरकारी दफ्तर के कर्मचारी पढे-लिखें तथा अलग वेशभूषा में हैं। हाँ, पे ॲण्ड एकाऊण्ट विभाग के कर्मचारियों ने सूट-बूट पहने हैं। पात्र और प्रसंग के अनुकूल उसकी वेशभूषा तथा रुपविन्यास पाया जाता है।

जब नाटक रंगमंच पर खेला जाता है तब वातावरण या परिवेश निर्माण की दृष्टि से संगीत तथा ध्वनियोजना महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है। प्रस्तुत नाटक का मंचन भी कई बार सफलतापूर्वक किया गया है।

स्पष्ट है कि नाटक देश-काल और वातावरण इस तत्त्व की दृष्टि से अन्य विधाओं से अलग सिद्ध होता है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।।

1. माधोसिंह कुछ महिने हुए सरकारी ..... की नौकरी से सेवा निवृत्त हुए हैं।

   अ) क्लर्क ब) चपरासी क) डॉक्टर ड) लेखपाल

2. माधोसिंह की बेटी ..... परित्यक्त्या है।

   अ) गीता ब) सीता क) नीति ड) मीना

3. मगनलाल की उम्र ..... के आस-पास है।

   अ) 30 ब) 40 क) 50 ड) 60

4. माधोसिंह ..... मंत्रालय में क्लर्क की नौकरी करते थें।

   अ) रक्षा ब) अर्थ क) विदेस ड) खेल

5. अपनी ..... को अब चाहे जो नाम दे दो।

   अ) मजबूरी ब) लाचारी क) हालत ड) नियति

6. फिलहाल तो सिर छुपाने को एक घर मिल गया ..... यही बहुत है।

   अ) मगना ब) नीति क) कमला ड) डी. आर.

7. ..... चिट्ठियाँ पहले लिख चुका हूँ, कोई जवाब नहीं।

   अ) पंद्रह ब) पाँच क) छः ड) आठ

8. नीति बहना, तुम्हारा नाम बडा ..... है।

   अ) लंबा ब) कठिण क) बारीक ड) सहज

9. सब है दुनिया में मेरे सब सबमें ..... नहीं।

   अ) तुम ब) हम क) सभी ड) मैं

10. यह पैंशन का दफ्तर है बाबूजी, एकाध ..... आकर बैठा ही रहता है।

    अ) आदमी ब) नौकर क) बुड्ढा ड) लडका

11. तू तो बादशशाह है, बादशाह ! ..... तेरा क्या है?

    अ) मगना ब) डी. आर. क) मिस्टर ए. ड) नीति

12. हर वक्त की तुम्हारी ..... मुझसे बर्दाश्त नहीं होती।

अ) ईमानदारी ब) लापरवाही क) शैतानी ड) कामचोरी

13. सरकारी रेकार्ड में मेरी ..... हो चुकी है।

अ) मौत ब) तरक्की क) शादी ड) जिंदगी

14. डाक्टर साहब, मेरा काम ..... मिनट का है।

अ) पाँच ब) एक क) दो ड) दस

15. पैसा सब कुछ है फिर भी आपकी ..... से बढकर कुछ नहीं।

अ) जिंदगी ब) तरक्की क) मेहनत ड) खुशी

16. यह साले आए हैं, सीधे ..... के यहाँ से।

अ) यमराज ब) धर्मराज क) स्वर्ग ड) ऑफिस

17. बेटी, हम सब मिलकर ..... जाएँगे।

अ) अमेरिका ब) काशी क) आगरा ड) दिल्ली

18. सर्टिफिकेट में माधोसिंह की जगह ..... लिखा है।

अ) माधवसिंह ब) माधोसिंग क) मधवसिंग ड) मधवासिंह

19. ..... के लिए तो सांस लेना भी मुश्किल है।

अ) नेता ब) पुलिस क) आम आदमी ड) फौजी

20. हम फिर भी आपके केस पर पूरी ..... से विचार करेंगे।

अ) आस्था ब) लगन क) हमदर्दी ड) ताकद

21. ..... करवाने से ही तो कुछ बनाव कम होता है।

अ) मालिश ब) योगा क) ध्यान ड) काम

22. कमला ..... का पाठ प्राय: पुरा कर चुकी है।

अ) हनुमानचालिसा ब) रामचरितमानस क) गीता ड) विष्णुपुराण

23. मेरा केस तो एकदम ..... है।

अ) खरा ब) जैनुइन क) फ्रॉड ड) नकली

24. कुछ बोलोगी भी, ... मौत से बुरी खबर तो नहीं ना?

अ) तेरी ब) नीति क) मेरी ड) हमारी

25. ..... इतनी बुरी चीज नहीं होती है।

अ) मौत ब) पैसा क) जिंदगी ड) नौकरी

आ) एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के प्रमुख पात्र कौनसे हैं?

2) माधोसिंह को कितने रुपए पेंन्शन मिलती है?

3) मगनलाल चिलम जलाने के लिए कमला भाभी से क्या माँगता है?

4) माधोसिंह पेन्शन के सिलसिले में अब तक कितनी चिट्ठियाँ लिख चुके हैं?

5) मगन का पूरा नाम क्या है?

6) मिस्टर ए. ने कौनसी प्रतियोगिता परीक्षा दी थी?

7) माधोसिंह ने चिट्ठियाँ किसके नाम लिखी थी?

8) कौन नौकरी छोडने की बात करती है?

9) पेन्शन ऑफिस में माधोसिंह से कौन सा प्रमाणपत्र माँगा गया?

10) मगन माधोसिंह को किस मंत्री के पास ले जाता है?

11) अर्थमंत्री किसे फोन करता है?

12) रुई के व्यापारी का नाम क्या था?

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1) **निर्निमेष –** एकटक

2) **बुलबुलेदार –** पानी के बुदबुदे

3) **कुलांचे भरना –** चौकडी भरना

4) **सकपकाना –** हिचकना, घबराहट में चकित रह जाना

5) **मलंग –** मस्तमौला, फकीर

6) **दहलीज –** देहरी, देहली

7) **जहमत –** कष्ट, तकलीफ

8) **बुदबुदाना –** अस्पष्ट रूप से कुछ करना

9) **शिनाख्त –** पहचान, परख

10) **खालिस –** शुद्ध, सच्चा

11) **कालिख –** कलंक

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

अ)

1. क्लर्क	2. नीति	3. 40	4. अर्थ
5. मजबूरी	6. मगना	7. छह	8. बारीक
9. मैं	10. बुड्ढा	11. डी. आर.	12 कामचोरी
13. मौत	14. एक	15. जिंदगी	16. धर्मराज
17. आगरा	18. माधवसिंह	19. आम आदमी	20. हमदर्दी
21. मालिश	22. रामचरितमानस	23. जैनुइन	24. मेरी
25. मौत			

आ) एक वाक्य के प्रश्नों के उत्तर।

1) माधोसिंह, कमला, नीति, मगन।

2) सव्वा दो सौ रुपए

3) आंच

4) छह

5) पहलवान मगनलाल अलीगढी

6) यू. पी. एस. सी.

7) डायरेक्टर के नाम

8) अलका

9) जीवित होने का प्रमाणापत्र

10) गृहमंत्री

11) फाइनैन्स सेक्रेटरी

12) सत्यपाल

3.7 सारांश :

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक पात्र-चरित्र चित्रण, संवाद तथा देश-काल वातावरण की दृष्टि से सफल रहा है।

2) प्रस्तुत नाटक में 'माधोसिंह' प्रमुख पात्र हैं। माधोसिंह का परिवार, पडोसी के साथ-साथ पेन्शन ऑफिस, सरकारी अस्पताल और पे ॲण्ड एकाउण्ट विभाग के कर्मचारी नाटक के पात्र हैं।

3) माधोसिंह की पेन्शन की समस्या का चित्रण करते हुए नाटककार ने सरकारी कार्यालय के कर्मचारियों के भ्रश्ट चरित्र को उजागर किया है।

4) माधोसिंह आम आदमी का प्रतिनिधित्व करते हैं। पात्र योजना की दृष्टि से नाटक सफल रहा है। कोई भी पात्र अनावश्यक तथा अतिरिक्त नहीं लगता।

5) संवाद योजना पात्र, प्रसंग के अनुकूल बन पडी है। जहाँ आवश्यकता हो वहाँ संवाद नाटकीय, हास्य-व्यंग्यात्मक, गंभीर तथा दार्शनिक बन पडे हैं।

6) संवादों से पात्र का चरित्र स्पष्ट हुआ है। छोटे, सरल, सहज संवादों का अभिनेयता के द्वारा सटीक रुप से प्रस्तुति मिली है।

7) नाटक के संवाद गतिशील, सजीव तथा भावगर्भित बने हैं जिससे हम माधोसिंह के प्रति सहानुभूति तथा भ्रष्ट, प्रशासन व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं।

8) देश-काल वातावरण की निर्मिति में सहायक मंच सजावट, वेशभूषा-केशभूषा, प्रकाश योजना, संगीत तथा ध्वनिप्रभाव आदि का नाटक में विशेष खयाल रखा गया है। स्पष्ट है कि नाटकीय तत्त्वों के आधारपर देखें तो 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक सफल रहा है।

3.8 स्वाध्याय :

(अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के प्रमुख पात्रों का संक्षेप में परिचय दिजिए।

2) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के नायक 'माधोसिंह' का चरित्र चित्रण कीजिए।

3) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक के संवादों की विशेषताएँ लिखिए।

4) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक देश-काल-वातावरण की दृष्टि से सफल रहा है - विवेचन कीजिए।

(आ) लघुत्तरी प्रश्न :-

1) कमला का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2) मिस्टर ए. भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था का प्रतीक है - स्पष्ट कीजिए।

3) नाटक के संवाद पात्रों के चरित्र को दर्शाते हैं - स्पष्ट कीजिए।

4) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक की मंचसज्जा का वर्णन कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक का मंचन करने का प्रयास करें।

2) हिंदी के प्रमुख नाटककारों के परिचय के साथ उनकी महत्त्वपूर्ण नाट्यकृतियों को संकलित करें तथा पढें।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) शर्मा सूरजकांत : 'हिंदी नाटक में पात्र-कल्पना और चरित्र चित्रण', एस. ई. एस. बुक कंपनी, दिल्ली, (1973)

2) मदान इंद्रनाथ : 'हिंदी नाटक और रंगमंच', पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, दिल्ली.

3) तनेजा जयदेव : 'समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच', नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, (1978)

●●●

इकाई 4

दिल्ली ऊंचा सुनती है – भाषाशैली, उद्देश्य, अभिनेयता एवं समस्याएँ

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय – विवरण

4.3.1 दिल्ली ऊंचा सुनती है : भाषा शैली

4.3.2 दिल्ली ऊंचा सुनती है : उद्देश्य

4.3.3 दिल्ली ऊंचा सुनती है : अभिनेयता

4.3.4 दिल्ली ऊंचा सुनती है : समस्याएँ

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1) कुसुम कुमार ने नाटक में प्रायोगिक भाषा के अलग अलग ढंग तथा भाषा का सहज और प्रभावी प्रयोग किया है, इससे परिचित होंगे।

2) शासन के विभिन्न विभागों में भ्रष्टाचार से आम आदमी किस प्रकार पिसता है, इसकी जानकारी से अवगत होंगे।

3) मंत्री, सरकारी अफसर के करनी और कथनी में अंतर होता है, इसकी जानकारी मिलेगी ।

4) आम आदमी के अभावग्रस्त जीवन की सही जानकारी मिलेगी।

5) परित्यक्ता बेटी के पिता की असहायता से परिचित होंगे ।

6) लालफीताशाही से पीड़ित आम आदमी की टूटन की जानकारी मिलेगी।

7) अभिनेयता एवं रंगमंचीयता से परिचित होंगे।

4.2 प्रस्तावना :

नाटक यथार्थ के जमीन पर खड़े होकर मनुष्य को आगे बढ़ाने और सही दिशा की ओर चलने का संदेश देता है। नाटक में सिर्फ मनोरंजन नहीं होना चाहिए बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना जगाने और अन्याय के खिलाफ लड़ने की शक्ति देने वाला विचार होना चाहिए। यह विचार नाटक की आत्मा होती है। नाटक के माध्यम से मनुष्य को प्रगति की ओर बढ़ने का संदेश और सुझाव मिलना चाहिए। तत्कालीन समस्या को चित्रित करना यह व्यंग्य नाटक का उद्देश होता है।

'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक का लक्ष्य जीवन की विभिन्न समस्याओं का उद्घाटन करना और मानवीय संवेदना को जागृत करना है। समाज की बुराइयों का पर्दाफाश करना नाटक का प्रमुख उद्देश्य रहा है। प्रस्तुत नाटक में सरकारी अफसर तथा लालफीताशाही पर व्यंग्य है। लेखिका ने शोषण, बेईमानी, भ्रष्टाचार आदि की पोल खोलते हुए उन्हें समाज के सामने रख दिया है। सरकारी कर्मचारी तथा अफसरों के भ्रष्टाचार का स्पष्ट विरोध नाटककार ने किया है। साथ ही उन्होंने अपने नाटक के माध्यम से तत्कालीन समाज में परित्यक्ता नारी की समस्या की ओर संकेत किया है। सामाजिक चेतना के लिए उन्होंने विभिन्न पात्रों को वाणी प्रदान की है।

तत्कालीन समाज में सरकारी अधिकारी और प्रशासन आम आदमी की लूटमार करते हैं, और उन्हें अकारण परेशान करते हैं । यह दुष्टचक्र चलता रहता है। सत्य को दुत्कार दिया जाता है और झूठ बोलने वालों को ऊंचा उठाया जाता है। ज्यादातर सरकारी अफसर बाहर से सभ्य और भीतर से भ्रष्ट होते हैं। बहुत सारे व्यंग्य नाटकों में इन्हीं सामाजिक मूल्यों के हनन का चित्रण हुआ है। सरकारी व्यवस्था की अव्यवस्था को यह नाटक अधोरेखित करता है।

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में नाटक विधा सबसे सशक्त साहित्यिक विधा मानी जाती है। इसमें मानवीय समाज का सर्वांगीन चित्रण बड़ी सूक्ष्मता और वास्तविकता से किया जाता है। आधुनिक समय के नाटककार अपने

साथ कई नए विचारों को लेकर आए। अपने नाटकों में राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता से स्थान दिया है । समाज के अनेक समस्याओं को उजागर करते हुए बड़ी चतुराई और सजग रूप से पाठक एवं समाज के सामने रखते हैं। हिन्दी के अन्य नाटककारों की तरह कुसुम कुमार आज की आधुनिक और सशक्त तथा जागरूक लेखिका है। उनके पास युग –जीवन की गहरी समझ है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित दिल्ली ऊंचा सुनती है नाटक इस बात का सही प्रमाण है। इसमें लेखिका ने सरकारी तंत्र में फैले भ्रष्टाचार को बेनकाब किया है। नाटक में कार्यालयीन व्यवस्था के शिकार बने आम आदमी की व्यथा का चित्रण किया है। शासकीय कार्य प्रणाली और लाल फीताशाही के कारण आम आदमी किस प्रकार पिसता जाता है, इसका चित्रण किया है। कथा का नायक माधोसिंह की रिटायर होने के बाद पेंशन बंद हो जाती है। पत्राचार के बाद भी कोई उपयोग नहीं होता। सरकारी कार्यालय की ओर से उन्हें मृत घोषित किया जाता है। स्वयं को जीवित साबित करने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है, इसका सजीव चित्रण नाटक में मिलता है। कार्यालयीन तानाशाही का वर्णन कथावस्तु को सजीव बनाता है। विषमता के विरोध में पाठकों को जागृत करने के प्रयास में सफलता पाई है। साथ ही भ्रष्टाचार, जो सरकारी अफसरों का हो या अस्पताल के डॉक्टर का हो , इसको नाटक द्वारा चित्रित किया है। आम आदमी ऐसे भ्रष्टाचार भरे देश में टूट रहा है। इस केंद्रीय समस्या पर लेखिका ने इस नाटक के उद्देश्य तत्व को प्रस्तुत किया है।

4.3 विषय विवरण :

कुसुम कुमार लिखित दिल्ली ऊंचा सुनती है नाटक समीक्षात्मक दृष्टि से देखे तो एक सफल एवं उच्च कोटि की रचना रही है। सामाजिक विकृतियों को उभारना व्यंग्य का प्रमुख कार्य हैं। नाटककार सामाजिक के साथसाथ राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि प्रकार की विकृतियों को भी दर्शाते हैं। व्यंग्य के द्वारा समाज को जागृत किया जाता है। व्यंग्य में ऐसी शक्ति होती है, जो एक ओर हमारी चेतना को झँझोड़ देती है, तो दूसरी ओर सोचने के लिए मजबूर करती है। प्रस्तुत नाटक में लेखिका ने व्यंग्य के माध्यम से आम आदमी की घुटन तथा अभावग्रस्त जीवन को साकार किया है। भ्रष्ट नौकरशाही, निवृति वेतन कार्यालय की लापरवाही, महानगरीय जीवन की भागदौड़, अस्पताल की भ्रष्ट व्यवस्था, नेताओं का भ्रष्ट वर्तन, परित्यक्ता नारियों की समस्या आदि का बेबाक और पूरी प्रामाणिकता के साथ चित्रण किया है।

नाटक के तत्वों के मापदंडों के आधार पर नाटक बड़ाही प्रभावात्मक तथा सफल रहा है।

4.3.1 भाषा शैली

4.3.2 उद्देश्य

4.3.3 अभिनेयता

4.3.4 समस्याएँ

4.3.1 दिल्ली ऊंचा सुनती है : भाषा शैली :

नाटक दृश्य काव्य होने के कारण भाषा का संप्रेषण होना अनिवार्य है। नाटक में संवाद के रूप में

अभिनेताओं के लिए लिखे जाने वाली संहिता होती है। इसके द्वारा अभिनेता दर्शकों के सामने जीवन की विभिन्न झांकियां प्रस्तुत करता है। नाटक के दर्शक सभी स्तर के लोग होने के कारण भाषा में सरलता, सहजता तथा स्वाभाविकता का होना आवश्यक रहता है। नाटक और जीवन में प्रयुक्त होने वाली भाषा में अंतर नहीं होना चाहिए।

नाटक की भाषा जीवन की भाषा है। उसमें संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। नाटक और जीवन में प्रयुक्त होने वाली भाषा में अंतर नहीं होना चाहिए। वह सामान्य बोलचाल के निकट होना आवश्यक है। कथावस्तु को आगे बढ़ाने की दृष्टि से भाषा का प्रवाहमयी होना आवश्यक रहता है। व्यंग्य, चुटिलेपन के साथ कहावतों और मुहावरों का प्रयोग अनिवार्य है। नाटक की भाव स्थिति की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के संबंध में नेमीचंद जैन जी ने कहा है कि,' प्रभावपूर्ण संप्रेषण के लिए यह भी जरूरी है कि, नाटक की भाषा यथासंभव पात्र अनुकूल होने के साथ-साथ सुबोध और एकाग्र रही तो ही, सूक्ष्म और व्यंजना पूर्ण भी हो, जो बोली जाने पर लयों और स्वरों का अपना विशिष्ट आकर्षण संगीत रच सके। ऐसी भाषा के बिना कोई श्रेष्ठ तथा महत्वपूर्ण नाटक लिखा जाना संभव नहीं और संसार की सभी भाषाओं के श्रेष्ठ और उल्लेखनीय नाटक का अपने अपने ढंग से अपने लिए भाषा का ऐसा विशेष आविष्कार करते आए हैं।'

क्लिष्ट भाषा के कारण दर्शक भाषा को ठीक तरह से समझ नहीं सकेंगे। नाटक में भाषा का अनन्यसाधारण महत्व होता है। उसमें बोलचाल और साहित्यिक भाषा का समन्वय होना चाहिए। नाटककार के भावों को दर्शकों तक पहुंचाने का काम शब्द और अभिनय द्वारा ही होता है।

कुसुम कुमार का 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक आम आदमी की व्यथा को व्यक्त करता है। नाटककार ने सहज तथा प्रभावी भाषा का प्रयोग करके आम आदमी की संघर्ष गाथा को दर्शकों तक पहुंचाया है।

पात्रानुकूल भाषा :

नाटक में पात्रानुकूल भाषा नाटक को सार्थक बनती है। दिल्ली ऊंचा सुनती है नाटक में कुसुम कुमार ने पात्रों की विशेषताओं के अनुरूप तथा बदलती मानसिकता के अनुसार भाषा का सही प्रयोग किया है। प्रस्तुत नाटक में आम आदमी की त्रासदी तथा स्वातंत्र्योत्तर काल का समाज जीवन को सामने रखा है।

नाटक में नायक माधोसिंह सरकारी नौकरी से रिटायर हो चुके हैं। रिटायर हो जाने के छ: महीने बाद उनकी पेंशन प्राप्ति न होने के कारण माधोसिंह की भाषा में हताश, करुण, वेदनादायी, घुटनभरा स्वर नजर आता है। वह अपनी पत्नी कमला को समझाते हुए और अपने आप से समझाते हुए कहते हैं , भीतर की खुशी का वास्ता न शहर से होता है न गाँव से, कमला, उसका वास्ता अपने हालात से होता है हालात से! मगनलाल से बात करते हुए भी माधोसिंह अपने मन की हताश स्वर में कहते हैं – मज़ाक की बात नहीं मगनलाल .... सब तरफ दलदल है .....आजकल के इस दलदल में पड़े आम आदमी के लिए सांस लेना भी मुश्किल है।

दिल्ली जैसे महानगर को छोड़कर माधोसिंह पैतृक गाँव रहने के लिए आते हैं। वहाँ की भागदौड़ से छुटकारा पाने की बात उनके संवादों से व्यक्त होती है, बरसों के बाद खुला आसमान देख रहा हूँ ..... कच्चा फर्श यह

.....परिंदों की आवाज वहा दिल्ली में .....वहाँ की जिंदगी भी कोई जिंदगी थी? छत्तीस साल अर्थ मंत्रालय की क्लर्की की और छत्तीस साल ही घर से दफ्तर और दफ्तर से घर, रोज बीस मिल की दूरी साइकल से तय करता-करता थक गया ..... आगे माधोसिंह अपनी पत्नी को समझाते हुए कहते हैं, शहर छोड़ने की बड़ी हुक है न तुम्हारे मन में? पर जब शहर में थे तुम भी तो खुश नहीं थी। चौबीसों घंटे पैसे की तंगी ..... आठों प्रहार सिक्कों की कमी शहर में और था क्या ?

माधोसिंह का सरकारी कागज पर अपने आपको मृत पाकर उन्हें बड़ा सदमा पहुंचता है। वह अपने आपको जीवित साबित करने के लिए पुराने पहचान वाले डॉक्टर के पास जाते हैं, पर वह डॉक्टर माधोसिंह जीवित होकर भी जीवित होने का सर्टिफिकेट देने के लिए तैयार नहीं होता। डॉक्टर कहता है - ''नहीं माधोसिंह, जी ऐसा सर्टिफिकेट मैंने आज तक किसी को दिया नहीं ..... मुश्किल है यह सर्टिफिकेट आपको देने से कोई बड़ा बखेड़ा मुझ पर खड़ा हो गया तो?'' माधोसिंह: नहीं डॉक्टर साहब ऐसा तो तब होगा अगर मैं आपको कोई गलत काम करने के लिए कहूँ। आपसे मैं किसी मरे हुए आदमी के जीवित होने का प्रमाण-पत्र नहीं माँग रहा हूँ। मैं एक जीता जागता इंसान आपके सामने खड़ा हूँ और आपसे यह प्रार्थना कर रहा हूँ की एक ऐसा मेडिकल सर्टिफिकेट .....(पृ. 48) पिता के रूप में माधोसिंह और बेटी नीता के साथ संवाद द्वारा पिता का प्यार निखर आता है। माधोसिंह कहते हैं, ''नहीं हीं नीति बिटिया तू एकदम ऐसा मत कर नीति बेटे तू खुद को संभाल..... तुझे किस बात की चिंता है। घर की चिंता के लिए मैं जो हूँ। अपना मन नहीं ढाते पगली ..... तुझे तो बस स्थिर रखना है ..... बाकी सब मैं देख लूँगा .....''

मगन गाँव में रहनेवाला, मन का सच्चा व्यक्ति है। माधोसिंह को वह बड़े भाई जैसा मानता है और उसका सच्चापन या सक्हेपूर्ण व्यवहार उसके भाषा द्वारा व्यक्त होता है। मगन ने अपना घर किराए पर दिया है पर वह मकान मालिक जैसा रोब नहीं जमाता। मगन माधोसिंह से कहता है, देखिए माधोसिंह भाई आपकी हमारी चिंता दो नहीं है और अगर अकेले ही आपको सारी चिंताएँ करनी हो तो दिल्ली का रास्ता अभी खुला है। बड़ी खुशी से अभी भी आप वापस जा सकते हैं। आप हमारे बड़े भाई जैसे हैं। माधोसिंह हमे भी तो अपना मानिए। इस घर में रहिए, हमें एकदम अपना समझकर रहिए। आपसे किराया कौन मांग रहा है?

वातावरण व्यंजक भाषा :

माधोसिंह और मगन की भाषा से उनके बीच के प्रेम पूर्ण संबंध स्पष्ट होते हैं। मगनलाल की भाषा उनके सरल व्यक्तित्व को दर्शाती है। साथही मगनलाल की देहाती भाषा उनके चरित्र को स्वाभाविकता प्रदान करती है। नीति का दु:ख, घुटन तथा उसके परित्यक्ता जीवन की पीड़ा उसकी भाषा के द्वारा उभरता है।

'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक में कार्यालय के कर्मचारियों की मानसिकता एवं कार्य प्रणाली पर प्रकाश डाला है। इससे परिवेश को उभारने में सहायता मिली है। कार्यालय के कर्मचारियों के संवादों में अंग्रेजी शब्द ज्यादातर प्रयुक्त हुए हैं जैसे-रिटायर, हेलो, असिस्टेंट, रिमाइंडर, डायरेक्टर, इंपोर्टेड, अंडरस्टैंड, सिचुएशन, करेस्पॉन्ड, हाउ आर यू आदि।

अंग्रेजी शब्दों के साथ साथ बोलचाल की भाषा का उपयोग किया गया है। कमला और माधव सिंह के संवाद सरल और बोलचाल की भाषा में है।

इसके कुछ उदाहरण –

कमला– जबाब आ गया?

माधोसिंह– किसका?

कमला– पेंशन कार्यालय का, और किसका?

माधोसिंह– नहीं।

ग्रामीण बोलचाल की भाषा का प्रयोग मगन और माधव सिंह की भाषा में हुआ है। जैसे मगन : इस बार भी पैनसिल का मामला तय हुआ नहीं लगता?

माधोसिंह : नहीं

मगन : अब क्या कहते हैं मुसल चंद?

माधोसिंह : कुछ नहीं.... जल्द ही अपना फैसला बताएंगे।

मगन : जल्दी कब?

माधोसिंह : समझ लो.... कभी नहीं!

मगन : उनके बाप का राज नहीं!

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में कुसुम कुमारी भाषा और संवादों के माध्यम से वातावरण निर्मिति की है। उनकी भाषा भावचित्र प्रस्तुत करनेवाली प्रभावपूर्ण और वैविद्यपूर्ण है। साथही शैली और शिल्प की दृष्टि से भी उनके नाटक सशक्त है। सरकारी अस्पताल, सरकारी कार्यालय, राजनीतिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश को व्यक्त करने वाली भाषा का प्रयोग कर सजीव वातावरण निर्मिति की है। कुसुम कुमार की भाषाशैली में व्यंग्यात्मकता, नाटकीयता, प्रतिकात्मकता, विद्यमान है। उनके नाटक की भाषाशैली से लेखिका के गहन चिंतनमनन का परिचय मिलता है। प्रसंग के अनुसार ग्रामीण बोली के शब्द, वैद्यकीय आदि क्षेत्रों से संबंधित शब्दों का चयन है। उनके नाटकों में कथ्य, चरित्र तथा परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है।

शैली : लेखक अपनी अनुभूति को प्रभावी रूप से व्यक्त करने के लिए जिस पद्धति को अपनाता है उसे शैली कहा जाता है।नाटक एकल नाट्य,फार्स,डायरी, फंटसी या स्वप्न दृश्य ,व्यंग्य, फ्लैश बैक (पूर्व दीप्ति) आदि अलग अलग तरीकों से लिखे जाते रहे हैं।

'दिली ऊंचा सुनती है' नाटक व्यंग्य नाटक है। अत: मुख्यत: यह नाटक व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया है। नाटक को मंचीय बनाने की दृष्टि से लेखिका ने खास प्रयोग किए है। खास तौर पर ध्वन्यात्मक शैली का प्रयोग नाटक को मंचीय बनाने में सहयोगी सिद्ध हुआ है।

प्रस्तुत नाटक के कमला और मगन के स्वर, निराश माधोसिंह के कानों में गूंजनेवाले नीति के संवाद,

नीति की मृत्यु पर माधोसिंह की रोने की आवाज नाटक में तनाव,प्रसंगानुकूल कुतूहल द्वंद्व निर्माण होता है।

भाषाशैली नाटक की सफलता का प्रधान कारण होता है। मनुष्य के नित्य व्यवहार भाषा के द्वारा ही चलते हैं। नाटक में भावों को व्यक्त करने का प्रमुख साधन भाषा ही है। नाटक में स्वाभाविकता लाने के लिए पात्रानुकूल भाषा का, बोलियों का प्रयोग किया जाता है। कुसुम कुमार अपने नाटकों में शैली की विविधता, भाषा की सशक्तता, रंगमचीय सूझ-बुझ का पारिचय देता है। इनके नाटकों में समसामयिक समाज का प्रतिबिंब नजर आता हैं।

4.3.2 दिल्ली ऊंचा सुनती है : उद्देश्य :

साहित्य का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य जीवन की सामाजिक समस्याओं को दूर कर उसके जीवन को सुखमय बनाना है। व्यंग्य नाटकों में नाटककार समकालीन समय ,समाज और विभिन्न परिस्थितियों में समाज और जीवन के शोषक तत्वों के विरुद्ध खड़ा होकर साहित्य सृजन करता है। साथ ही समय के मूल्य विघटन को प्रस्तुत करता है।

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में नाटक विधा अन्य गद्य विधाओं की तुलना में प्रारंभ से ही मानवीय जीवन और जगत का यथार्थ चित्रण करनेवाला एक सशक्त माध्यम बना है। विद्वानों और समीक्षकों के अनुसार हर नाटक कृति की निर्मिति के पीछे उसके रचनाकार का कोई न कोई विशिष्ट उददेश्य या खास दृष्टिकोण रहता ही है। बिना उददेश्य के कोई भी रचना नहीं होती।

इसी कारण नाटक में उद्देश्य तत्व अवश्य होता ही है। वह उद्देश्य मनोरंजन करने का हो, या मानवीय जीवन जगत के अस्तित्व का बोध हो।

नाटक के उदय काल से लेकर आधुनिक काल तक के सफर में जिस तरह नाटकों ने अपने अलग-अलग रूप धारण किए हैं, नाटक के उददेश्य तत्व में भी काफी बदलाव किया हुआ दिखाई देता है। आज के नाटककारों की धारणाएँ, कल्पनाएँ, जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण, बदलता धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक परिवेश, बदलता जीवनमूल्य, सत्ताधारियों का समाजसेवा का ढोंग, आम जनता को गुमराह करने के लिए मदद करने का दिखावा कर अपनी राजनीतिक इमेज को उभारने वाले राजनेताओं पर कडा व्यंग्य किया है। नाटक में राजनेताओं का तथा भ्रष्ट लालफीताशाही में पिसता आम आदमी का करुण चित्रण करके देश की भ्रष्ट व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। जिससे वर्तमान युगीन जीवन के बहुमुखी यथार्थ का प्रतिबिंब बनकर उपस्थित होता दिखाई देता है। आलोच्य नाटक दिल्ली ऊंचा सुनती है इस बात का सही प्रमाण है। ऐसा कहा तो गलत नहीं होगा क्योंकि इस नाटक में कुसुम कुमार ने वर्तमान युगीन सभी बाह्य स्थितियों का वर्णन किया है। नाटक में चित्रित यह वर्णन यथार्थ और वास्तविक बन पड़ा है। जो पाठकों को केवल बेचैन ही नहीं करता तो उन्हें सोचने के लिए मजबूर भी करता है। ऐसे स्थितियों में एक न एक दिन बदल करने के लिए हमे प्रयत्न करना ही चाहिए तभी मानवतावादी धर्म विकसित होकर सभी जगह लोग सुकून से रहेंगे। साथही पाठकों को विषमता के विरोध में जागृत करने का प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य रहा है। जिसकी पूर्ति प्रस्तुत व्यंग्य नाटक के माध्यम से प्रभावी ढंग से हुई है।

कुसुम कुमार ने अपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक विषम व्यवस्था के खिलाफ संताप व्यक्त किया, साथ ही उसका वास्तव चित्रण करते हैं। नेताओं की कर्तव्यहीनता, स्वार्थपरता, मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी, पीड़ा एवं घुटन, लक्ष्यहीन जीवन की विवशता आदि विषयों को उजागर किया है। उन्होंने अपने नाटकों में केवल स्त्री स्वर मुखर नहीं किया है, बल्कि अपने समय, समाज और परिवेश का सजग चित्रण किया है। इनके नाटक सामाजिक विषयों का वास्तव चित्रण करते हैं । साथही उन नाटकों का रोचक प्रस्तुतीकरण करके पाठकों को अपने से बांधे रखते हैं । नाटक में व्यंग्यात्मकता होने के बावजूद बेहद मानवीय संवेदनशीलता भी नजर आती है।

भारत स्वतंत्र हुए इतने साल हो गए पर स्वातंत्र्योत्तर काल में देश में एक ओर आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक विकास हुआ पर साथ ही भारतवासियों को भ्रष्ट राजनेताओं तथा नौकरशाही का सामना करना पड़ा। स्वातंत्र्य पूर्व काल में भारत के आम आदमी ने सुराज्य के सपने देखे थे पर उनका मोहभंग हो गया। आत्मकेंद्रित और भ्रष्ट लोगों की नीति के कारण देश की सामान्य जनता टूटने लगी। आम आदमी स्वयं को दुर्बल, असमर्थ और हताश मानने लगा और संघर्ष से बचने या भागने का प्रयास करने लगा। इसप्रकार आजादी के बाद आम आदमी विचित्र मनोवस्था से गुजरता दिखाई देता है।

'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक में कुसुम कुमार ने माधोसिंह के चरित्र के माध्यम से सेवानिवृत व्यक्ति की व्यथा चित्रित की है।माधोसिंह करीबन छत्तीस साल तक दिल्ली में नौकरी करके रिटायर हो जाते हैं । पर पेंशन के पैसों से दिल्ली जैसे महानगर में गुजारा नहीं होगा ऐसा सोचते हुए अपने पैतृक गाँव में रहने का निर्णय लेते हैं। उनकी पत्नी कमला अनिच्छा से पति का साथ देती है और परित्यक्ता बेटी नीति के साथ गाँव आकर रहने लगती है। कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक द्वारा महानगरीय जीवन और ग्रामीण जीवन का अंतर दिखाया है। गाँव में कम पैसे में गुजारा हो जाएगा। उतने पैसों में दिल्ली जैसे महानगर में तीन लोगों का जीवन चलना मुश्किल हो जाएगा। यहाँ लेखिका ने इस प्रश्न की ओर अंगुलीनिर्देश किया है।

महानगरीय समाज जीवन और ग्रामीण समाज जीवन का चित्रण किया है। माधोसिंह की पेंशन रुक जाती है पर उसका कारण समझ नहीं आता। बहुत सारी चिट्ठिया लिखने पर भी कुछ पता नहीं चलता। तो माधोसिंह स्वयं दिल्ली जाकर ऑफिस में पूछते हैं । पर पेंशन कार्यालय में उनकी शिकायत कोई नहीं सुनता। नाटक में कार्यालयों में चल रही नौकरशाही की मनमानी पर लेखिका ने प्रकाश डाला है। वहाँ माधोसिंह को पता चलता है की पेंशन कार्यलय के कागजों पर उन्हें मृत दिखाया गया है। अब खुद को जीवित दिखाने की जद्दोजहद शुरू होती है। यहाँ लेखिका ने अस्पताल में चल रहे भ्रष्टाचार को अधोरेखित किया है। बडेही प्रयत्न के बाद इन्हें उनके जीवित होने का प्रमाणपत्र पोस्ट से मिल जाता है पर अब स्पेलिंग वर्तनी की गलती से माधोसिंह की जगह माधवसिंह लिखा गया है। अब फिर वर्तनी की गलती सुधारने के लिए दिल्ली के ऑफिस में जाना पड़ता है। वहाँ ऑफिस के कर्मचारी माधोसिंह का मज़ाक उड़ाते हैं । एक टेबल से दूसरे टेबल, एक अफसर के पास से दूसरे अफसर तक फ़ाइल सिर्फ घूमती है पर माधोसिंह का काम नहीं बन पाता।वर्तनी की गलती सुधारने के लिए फिर से वही प्रक्रिया दोहराना आदि के कारण वे टूट जाते हैं और निराश होकर सिर्फ इतना

ही कह पाते हैं ''मैंने सोचा था अब सब काम हो गया है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था की अब और किसी तरह एंक्वायरी होनी बाकी है।'' हताश और निराश माधोसिंह मगन के पास आते है। मगन उन्हें अपने पुराने पहचान के गृहमंत्री के पास ले जाता है पर वहाँ भी उन्हें निराश होना पड़ता है। गृहमंत्री कहते हैं , हम यह काम जरूर कर देते! लेकिन तब जब की तुम्हारा के फ्रौड होता.....

पूर्ण रूप से निराश होकर माधोसिंह घर लौटते हैं, दुर्भाग्यवश घर में और भी हताश कर देनेवाली खबर मिलती है। उनकी बेटी नीति आत्महत्या कर लेती है। उनकी बेटी की मृत्यु के पश्चात माधोसिंह की जीने की आस खत्म हो जाती है। पेंशन के लिए की जद्दोजहद, भ्रष्ट अफसरों का व्यवहार, ऊपर से बेटी की मृत्यु का गहरा सदमा सहन न होने से माधोसिंह जल्दी ही दम तोड़ देते हैं । उनकी मृत्यु पश्चात चार महीने बाद उनके नाम मंजुर पेंशन की रजिस्ट्री आती ही। लेखिका ने यहाँ क्रूर व्यवस्था का पर्दाफाश किया है।

प्रस्तुत नाटक का प्रमुख उददेश्य यह है की पाठकों को विषमता के विरोध में जागृत कराना। राजनीतिक गिरावट, करनी और कथनी में अंतर, भ्रष्ट वैद्यकीय सेवा, देश की भ्रष्ट स्वार्थान्धता व्यवस्था के प्रति जागरूक करना नाटक का उददेश्य रहा है। कुसुम कुमार ने सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक विषयों को सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया है। महिला नाटककारों में कुसुम कुमार का योगदान सराहनीय रहा है।

4.3.3 नाटक में अभिनेयता / मंचीयता :

नाटक में अभिनेयता, मंचीयता, दृश्यबंध, ध्वनिप्रभाव, प्रकाश योजना और अभिनय इसका बड़ा महत्व होता है। 'दिल्ली ऊंचा सुनती है नाटक में इन सब बातों पर विशेष ध्यान दिया है। दृश्य बंध के अंतर्गत एक दृश्य समाप्त होते ही दूसरे दृश्य पर प्रकाश योजना का उपयोग किया है। इससे सरल दृश्य बंध और कथ्यानुकूल अभिनय के कारण नाटक सफल हुआ है ।

प्रस्तुत नाटक में ध्वनि एवं प्रकाश योजना का प्रयोग नाटककार ने बड़ी सफलता से किया है । इसमें नीति की करूण कथा मगन को सुनाते वक्त कमला और मगन के बीच की आवाज, सरकारी अस्पताल में विवश हो कर बैठते समय माधोसिंह का हताश स्वर, नीति की आत्महत्या के बाद उसकी माँ कमला की रोने की आवाज, इन प्रसंगों में नाटककार ने ध्वनि योजना का उपयोग किया है। नाटक में प्रकाश योजना का भी सही उपयोग करके प्रसंगों को परिणामकारक बनाया है । नाटक में माधोसिंह और कमला के बीच हो रहे वार्तालाप को दिखाते समय नाटककार ने प्रकाश योजना का सही उपयोग किया है। कहीं पर धीमा तथा मंद प्रकाश का उपयोग किया है, जिससे माधोसिंह की मनोदशा दर्शकों तक पहुँच जाती है। कमला और माधोसिंह की गहरी चिंता को दिखाने के लिए घना अंधेरा किया है, इससे उन दोनों की चिंता दर्शकों तक पहुँचाने में नाटक सफल हुआ है। नाटक गहरी संवेदना उत्पन्न करने में समर्थ रहा है । इन सबका परिणाम मानसिक तनाओं से गुजरते हुए माधोसिंह के प्रति दर्शकों को सहानुभूति निर्माण होती है।

नाटक की सबसे बड़ी सफलता पात्रों के अभिनय पर निर्भर होती है। अभिनय से ही नाटककार की अभिव्यक्ति तथा उददेश्य सफल हो सकता है। प्रस्तुत नाटक में अभिनय का विचार करते हुए नाटककार ने सभी प्रकार की सूचना तथा विवरण प्रस्तुत किया है, इससे नाटक का कथानक सरलता से संप्रेषित होता है।

4.3.4 दिल्ली ऊंचा सुनती है : चित्रित समस्याएँ :

प्रस्तुत नाटक व्यंग्य नाटक है। नाटक में नौकरशाही, लालफीताशाही पर व्यंग्य किया है। भारत की राजधानी दिल्ली है। 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' की लेखिका ने माधोसिंह के माध्यम से आज की कार्यालयीन व्यवस्था के शिकार बने आम आदमी की व्यथा को चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटक में सामान्य आदमी का जीवन संघर्ष है तथा उसके सामने आने वाली समस्याओं को उजागर किया है।

1. भ्रष्ट नौकरशाही की समस्या :

'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक में नाटककार कुसुम कुमार ने सरकारी कार्यालय में भ्रष्ट नौकरशाही से त्रस्त आम आदमी के करुण चित्र को दर्शाया है। नाटक का प्रमुख पात्र माधोसिंह वित्त मंत्रालय दिल्ली से छत्तीस साल की सेवा करके सेवानिवृत्त हुए हैं। पर उन्हें सेवानिवृति के बाद मिलनेवाली पेंशन अचानक बंद हो जाती है। पेंशन के लिए माधोसिंह को हर जगह भटकना पड़ता है। पेंशन कार्यलय में जाने के बाद उन्हें पता चलता है कि सरकारी दफ्तर के रेकॉर्ड के अनुसार छ: महीने पहले ही उनकी मृत्यु हो चुकी है। माधोसिंह अब खुद को जीवित होने का प्रमाणपत्र जुटाने में लग जाते हैं। इन सारे प्रयासों में उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। खुद को जीवित घोषित करने के लिए माधोसिंह को सरकारी कार्यालय, अस्पताल, डॉक्टर, मंत्री आदि के पास बार बार चक्कर लगाने पड़ते हैं। फिर भी उन्हें स्वयं का जीवित होने का प्रमाणपत्र नहीं मिलता। पेंशन के इस जद्दोजहद का परिणाम माधोसिंह पर हो जाता है और वे मानसिक तनाव में दम तोड़ते हैं। माधोसिंह के मृत्यु पश्चात डाकिया उनकी पेंशन मंजुरी का पत्र लाता है। इसप्रकार नाटककार कुसुम कुमार ने सरकारी कार्यालय से लेकर मंत्रियों तक की भ्रष्टाचार पर टिकी हुई व्यवस्था का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है ।

2. आर्थिक समस्या :

भारत स्वतंत्र होकर सत्तर साल गुजर गए फिर भी आम आदमी दिन-ब-दिन आर्थिक समस्या से ग्रस्त बनता जा रहा है। 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक का माधोसिंह भारत सरकार के वित्त मंत्रालय से निवृत्त हुए हैं। जीवन के 36 साल क्लर्क की नौकरी करते हुए बिताए हैं। उन्होंने अपनी नौकरी बड़ी प्रामाणिकता से की है। वेतन अतिरिक्त ऊपरी कमाई के बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं। निवृत्ति के बाद महानगर में पेंशन पर गुजारा नहीं होगा ऐसा सोचकर वह अपने पैतृक गांव आकर अपनी शेष जिंदगी बिताने का निर्णय लेते हैं। माधव सिंह गांव में अपने एक परिचित मगनलाल नामक व्यक्ति का घर किराए पर लेते हैं।

माधोसिंह को सेवानिवृत्ति के 6 महीने बाद पेंशन की अदायगी बंद हो जाती है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति अधिक गंभीर बनने लगती है । घर में उनकी पत्नी, बेटी और वे कुल तीन सदस्य हैं फिर भी उनका खर्च चलाना मुश्किल हो गया है। उनके घर का मालिक मगनलाल माधोसिंह की हालत देखकर उन्हें कई बार पैसे की मदद करता है, फिर भी दिन-ब-दिन उनकी आर्थिक स्थिति अधिक गंभीर बनने लगती है। कभी-कभी घर में चूल्हा जलाना भी मुश्किल हो गया है। इस प्रकार आर्थिक समस्या से पीड़ित माधोसिंह का चित्रण किया है।

3. भ्रष्ट राज्य व्यवस्था से पीड़ित आम जनता :

भ्रष्ट **राज्य** व्यवस्था के कारण देश का आम आदमी किस प्रकार व्यथित होता है। इसका चित्रण प्रस्तुत नाटक में किया है माधोसिंह पेंशन के कारण बहुत चिंतित है, यह देख कर उनका मित्र जो उनका मकान मालिक भी है उन्हें अपने एक परिचित गृह मंत्री के पास ले जाता है पर वहां गृहमंत्री भी काम करने में असफलता दिखाता है। मेरी पार्टी पार्लिमेंट में नहीं है, इसीलिए मैं आपका काम नहीं कर सकता। चाहे तो मैं पार्लमेंट के मंत्री के पास एक चिट्ठी दे सकता हूं। आपके काम में सच्चाई है, इसलिए मैं कुछ नहीं कर सकता अगर आपका केस फ्रॉड होता तो मैं जरूर कुछ ना कुछ कर देता, पर आपके केस में सब सत्य लिखा है। सत्य की अपनी रफ्तार होती है उसी रफ्तार से काम होगा। इतना ही नहीं, माधोसिंह के चिट्ठी के बदले वहां मगन से अपनी मालिश करवाना चाहता है। मगन को मंत्री की यह सब बातें सुनकर बहुत घुस्सा आता है पर वह मंत्री होने के कारण कुछ नहीं बोल सकता। आज देश की भ्रष्ट राज्य व्यवस्था में असत्य को सत्य करार देना बड़ा आसान हुआ है, पर सत्य को सत्य बनाना बड़ा ही कठिन हो गया है। माधोसिंह जैसे बहुत सारे आम आदमी की यही विडंबना है। वह राज्य व्यवस्था से पीड़ित होकर भी कुछ नहीं कर सकता।

4. निवृत्ति वेतन विषयक लापरवाही :

माधोसिंह कुछ महीने पहले रिटायर हो गए हैं। करीबन 36 साल नौकरी करके वह रिटायर हो चुके हैं । पर अपनी पेंशन में महानगर में रहकर घर के तीन लोगों का पेट पालना मुश्किल हो जाएगा, यह सोच कर वे अपने पैतृक गांव में आकर जीवन बिताने का निश्चय करते हैं ।

माधोसिंह अर्थ मंत्रालय में क्लर्क की नौकरी के लिए घर से दफ्तर और दफ्तर से घर रोज करीबन बीस मील की दूरी साइकिल से तय करते थे।वे सोचते हैं निवृत्ति के बाद कम से कम वह थकान तो कम होगी। जो पेंशन मिलेगी, उसी से गुजारा होगा। पत्नी, परित्यक्ता बेटी और खुद का जीवनयापन हो जाएगा ऐसा सोचते हैं। यहां गांव में महानगर जैसी रौनक नहीं मिलेगी पर घड़ी से बंधी जिंदगी तो नहीं है, ऐसा सोच कर माधोसिंह राहत महसूस करते हैं। माधव सिंह को सवा दो सौ पेंशन मिलती है। उन्होंने सोच रखा था कि इससे ज्यादा धन की आवश्यकता नहीं है। इस संदर्भ में माधोसिंह मगन से कहते हैं, ''खाना-पीना और पचास रुपए मकान का किराया... फिर भी यहां तो सब चल ही जाएगा। शहर में इतने पैसों से घर चलाना मुश्किल था.. यहां देहात है, यहां क्या है?... मैं तो खुश हूं मगन पर यह खुशी माधोसिंह को ज्यादा दिन नहीं मिल सकी, उनको पेंशन मिलना ही बंद हो गया।

5. भ्रष्ट वैद्यकीय सेवा :

माधोसिंह सेवानिवृत्त होने के बाद पेंशन मिलना बंद हो जाती है। पेंशन के ऑफिस में ऑफिस के रिकॉर्ड में उन्हें मृत घोषित किया है। यदि पेंशन जारी होनी है, तो उन्हें अपने जीवित होने का प्रमाण पत्र ले आना होगा। माधोसिंह इस बात को निपटाने के लिए प्रमाण पत्र बनवाने में लग जाते हैं। वह अपने एक परिचित डॉक्टर के पास चले जाते हैं। पूरा मामला सुनने पर परिचित डॉक्टर भी उन्हें इस प्रकार का प्रमाण पत्र देने में असमर्थता व्यक्त करता है। वह डॉक्टर सरकारी झमेले में पढ़ना नहीं चाहता। इसलिए वह माधोसिंह को टाल देता है।

परिचित डॉक्टर के पास चक्कर काटने पर डॉक्टर उन्हें सरकारी अस्पताल भेज देता है। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर से प्रमाण पत्र बनवाने की सलाह देता है।

माधोसिंह अब सरकारी अस्पताल जाते हैं। वहां लंबी कतार लगी हुई है। अस्पताल में डॉक्टर पहले से ही देर से आते हैं और जब माधोसिंह का नंबर आता है तब लंच टाइम का बहाना करके चले जाते हैं। दूसरे दिन सरकारी अस्पताल में लाइन में ही खड़े होकर दिन बीत जाता है। एक कर्मचारी तो उन्हें सिर्फ एप्लीकेशन लिखने के लिए कहता है। माधोसिंह कतार में ही खड़े रहते हैं। वहां की लेडी डॉक्टर पहचान वाले मरीज को पहला नंबर दिया जाता है जो लास्ट नंबर पर खड़ा था। बहुत दिनों तक अस्पताल के चक्कर काटते हुए, लंबी कतारों में खड़े होने के बाद उनकी मुलाकात डॉक्टर से हो जाती है। पर यहां प्रमाण पत्र हाथ में नहीं मिलता। पोस्ट से प्रमाणपत्र मिल जाएगा ऐसा उन्हें कहा जाता है। बड़ी इंतजार के बाद पोस्ट से प्रमाण पत्र प्राप्त होता है। प्रमाण पत्र पर माधोसिंह की जगह माधव सिंह इस प्रकार गलत नाम लिखा गया है। अब फिर से नाम में सुधार के लिए न जाने कितने दिल्ली के चक्कर लगाने पड़ेंगे? ऐसा सोच कर वह फिर निराश हो जाते हैं। पर उनका दोस्त मगन उन्हें धीरज देता है और अर्जी लिख कर स्वयं दिल्ली जाने के लिए तैयार हो जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में आम आदमी को वैद्यकीय सेवा लेते वक्त पीसना पड़ता है, अस्पताल के चक्कर काटते काटते वह स्वयं बीमार पड़ जाते हैं।

सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की लापरवाही, वक्त पर काम पर न आना , फोन पर पर्सनल और बेकार बातें करते रहने की बात को लेखिका ने उठाया है।

6. परित्यक्ता नारी की समस्या :

भारतीय समाज में विवाह संस्था को बड़ा पवित्र माना जाता है। विवाह के कारण पति पत्नी जीवन भर साथ निभाने का संकल्प करते हैं । पर कभी-कभी पति-पत्नी के संबंधों में तनाव निर्माण होता है। दोनों अलग हो जाते हैं। पर शादीशुदा स्त्री अगर मायके में वापस आ गई तो उसका जीना दुश्वार हो जाता है। पुरुषसत्ताक समाज व्यवस्था में पुरुष एक औरत को छोड़कर दूसरी औरत से शादी करता है। परंतु आज भी हमारे समाज में स्त्री की दूसरी शादी करना असंभव-सा है। पति द्वारा छोड़ी हुई औरत को जीवन भर दुख उठाना पड़ता है। दर-दर की ठोकरें खा कर उसे जीना पड़ता है। पति द्वारा त्यागी हुई नारी को परित्यक्ता कहा जाता है।परित्यक्ता नारी की समस्याएं प्रस्तुत नाटक में नीति के द्वारा चित्रित की है। नीति सुंदर है किंतु परित्यक्ता होने के कारण वह अधिकांश समय व अस्वस्थ और उदास रहती है। नीति के माता-पिता माधोसिंह और कमला अपनी बेटी से बहुत प्यार करते हैं।परित्यक्ता बेटी नीति की देखभाल न करने तथा आर्थिक दुरावस्था माधोसिंह को हमेशा कचोटती रहती है। उसका दिल बहलाने के लिए पिता माधोसिंह सुबह उसके साथ टहलने के लिए जाते हैं। उसे खुश रखने के लिए, उसकी उदासी दूर करने के लिए कुछ ना कुछ बातें करते रहते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक ना होने पर भी नीति की दवा दारू पर खर्च करते हैं।परित्यक्ता नीति अपनी गृहस्थी उजड़ जाने के कारण मानसिक रूप से दुखी है । अपने पिता की तकलीफ देखकर वह सोचती है मैं अपने माता-पिता पर बोझ हूं, पिता की परेशानी और अपने स्वयं के दर्द से छुटकारा पाने के लिए नीति आत्महत्या करती है। लेखिका ने नीति के

उदाहरण से परित्यक्ता नारियां अपने जीवन में किस प्रकार उदास रहती है और कभी-कभी अंत में प्राण त्याग कर देती है। इस पर प्रकाश डाला है।

कुसुम कुमार द्वारा रचित 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक समस्या प्रधान व्यंग्य नाटक है। भारतीय स्वतन्त्रता के बाद देश में एक ओर आर्थिक,सामाजिक, औद्योगिक विकास के द्वार खुले हैं तो दूसरी ओर देश के सामान्य व्यक्ति का जीवन आजाद भारत के भ्रष्ट राजनेताओं, उच्चपदस्थ अधिकारी, स्वार्थांध नीतियों से प्रभावित हो गया है। जिससे आम आदमी का जीवन दूभर होने लगा है।

4.4 स्वयं अध्ययन के प्रश्न :

1. 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' ..... विधा के अंतर्गत आता है।

   अ) कहानी ब) नाटक क) उपन्यास ड) निबंध

2. 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक ..... नाटक है।

   अ) व्यंग ब) नुक्कड़ नाटक क) हास्य नाटक ड) सामाजिक नाटक

3. प्रस्तुत नाटक के दोनों अंको में प्रत्येकी ..... दृश्य है।

   अ) दो ब) चार क) पाँच ड) छः

4. ..... नाटक के माध्यम से लेखिका ने देश में व्याप्त नौकरशाही और भ्रष्टचार को उजागर किया है।

   अ) प्रश्नकाल ब) सुनो शेफाली क) रावनलीला ड) दिल्ली ऊंचा सुनती है

5. कुसुम कुमार दिल्ली के ..... में अध्यापक के रूप में कुछ सालों तक कार्यरत रही।

   अ) विमेन्स कॉलेज ब) महिला महाविद्यालय

   क) एस. एन. डी. टी. कॉलेज ड) नेहरू महाविद्यालय

6. प्रस्तुत नाटक के प्रमुख पात्र ..... है।

   अ) रामसिंह ब) लखनलाल क) माधोसिंह ड) लालसिंह

7. माधोसिंह ..... साल वित्त मंत्रालय में क्लर्क की नौकरी करने के बाद निवृत हुए है।

   अ) छत्तीस ब) चौतीस क) तीस ड) बीस

8. माधोसिंह के परिवार में कुल ..... सदस्य है ।

   अ) 3 ब) 4 क) 2 ड) 5

9 माधोसिंह की पत्नी ..... को दिल्ली छोड़ गाँव आकार बसना पसंद नहीं आया है।

   अ) कमला ब) विमला क) सरस्वती ड) राधा

10. माधोसिंह को पेंशन प्राप्ति के लिए अपने ..... होने का प्रमाणपत्र ले आने का आदेश दिया जाता है।

अ) मृत ब) अपाहिज क) स्वस्थ ड) जिंदा

11. 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक ..... लिखित है।

अ) मन्नू भण्डारी ब) उषा प्रियवंदा क) कुसुम कुमार ड) ममता कालिया

12. 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक सन ..... में प्रकाशित हुआ।

अ) 1978 ब) 1986 क) 1984 ड) 1982

13. प्रस्तुत नाटक ..... अंकोवाला है।

अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार

14. कुसुम कुमार हिन्दी साहित्य की चर्चित ..... है।

अ) उपन्यासकर ब) कवयित्रि क) नाटककार ड) कहानीकार

15. कुसुम कुमार ने ..... विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

अ) दिल्ली ब) बनारस क) पंजाब ड) गोवा

16. ..... उपन्यास के लिए लेखिका को साहित्यिक कृति पुरस्कार सेसम्मानित किया गया।

अ) हीरामन हाईस्कूल ब) रावण लीला क) परदा बाड़ी ड) पूर्वी द्वार

17. माधोसिंह भारत सरकार के ..... मैं लिपिक पद पर कार्यरत थे।

अ) विदेश ब) वित्त क) सांस्कृतिक ड) कृषि

18. माधोसिंह की बेटी ..... परित्यक्ता है।

अ) मीना ब) नीति क) निलू ड) मिरा

19. माधोसिंह गाँव आकर अपने परिचित .....का घर किराए पर लेते हैं।

अ) मगनलाल ब) चमनलाल क) कृष्ण ड) हरि

20. नीति की अस्वस्तथा ..... है।

अ) वैचारिक ब) मनोवैज्ञानिक क) सामाजिक ड) आर्थिक

21. माधोसिंह को पीछले ..... महीनों से पेंशन नहीं मिली है।

अ) चार ब) पाँच क) छः ड) सात

22. माधोसिंह मगनलाल को प्यार से ..... पुकारते हैं।

अ) गगना ब) राणा क) पप्पू ड) मगना

23. पे अँड अकाउंट कार्यालय में माधोसिंह की मुलाक़ात नीति की दोस्त ..... से होती है।

अ) कमला ब) अलका क) विमला ड) किरण

24. माधोसिंह को ..... इस स्पेलिंग मिस्टेक के साथ उनके जिंदाहोने का प्रमाणपत्र मिल जाता है।

अ) माधवसिंह ब) करणसिंह क) रामसिंह ड) जयसिंह

25. मगनलाल माधोसिंह का काम लेकर गृहमंत्री ..... के समक्ष उपस्थित होते हैं।

अ) कुलजीवन लाल ब) कुलसेंन लाल क) मृत्युंजय लाल ड) जगजीवन लाल

26. पिता के असफल संघर्ष से निराश होकर ..... आत्महत्या कर लेती है।

अ) कमला ब)अलका क) नीति ड) सुनिधि

27. माधोसिंह की मृत्यु के ..... महीने बाद पे अँड अकाउंट कार्यालय से रैजिस्ट्री आ जाती है।

अ) चार ब) पाँच क) छ: ड) तीन

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1. नहर – कृत्रिम जल मार्ग
2. बुलबुलेदार – गुब्बारे जैसा
3. माहौल – वातावरण
4. रौनक – तेज
5. पैनसिल – निवृति वेतन
6. ओहदे – प्रभामंडल
7. बहादुर – साहसी
8. किराया – भाड़ा (मकान का किराया)
9. दवा-दारू – चिकित्सा
10. कुँवारे, मलंग – मनमौजी
11. निर्जला एकादशी- एक व्रत
12. तलाक – नियम के अनुसार पति-पत्नी संबंध विच्छेद

13. हिमायत – मदद, पक्षपात
14. अफसोस – अपनी गलती का एहसास होने पर होनेवाला दु:ख
15. मेहरबानी – दयालुता, नेकी,
16. तकलीफ – व्याकुलता,कष्ट
17. दफ्तर – कार्यालय
18. पर्चिया – कागज का टुकड़ा जिस पर कुछ लिखा हो
19. दस्तखत – हस्ताक्षर
20. हर्ष विभोर – आनंदी होना
21. उंडेलना – खोलना, तबाह करना
22. टकसाल – वह स्थान जहाँ सिक्के बनाये जाते हैं
23. औधड़ – राक्षस, दानव
24. चुस्ती – चपलता , चुस्ती
25. जैनुइन – वास्तविक
26. रफ्तार – चलने की क्रिया
27. औंधे पड़ना – संकट में पड़ना
28. गिरस्थि – गृहस्थी
29. दस्तक – निकासी का परवाना, हाथ से किया हुआ हलका आघात
30. इनफस्टिगेशन – जाँच-पड़ताल
31. रैजिस्ट्री – लेखागार, लेखशाला
32. लिफाफा – आवरण, लपेटन, चादर

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1. ब) नाटक
2. अ) सामाजिक
3. क) पाँच
4. ड) दिल्ली ऊंचा सुनती है
5. ब) महिला महाविद्यालय
6. क) माधोसिंह
15. क) पंजाब
16. अ) हीरामन हाईस्कूल
17. ब) वित्त
18. ब) नीति
19. अ) मगनलाल
20. ब) मनोवैज्ञानिक

7. अ) छत्तीस
8. अ) 3
9. अ) कमला
10. ड) जिंदा
11. क) कुसुम कुमार
12. ड) 1982
13. ब) दो
14. क) नाटककार
21. क) छः
22. ड) मगना
23. ब) अलका
24. अ) माधवसिंह
25. अ) कुलजीवन लाल
26. क) नीति
27. अ) चार

3.7 सारांश :

1. 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक के द्वारा शासन के विभिन्न विभागों में चल रहे भ्रष्टाचार पर प्रकाश डाला है।

2. देश में चल रहे राजनीतिक गिरावट पर इसमें प्रकाश डालते हुये खुलकर चर्चा की है।

3. आम आदमी याने आम जनता को बेहतर जीवन जीने की इच्छा का समर्थन किया गया है।

4. लालफीताशाही की समस्या ने देश का भयंकर नुकसान किया है, इस बात को समझाने का प्रयास किया गया है।

5. भ्रष्ट नेताओं तथा अफसरों के करनी और कथनी में अंतर होता है, इसे इसमें अलग-अलग उदाहरणों द्वारा प्रमाणित किया गया है।

6. भ्रष्ट वैद्यकीय सेवा के कारण आम आदमी किस प्रकार पिसता है, इस प्रश्न की गंभीरता की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है।

7. पाठकों को विषमता के विरोध में जागृत करने का प्रयास बड़ी सशक्तता के साथ किया है।

8. परित्यक्ता नारी की समस्या के कारण होनेवाले पारिवारिक तनाव पर प्रकाश डाला है।

9. आत्मकेंद्रित और स्वार्थान्ध व्यवस्था में आम आदमी की घुटन को व्यक्त कराते हुये बेहतर जीवन की आंस जैसे विचारों का प्रचार एवं प्रसार इस कृति के माध्यम से किया गया है।

3.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1) 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' - भाषाशैली

2) 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' - उद्धेश्य

3) 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' - अभिनेयता

4) 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' – समस्याएँ

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक में चित्रित समस्याओं कों सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

इ) ससंदर्भ के प्रश्न :

1) जीता–जागता आपके सामने खड़ा हूँ, आप अपने रेकॉर्ड में हुई गलती सुधार लीजिए। (पृ. 44)

2) नहीं, एक बात नहीं समझ सका डॉक्टर साहेब..... पिछले बीस साल से आप मुझे जानते हैं और संकट के समय एक सच्चा सर्टिफिकेट बनाकर देने से आप सफा इंकार कर रहे हैं। (पृ. 49)

3) एक बार मरकर फिर से जिंदा होना इतना आसान नहीं होता.... और फिर इस जमाने में सिर्फ सांस लेने का मतलब जिंदा रहना थोड़े है! पैसा चाहिए, पैसा ! पैसा आदमी को मारता है ! पैसा जिलाता है। (पृ.53)

4) चिंता मत कीजिए माधो भाई..... आप के नाम के इस्पेलिंग ही तो गलत हैं इस सनद में! ..... ठीक हो जाएंगे ..... एक बार दिल्ली ही तो फिर जाना पड़ेगा ..... कोई हरज नहीं ..... इस बार मैं दिल्ली जाऊंगा..... (पृ. 70)

5) वाह! यही पर तो हमें आदमी की असली एनक्वायरी करनी पड़ती है। जेंटलमैन!.....पैसों का मामला है! .....उपर से नीचे तक सब तरह की क्लियरेंस यही तो जरूरी है? दिस इज पे एंड एकाऊंटस ऑफिस! यह कोई किसिके घर की टकसाल तो नहीं कि जो आए,अपना हक्क बताए, पैसा ले और चलता बने! समझे न आप? (पृ. 77)

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) भ्रष्टाचार की समस्या पर खुली चर्चा कीजिए।

2) भ्रष्टाचार को नष्ट करने के लिए पथ नाटकों का आयोजन करने की कोशिश करें।

3) अपने–अपने क्षेत्र में भ्रष्टाचार मुक्त मूल्यों का प्रचार एवं प्रसार कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) बकरी (नाटक) – सर्वेश्वरदास सक्सेना

2) कल दिल्ली की बारी है (नाटक) – श्रवणकुमार गोस्वामी

3) भोलाराम का जीव (कहानी) – हरीशंकर परसाई

●●●

इकाई 1

चंद्रकांता का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं उपन्यासकार चंद्रकांता का सामान्य परिचय

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय – विवरण

1.3.1 चंद्रकांता का जीवन परिचय

1.3.2 चंद्रकांता का व्यक्तित्व

1.3.3 चंद्रकांता का कृतित्व

1.3.4 उपन्यासकार चंद्रकांता

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

1.6 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने पर आप,

1) लेखिका चंद्रकांता के जीवन एवं व्यक्तित्व से परिचित हो जाएँगे।

2) चंद्रकांता के कृतित्व से परिचित होंगें।

3) स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में विशिष्ट पहचान बनानेवाली चंद्रकांता से परिचित होंगे।

4) चंद्रकांता का साहित्य समकालीन संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है इस बात से परिचित हो जाएँगे।।

5) उपन्यासकार चंद्रकांता से परिचित हो जाएँगे।

1.2 प्रस्तावना :

हिंदी कथा साहित्य में उत्तरशती तक आते आते अनेक लेखिकाओं का योगदान प्राप्त होता है। नारी विमर्श की दृष्टि से अनेक लेखिकाओं के नाम उल्लेखनीय रहें है, जैसे – मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, ममता कालिया आदि। 20 वीं सदी और 21 वीं सदी के बीच का संक्रमणकाल उत्तरशती के नाम से पहचाना जाता है। इसमें अनेक साहित्यिक विमर्श उभरकर आए – स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, बाल एवं वृद्ध विमर्श आदि। बदलते हालात एवं परिस्थितिनुरुप परिवर्तित समाज का चित्रण उपन्यास में होने लगा। उपन्यास के विस्तृत फलक पर इन जैसे विविध विमर्शों को नए कथानक के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। इस दृष्टि से नारी की स्थिति एवं गति को लेकर लिखे गए उपन्यासों में चंद्रकांता का योगदान उल्लेखनीय है। इसीतरह कश्मीर के रक्तरंजित आतंकवाद का चित्रण उपन्यासों द्वारा चंद्रकांता ने किया है। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य में चंद्रकांता का कथा साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।

1.3 विषय विवरण :

1.3.1 चंद्रकांता का जीवन परिचय

चंद्रकांता का जन्म ३ सितंबर १९३८ को श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ। उनका परिवार कश्मिरी पंडित है। उनके पिता का नाम प्रोफेसर रामचंद्र पंडित एवं माता का नाम संपत्ति है। जिसे भूस्वर्ग कहा जाता है ऐसी सुंदर वादी कश्मीर में जन्म होने के कारण वे स्वयं को भाग्यशाली मानती है। कश्मीर की हर चीज पर स्नेह एवं गर्व वह महसूस करती है। कश्मीर के पर्वतों, पानियों, चीड, देवदार और झीलों पर झुके वृक्षों की कतारों को वह अपने रगों रेशों में उतरते महसूस करती है। धरती के इस नंदनवन में जन्म लेने के लिए वह गर्व महसूस करती है।

चंद्रकांता का परिवार सनातन हिंदू है। पिताजी रामचंद्र पंडित आदर्श अध्यापक थे। समाज सुधारक एवं जम्मू कश्मीर के जाने माने विद्वान थे। खुद उनके तीन विवाह हुए थे। तीनों पत्नियाँ बीच में ही चल बसीं। घर के इन विपरित परिस्थितीयों के कारण उन्होंने अपनी बेटियों के विवाह बचपन में ही कर दिए। फिर भी ससुराल वालों को अपनी बेटियों को विवाह पश्चात् भी पढाने की सूचना देते हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण वातावरण के कश्मीर की सुंदर भूमि ने चंद्रकांता का बाल्यकाल खिलदंडी बना था। खुली वादियों में भटकना उन्हें अच्छा लगता था। परंतु बचपन के उत्तरार्ध में ही चंद्रकांता को काश्मीर से बिछडना पडा।

चंद्रकांता की माँ संपत्ति आदर्श गृहिणी थी। चंद्रकांता का अपनी माँ से बहुत लवाव था। खिलदंडी एवं कलंदर बेटी (चंद्रकांता) की उन्हें हमेशा चिंता लगी रहती थी। छः सात वर्ष की आयु में ही चंद्रकांता को मातृवियोग सहना पडा। अपनी माँ की मृत्यु के दुःख से चंद्रकांता अंतर्मुख हो गई। भीतर से अपने आप को अकेला महसूस करने लगी।

चंद्रकांता के दो भाई में से बडे भाई श्री. सोमनाथ पंडित आय. ए. एस. अधिकारी थे। छोटे भाई श्री. त्रिलोकीनाथ पंडित इंजिनियर हैं। चंद्रकांता की छोटी बहन शादी के बाद सिर्फ सत्रह वर्ष की आयु में ही चल बसी। उन्हें मार दिया गया या ॲक्सिडेंट में उनकी मृत्यु हुई यह राज ही रहा। परंतु यह सदमा उनके पिता रामचंद्र पंडित सह नहीं पाये। वे फिर उभर नहीं पायें।

चंद्रकांता के पिता प्रोफेसर रामचंद्र पंडितजी ने अंग्रेजी साहित्य और गणित इन दो विषयों में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की थी। इसी वजह से शिक्षा का महत्त्व जानकर उन्होंने अपने संतानों में भी इसका बीज बोया था। अपने निजी ग्रंथालय में उन्होंने देश-विदेश के अनेक ग्रंथों का संकलन किया था। धन-दौलत की बजाय अपने संतानों को यह बहुमूल्य देन दी थी। अपनी संतानों पर उन्होंने शिक्षा के सुसंस्कार किए थे।

चंद्रकांता का विवाह डॉ. विशिन के साथ हुआ। डॉ. विशिन ने जर्मनी से फार्मसी में डाक्टरेट प्राप्त की थी। चंद्रकांता जी को दो संतानें हैं - पुत्री का नाम राका कौल जो अध्यापन के क्षेत्र में है और पुत्र संजय विदेश में सॉफ्टवेअर इंजिनिअर है।

शिक्षा-दीक्षा :

अंग्रेजी माध्यम से चंद्रकांता की शिक्षा हुई है। उन्होंने बी. ए. बी. एड्. तक शिक्षा प्राप्त की है। पिलानी में हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर पदवी प्राप्त की। उनकी अधिकतर शिक्षा शादी के पश्चात् पूर्ण हुई। चंद्रकांता के पिताजी ने विवाह के पूर्व चंद्रकांता को आगे की शिक्षा प्राप्त हो जाए इसकी पूर्वकल्पना उनके ससुरालवालों को दी थी। फलस्वरूप चंद्रकांता ने भी अपनी शिक्षा जारी रखी। अपनी सास की मर्जी भी रखीं और अपनी संकल्प शक्ति के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त की। पिलानी में उन्होंने दो वर्षों तक अध्यापन भी किया। ससुर अध्यापक थे, जिन्होंने उन्हें प्रेरणा दी। पति डॉ. विशिन ने भी साथ दिया। वे स्कूल, कॉलेज में शिक्षा के साथ साथ कविता, कहानियाँ आदि साहित्य भी लिखती रहीं।

वैवाहिक जीवन :

चंद्रकांता का विवाह चौंदह साल में ही हो गया था। विवाह का अर्थ भी वह नहीं समझती थी। मासूम

चंद्रकांता विवाह के कठोर बंधनों में बँधने से अपना खिलदंडी स्वभाव खो बैठी। विवाह जो नए कपडे, गहनें-जेवर पहनने का अवसर समझती थी उसकी पाबंदी एवं बंधनों में परिवर्तित हो गया।

पति डॉ. विशिन पढाई के सिलसिले में बाहर रहते थे। चार वर्ष बाद दोनों की मुलाकात हुई। जर्मनी में फार्मसी में डॉक्टरेट करने के पश्चात। डॉ. विशिन पहले पिलानी बिटस् में पढाते रहें, फिर आई. डी. पी. एल. में सेवारत रहें। डॉ. विशिन ने चंद्रकांता की पढाई को रोक नहीं लगायीं। उन्होंने चंद्रकांता का सहयोग दिया। पारिवारिक जीवन में उन्हें एक बेटा और बेटी है। बेटी राका कौल दिल्ली में बायोलाजी की अध्यापिका और संजय विशिन (बेटा) अमरिका में सॉफ्टवेअर इंजिनियर है और वहीं बस गया है। बेटे की यादें और शिकायतें उनके साहित्य में कहीं-कहीं अभिव्यक्त हुई हैं।

व्यवसाय :

चंद्रकांता ने पिलानी में दो वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। पति विशिन के साथ हैदराबाद में थोडे दिन नौकरी की। बाद में नौकरी त्यागकर पूरी तरह से लेखन कार्य में जूट गई।

साहित्य सर्जना की प्रेरणा :

चंद्रकांता को साहित्य सृजन की प्रेरणा अपने पिता पंडित रामचंद्रजी की ओर से मानो विरासत में मिली थी। स्कूल-कॉलेज की पत्रिकाओं के लिए लिखती थी। एम. ए. करते समय पिलानी कॉलेज के प्राचार्य कन्हैयालाल सहल ने उनका हौसला बढाया। उस समय लिखी उनकी कविता पुरस्कृत हुई थी। प्राचार्य साहब ने उन्हें हमेशा प्रेरित किया।

'गर्म बहसों में लिपटा एक ठंडा शहर' इस कश्मीर पर लिखे फीचर पर अमृतराय ने बधाई दी थी। कहानी संग्रह 'सलाखों के पीछे' पर भूमिका लिखते हुए उन्होंने कहा, ''नए कथाकारों में चंद्रकांता एक उभरता हस्ताक्षर है जिसने अपनी गहरी संवेदना से पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है।'' उपन्यास 'अंतिम साक्ष्य' पर जैनेंद्रजी ने कहा था कि, ''मैंने कई वर्षो से 'अंतिम साक्ष्य' जैसा उपन्यास नहीं पढा था।'' इस प्रकार उनका लेखन महान साहित्यकारों द्वारा परखा एवं नवाजा गया है। पाठकों के द्वारा भी उनके साहित्य पर खत मिलते रहें हैं जो प्रेरक हैं।

पिता के निजी ग्रंथालय से प्राप्त पुस्तकों से उन्हें जीवन और जगत् के प्रति सोचने का अवसर मिला। पाश्चात्य विचारक मोपासाँ, गोर्की, टॉलस्टाय, डिकेन्स, पर्लबक आदि के साहित्यिक विचार उन्हें प्राप्त हुए। साथ ही जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, प्रेमचंद के साहित्य का भी परिचय प्राप्त हुआ। इन साहित्यकारों के साहित्य पठन से उनकी वैचारिक भूमी ठोस बनीं। उनकी अनेक साहित्य कृतियों की सराहना साहित्यकारों ने की और उन्हें प्रोत्साहित किया।

1.3.2 चंद्रकांता का व्यक्तित्व :

व्यक्तित्व के अध्ययन के आधारपर व्यक्ति के व्यवहार को समझा एवं परखा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी गुण-विशेषताएँ होती हे। व्यक्ति का समस्त व्यवहार उसके परिवेश तथा वातावरण से जुडा हुआ होता

है। जनसाधारण में व्यक्तित्त्व का अर्थ बाह्यरूप से लिखा जाता है। परंतु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व का अर्थ बाह्य गुण एवं आंतरिक गुणों से युक्त माना है। व्यक्तित्व के द्‌वारा उसके विकास की रुपरेखा का पता चलता है।

साहित्यिकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अंतसंबंध होता है। इस संबंध में कहा गया है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण घर-परिवार, के साथ सामयिक परिस्थितियों के बीच होता है। उसपर हुए संस्कार उसे बनाते हैं। साहित्य और कला के क्षेत्र में सर्जक, कला का और साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके समग्र कृतित्त्व के साथ जुडा रहा करता है। कृतित्त्व की तह तक पहुँच जाने तक व्यक्ति का अध्ययन रूचिपूर्ण तो हुआ ही करता है। साहित्य कृतियों को समझने में साहित्यकार के जीवन अध्ययन से लाभ ही होता है।

स्वभावगत विशेषताएँ :

चंद्रकांता का बचपन कश्मीर जैसे प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण परिवेश में व्यतीत हुआ। इसीकारण उनमें प्रकृति के प्रति तीव्र आकर्षण रहा है। उनका अबोध मन प्रकृति के सान्निध्य में आनंद की अनुभूति प्राप्त करता है। अपने खिलदंडी स्वभाव के बारे में वह लिखती है, ''अपने बारे में सोचते हुए जब भी मुडकर देखती हूँ तो मुझे एक छह-सात वर्ष की खिलदंडी बच्ची टेढे-मेढे घसीली पगडंडियों पर हवा से होड लेते भागती नजर आती है। कच्ची दुबिया पगडंडियों पर उँचे चीड, देवदारों से बतियाती बेतहाशा दौडी जा रही है, अकेली-अकेली। जब कि उसके भाई-बहन संभ्रांत घर के तौर-तरीकों के अनुसार घर में बैठे खिलौनों से खेल रहें होते हैं।'' प्रकृति के प्रति यह आकर्षण उनके साहित्य में प्रतिबिंबित हुआ है।

भूस्वर्ग कश्मीर में चंद्रकांता का बचपन और यौवन बीता है, उसकी अनेक यादें उसीसे जुडीं हैं। उनकी रगोंरेशों में काश्मीर बसा हैं ''कश्मीर की सरसब्ज वादी मेरी जन्मभूमि है। वहाँ का विशिष्ट परिवेश और वहाँ के लोकरंग मेरे मन में बसे हैं, मेरी सोच और मेरे संस्कारों का हिस्सा है।'' प्रकृति चित्रण उनके साहित्य में इसीकारण सजीव बना है।

उनके संवेदनशील स्वभाव का प्रमाण उनके साहित्य में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। माँ की मृत्यु के समय वह सिर्फ आठ साल की थी। माँ की मृत्यु का गहर सदमा उन्हें लगा था। लेखिका के शब्दों में, ''उस वक्त की मन:स्थिति बयान करना कठिण है। हाँ इतना जानती हूँ कि क्रौंच पक्षी की चीख मैंने तभी अपने भीतर उठती सुनी, जो आगे 'भर आता जब यह मौन हृदय...' पंक्तियाँ बनकर कागज पर उतरी।'' माँ का प्यार, उसका अभाव और आसपास घटती घटनाओं ने उनके संवेदनशील मन में बेचैनी एवं प्रश्नाकुलता भर दी। लडकियों के लिए जो पाबंदियाँ लगाई जा रही थी उसे देख वह विद्रोही बन गई। मध्य वर्गीय सामाजिक आडंबर तथा रुढियों का विरोध उनके साहित्य में उभरकर आया है। लेखन के दौरान कश्मीरी आंतक ने उन्हें अधिक संवेदनशील बनाया। 'कथा सतीसर' उपन्यास तथा 'काली बर्फ', 'पोशनुल की वापसी' जैसी कहानियों में हृदय पसीजनेवाली भावुकता पाई जाती है।

स्पष्टवक्ता एवं निर्भिक :

माँ की मृत्यु के गहरे सदमें के कारण बचपन में चंद्रकांता का स्वभाव अंतर्मुख और मौन रहा। शिक्षा प्राप्ति के बाद उनमें हौसला बढा और वह स्पष्टवक्ता बनीं। उन्होंने हमेशा गलत का विरोध किया।

स्पष्टवक्ता के साथ साथ वह निर्भिक एवं नीडर भी हैं। जीवनी परक उपन्यास 'यहाँ वितस्ता बहती है' में अपने पिताजी एवं परिवार के जीवन चरित्र का खुलकर चित्रण किया है। जो सच्चाई है उसका सच बयान किया है। अपनी पोल खुल जाएगी इस डर से उन्होंने झूठ का सहारा नहीं लिया। जो यथार्थ है उसे ही उन्होंने व्यक्त किया और उसके लिए किसी का लिहाज नहीं रखा। अपने साहित्य निर्मिती में वे स्वयं को आलोचक मानती है। अवरोध निर्माण करनेवाले आलोचकों को स्पष्ट सुनाती है। कुल मिलाकर सच्चाई के बलबुते पर वह निर्भिक, नीडर एवं स्पष्टवक्ता रही है।

कश्मीर में हो रहे आतंक के कारण झुलस रही शरणार्थी भाई बहनों के प्रति उन्हें हमदर्दी है। उनपर हो रहे अत्याचारों को देखकर वह देश के कर्णधारों को स्पष्ट सुनाती है कि, ''इधर देखो, अपने आसपास। न्याय के अलबमदारों, जरा सोचो, इन निष्कासित बच्चों को तुम कौनसा भविष्य दे रहे हो? इसतरह अपनी जन्मभूमि के प्रति दायित्व का बोध उनमें दिखाई देता है।

चंद्रकांता ने अपने साहित्य में अपनी अनुभूति यथार्थता के आधारपर अभिव्यक्त की है। उन्होंने खुशहाल काश्मीर का चित्रण 'ऐलान गली जिंदा है।' में बडी बारीकी से किया है। काश्मीरी परिवेश से वह जुडी हुई है। वहीं दूसरी ओर आज काश्मीर का रूप जिस आतंकवाद से रक्तरंजित बन रहा है, इन्सानियत बदल रही है, टूटते मानवीय रिश्तें आदि का चित्रण 'कथा सतीसर' में व्यक्त होता है। पति की नौकरी के कारण अलग अलग प्रदेशों में जाने के कारण उन प्रदेशों की अनुभूति भी उनके साहित्य में दिखाई देती है। 'अपने अपने कोणार्क' में उडिसा का वर्णन है।

इसीतरह उनके साहित्य में वास्तविकता, यथार्थता के अंकन के साथ भविष्य के सुखद चित्र की कामना भी दिखाई देती है। उदा. 'सूरज उगने तक' कहानी में भ्रष्टाचार, बेकारी के दाग को मिटाकर सूरज नए सुखद चित्र लेकर आने की इच्छा करती हैं। प्रसिद्धी और पैसों के लिए किए जानेवाले गोरखधंधे के लिए वह लिखती नहीं हैं। लेखकीय संस्कार उनमें मौजूद हैं। महिला लेखन-पुरुष लेखन इस तरह का भेद करना भी उन्हें मान्य नहीं है। संवेदना के स्तर पर स्त्री-पुरुष भेद से परे मनुष्य एक ही है, वे मनुष्य के मुक्ति की कामना करती है ऐसा चंद्रकांता का मानना है। किसी गुटबाजी में अटककर उन्होंने लेखन नहीं किया। उन्होंने अपनी स्वतंत्रचेता वृत्ति को स्वीकार कर अपनी अनुभूति की यथार्थता को कागज पर उतारा है जिसमें उनकी सच्चाई पूरीतरह से उतरी है।

चंद्रकांता की मातृभाषा कश्मीरी है। उन्होंने बी. ए. बी. एड्. की पढाई अंग्रेजी माध्यम से की है। हिंदी में एम. ए. करने के बाद उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति की सशक्तता के लिए हिंदी भाषा का चुनाव किया। इसतरह चंद्रकांता जी भाषा एवं साहित्यसंबंधी अपनी स्वतंत्र्य मान्यता है जो बिलकुल साफ एवं सुलझी हुई है। उनकी दृष्टि से साहित्य साहित्यकार के निजी एवं सामाजिक संवेदनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। संवेदनशीलता एवं उनके चिंतनशीलता का परिचय उनके साहित्य के द्वारा प्राप्त होता है।

1.3.3 चंद्रकांता का कृतित्व :

चंद्रकांता के साहित्यिक कृतियों से उनके बहुमुखी प्रतिभा का परिचय मिलता है। उपन्यास, कहानी, काव्य, संस्मरण आदि विधाओं में अनका लेखन प्राप्त होता है।

बारह वर्ष की आयु में लिखी पहली कविता का लेखन किया – 'भर आता जब यह मौन हृदय।' स्कूल, कॉलेज की पत्रिकाओं में कुछ कविताएँ लिखी। उनकी पहली कहानी 'कल्पना' मासिक पत्रिका में 1967 में छपी, जिसका शीर्षक था – 'खून के रेशें।' इसी वर्ष अक्तूबर में 'नई कहानी' में 'कैक्टस' और 'ज्ञानोदय' में 'सलाखों के पीछ' कहानी प्रकाशित हुई। तब से आज तक चंद्रकांता निरंतर लिखती रही हैं अबतक उनके सात उपन्यास, बारह कहानी संग्रह, दो आत्मकथात्मक संस्मरण, एक कविता संग्रह इसतरह हिंदी साहित्य में योगदान रहा है।

● **उपन्यास :**

1.	अर्थांतर	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली	1980
2.	अंतिम साक्ष्य	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1981
3.	बाकी सब खैरियत है	नैशनल प्रकाशन, दिल्ली	1983
4.	ऐलान गली जिंदा है	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1984
5.	यहाँ वितस्ता बहती है	नैशनल प्रकाशन, दिल्ली	1992
6.	अपने अपने कोणार्क	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1995
7.	कथा सतीसर	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2001

● **कहानी संग्रह :**

1.	सलाखों के पीछे	स्वाती प्रकाशन, हैदराबाद	1975
2.	गलत लोगों के बीच	राजधानी प्रकाशन, दिल्ली	1984
3.	पोशनूल की वापसी	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1988
4.	दहलीज पर न्याय	ज्ञानभारती प्रकाशन, दिल्ली	1989
5.	ओ सोनकिसरी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1991
6.	कोठे पर कागा	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	1993
7.	सूरज उगने तक	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली	1994
8.	काली बर्फ	किताधर प्रकाशन, दिल्ली	1996
9.	कथानगर	समय प्रकाशन, दिल्ली द्वितीय संस्करण	2008
10.	बदलते हालात में	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2002
11.	अब्बू ने कहा था	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	2005

12.	तैंतीबाई	पेंगुइन बुक्स इंडिया	2007

● **काव्य संग्रह :**

1.	यहीं कहीं आसपास	नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1999

● **आत्मकथात्मक संस्मरण :**

1.	मेरे भोजपत्र	अरुप पब्लिकेशन, दिल्ली	2008
2.	हाशिए की इबारतें	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2009

● **पुरस्कार एवं सम्मान :**

चंद्रकांता के हिंदी साहित्य में योगदान के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनकी विविध कृतियाँ पुरस्कृत हो चुकी हैं, जो इसप्रकार हैं –

- जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी से 'अर्थांतर।' (1982)
- जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी से 'ऐलान गली जिंदा हैं।' (1986)
- जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी से 'ओ सोनकिसरी।' (1994)

उपर्युक्त तीनों कृतियाँ बेस्ट बुक अॅवॉर्ड से गौरवान्वित हुई हैं।

मानवसंसाधन मंत्रालय भारत सरकार की ओर से पुरस्कृत :

- बाकी सब खैरियत है (1983)
- पोशनूल की वापसी (1989)
- हिंदी अकादमी से 'कथा सतीसर' पुरस्कृत (2002)
- कथा सतीसर के लिए व्यास सम्मान (2005)
- हिंदी साहित्य अकादमी से 'कथा सतीसर' पुरस्कृत (2008)

उपन्यास विधा में विशेष योगदान के लिए – चंद्रावली शुक्ल सम्मान

गद्य विद्या के लिए – कल्पतरू सम्मान

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में योगदान हेतु – कल्पना चावला सम्मान

समग्र लेखन के लिए – 'ऋचा लेखिका रत्न' (2006)

वाग्मणिक सम्मान (2006)

चंद्रकांता ने देश-विदेश में अनेक गोष्टियों, सेमिनारों में भाग लिया है।

सैन फ्रान्सिस्को में स्वतंत्रता की 50 वीं जयंति के सुअवसर पर काव्यपाठ किया।

कैलिफोर्निया के मीलपीटस् शहर में पंजाबी साहित्य सभा में कथावाचन एवं काव्य प्रस्तुति की।

फ्रीमांट शहर और सैनहौजे में भारतीय साहित्यमंच के आमंत्रण पर कथा एवं काव्य पाठ किया।

1.3.4 उपन्यासकार चंद्रकांता :

भारतीय साहित्य जगत् में नारी लेखन को प्रधानता आधुनिक युग के प्रारंभ से ही दी जाने लगी। स्वतंत्रता के पश्चात् कथा साहित्य में अनेक नवोदित महिला रचनाकारों ने अपना विशेष योगदान दिया है। हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से भारतीय नारी के विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। इनमें चंद्रकांता का लेखन साहित्य समाज सापेक्ष हैं। उन्होंने आधुनिक युग में दृष्टिगत होनेवाले बदलते मूल्यों का चित्रण किया है। अपने उपन्यासों में चित्रित पात्रों के मनोवैज्ञानिकएव सूक्ष्म विश्लेषण किया है। समसामयिक युगबोध के साथ उनके उपन्यासों में विषय विविधता है। उनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है –

1. अर्थालंकार :

यह एक लघु उपन्यास है। इसमें कम्मो के दांपत्य जीवन की त्रासदी का चित्रण है। पति–पत्नि का समर्पण एक दूसरे के साथ न होने से एक औपचारिकता सिर्फ बनी हुई है इसका उदाहरण यहाँ दिया है। परिवार में कम्मों को दूसरे दर्जे का स्थान पति विजय से मिलता है और कम्मों दूसरे दर्जे पर रहने की अपनी नीयति अस्विकार करती है। रिश्ता निभाना चाहिए इसलिए दोनों साथ रहते हैं, इसतरह की व्यथा–कथा इसमें चित्रित है।

2. बाकी सब खैरियत है :

इस उपन्यास में मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार का चित्रण हुआ है। विनू और पारुल एक दंपति तथा अनुपम और निम्मी एक दंपति है। विनू और अनुपम भाई भाई है। अनुपम और निम्मी विदेश में सारी सुविधाओं के साथ जीवन बिताते हैं। पारुल अपने सास–ससुर के साथ उनके अनुशासन में जीवन बिताती है। भाई–भाई के बीच पारिवारिक जीवन में आर्थिक दूरियों के कारण अलग अलग जीवन बिताना पडता है। आर्थिक अभाव, दहेज जैसी समस्याअें का चित्रण इसमें है।

3. ऐलान गली जिंदा है :

चंद्रकांता की यह एक महत्त्वपूर्ण चर्चित कृति है। कश्मीर की ऐलान गली की पृष्ठभूमि इसमें वर्णित है। लेखिका ने इस गली का बारीकी से वर्णन किया है, जहाँ पर उनका बचपन बीता है। जहाँ धर्म, भाषा और संप्रदाय के नाम आदमी आदमी के बीच दीवार खडी की जाती हैं वहाँ अन्वर मियाँ और दयाराम मास्टर जैसे लोग सांप्रदायिक सौहार्द के प्रतीक बनकर उभरते है। परंपरागत रूढियाँ, धर्म संस्कारों को माननेवाले इस गली के लोग समय परिवर्तन के साथ इस गली में भी बदलाव हो गया। इसमें वहाँ की आँचलिक भाषा, रीतिरिवाज, लोकगीत, कहावतें, मुँहावरें आदि का चित्रण हुआ है। अनेक पात्र इसमें है, उनकी अपनी व्यथा कथा का वर्णन है।

4. अंतिम साक्ष्य :

अंतिम साक्ष्य उपन्यास की प्रमुख पात्र मीना है, जिसके जिवन के घात–प्रतिघात से उपन्यास की कथावस्तु विकसित हुई है। इस उपन्यास में एक परिवार– बाऊजी और बीजी एवं उनके दो पुत्र सुरेश और विकी का चित्रण है। इसमें प्रतापसिंह उर्फ बाऊजी का मीना के प्रति आकर्षण तथा अनैतिक संबंध के कारण परिवार विघटित

हो जाता है, मीना मौसी के आगमन से बीजी दु:खी होती है। परिवार टूटन, अनमेल विवाह, विवाहेत्तर संबंध जैसे घटनाओं का निरुपण इस उपन्यास में हुआ है। माता-पिता के निधन के पश्चात अनाथ बच्ची मीना की परवरिश उसके चाचा-चाची सही ढंग से नहीं करते जिससे उसके जीवन त्रासदी का चित्रण करना उपन्यास का प्रधान विषय रहा।

5. यहाँ वितस्ता बहती है :

तीन पीढियों के संघर्ष एवं मानवीय सरोकारों का गहरा एवं व्यापक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। इस उपन्यास के केंद्रीय पात्र राजनाथ का चित्रण लेखिका ने अपने पिता के रूप में किया है। लेखिका ने अपने अतीत की स्मृतियों को यहाँ उजागर कर दिया है। तीन विवाह करने के बावजूद राजनाथ पत्नी-सुख से वंचित रहते है। वितस्ता के किनारे बसे परिवार की यह कहानी विस्तृत फलक पर चित्रित हुई है।

6. अपने अपने कोणार्क :

लेखिका ने उडिसा में अपने संपर्क में आयी 'कुनी' का जीवन प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त किया है। आर्थिक अभाव के कारण घर की बडी बेटी कुनी पारिवारिक जिम्मेदारी उठाती है परंतु खुद बिना शादी ही रह जाती है। अंतत: उसे डॉ. अनिरुद्ध दास, जो विधुर है उनसे रिश्ता तय करना पडता है यह विवाह कुनी की विवशता और समझौता ही है। इसमें उडिया के सामाजिक, आर्थिक जीवन का चित्रण भी हुआ दिखाई देता है।

7. कथा सतीसर :

यह एक बृहत् उपन्यास है। कश्मीर के बदलते हालात, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवर्तन से आयी विसंगति का गहन व्यापकता से चित्रण हुआ है। कश्मीर से विस्थापित-निष्कासित निर्वासितों की महायातना की व्यथा-कथा इसमें है। अल्पसंख्यांक हिंदुओं को अपने घरों से विस्थापित कर अपने ही देश में शरणार्थी का जीवन जीने के लिए अभिशप्त कर दिया जा रहा है, इसकी टीस इस उपन्यास में व्यक्त हुई है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) चंद्रकांता का जन्म ..... में हुआ।

अ) श्रीनगर ब) विजयनगर क) दिल्ली ड) उत्तराखंड

2) चंद्रकांता ने एम. ए. ..... भाषा में किया।

अ) अंग्रेजी ब) हिंदी क) कश्मीरी ड) गुजराथी

3) चंद्रकांता ने ..... में दो वर्ष अध्यापन किया।

अ) श्रीनगर ब) पिलानी क) उडिसा ड) कश्मीर

4) चंद्रकांता के कुल ..... उपन्यास प्रकाशत है।

अ) पाँच ब) सात क) तीन ड) बारह

5) चंद्रकांता के पिता का नाम पंडित ..... था।
अ) रामचंद्र ब) श्रीराम क) दीनानाथ ड) राजनाथ

6) चंद्रकांता की शिक्षा ..... माध्यम से हुई है।
अ) अंग्रेजी ब) उर्दू क) कश्मीरी ड) हिंदी

7) चंद्रकांता की माँ का नाम ..... था।
अ) संपत्ति ब) विपत्ति क) राधा ड) माताजी

8) चंद्रकांता के ..... भाई थे।
अ) चार ब) तीन क) दो ड) पाँच

9) 'गर्म बहसों में लिपटा एक ठंडा शहर' कश्मीर पर लिखे इस फीचर के लिए ..... ने चंद्रकांता को बधाई दी।
अ) जैनेंद्र ब) अमृतराय क) रघुवीर सहाय ड) यशपाल

10) कश्मीर की खुशहाली का चित्रण चंद्रकांता ने ..... उपन्यास में किया है।
अ) अंतिम साक्ष्य ब) ऐलान गली जिंदा है क) अपने अपने कोणार्क ड) कथा सतीसार

1.5 पारिभाषिक शब्दावली :

1) **कलंदर –** शरारती एवं मजाकिया वृत्ति

2) **खिलंदडी –** खिलाडू वृत्ति

3) **ऐलान –** लेखिका का जहाँ बचपन बीता उस गली का प्रतीकात्मक नाम

4) **भूस्वर्ग –** कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता की वजह से कश्मीर को धरती को स्वर्ग कहा जाता है।

1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) श्रीनगर
2) हिंदी
3) पिलानी
4) सात
5) रामचंद्र
6) अंग्रेजी
7) संपत्ति
8) दो
9) अमृतराय
10) ऐलान गली जिंदा है

1.7 सारांश :

चंद्रकांता के जीवन परिचय एवं कृतित्त्व का अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं–

- चंद्रकांता का जन्म 3 सितंबर 1938 में श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ।
- उनके पिता का नाम पंडित रामचंद्र और माता का नाम संपत्ति था।

- चंद्रकांता का अपनी माँ से बहुत लगाव था।
- चंद्रकांता की माँ को अपनी इस कलंदर बेटी की हमेशा चिंता लगी रहती थी।
- परिवार के अन्य सदस्यों में उनके दो भाई और डॉ. विशिन (पति) और दो बच्चे हैं। बेटा संजय विशिन सॉफ्टवेअर इंजीनीयर (अमरिका) और बेटी राका कौल दिल्ली में अध्यापिका है।
- चंद्रकांता की माँ की मृत्यु वे जब छ-सात साल की थी तब हुई। माँ के दु:ख ने उन्हें अंतर्मुख कर दिया।
- बारह वर्ष की आयु में ही पहली कविता लिखी थी 'भर आता जब यह मौन हृदय'।
- 'कल्पना' मासिक पत्रिका हैदराबाद से सितंबर 1967 में पहली कहानी 'खून के रेशे' प्रकाशित हुई।
- चंद्रकांता के लगभग 7 उपन्यास प्रकाशित हुए हैं।
- चंद्रकांता के लगभग 12 कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है।
- उपन्यासकार के रूप में चंद्रकांता के उपन्यासों के विषयों में विविधता है।
- चंद्रकांता जी के साहित्य संबंधी विचार सुलझे हुए हैं।
- चंद्रकांता की संवेदनशीलता एवं चिंतनशीलता उनके साहित्य में प्रतिबिंबित हुई है।

1.8 स्वाध्याय :

1) चंद्रकांता का जीवन परिचय लिखिए।

2) चंद्रकांता के व्यक्तित्व की जानकारी दीजिए।

3) चंद्रकांता का कृतित्त्व लिखिए।

4) उपन्यासकार चंद्रकांता।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) कश्मीर से जुडी हिंदी की अन्य लेखिकाओं की सूची बनाइए।

2) चंद्रकांता के समकालीन मराठी महिला लेखिकाओं की सूची बनाइए।

3) कश्मीर की पृष्ठभूमि पर लिखा (चंद्रकांता का) अन्य उपन्यास पढिए।

4) चंद्रकांता के जीवन परिचय पर मराठी में चरित्रप्रधान निबंध लिखिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. चंद्रकांता का कथा साहित्य : समकालीन परिवेश तथा संदर्भ
डॉ. अमोल पालकर

2. चंद्रकांता का कथा साहित्य - डॉ. जगदीश चव्हाण

●●●

इकाई 2

अंतिम साक्ष्य – कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय – विवरण

2.3.1 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की कथावस्तु

2.3.2 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास का शीर्षक

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने पर आप–

1. उपन्यास विधा में प्रचलित लघु उपन्यास से परिचित होंगे।

2. हिंदी साहित्य में चर्चित नारी विमर्श तथा परिवार विमर्श की जानकारी से परिचित होंगे ।

3. स्वतंत्र भारत की सामाजिक, पारिवारिक व्यवस्था का परिचय प्राप्त होगा ।

4. व्यक्ति के आचरण और व्यवहार के विभिन्न पहलुओं की जानकारी से परिचित होंगें ।

5. स्त्री–पुरुष के बदलते संबंधों की जानकारी से परिचित होंगें ।

6. कश्मीरी हिन्दू परिवार में नारी की स्थिति से परिचित होंगे।

7. बिखरते परिवार में पति के तथा मुखिया के अनैतिक आचरण से परिवार बिखरने की पीड़ा से परिचित होंगे।

8. बिखरते परिवार और विस्थापित लोग आदि के माध्यम से मनुष्य की आंदोलित मनोदशा से परिचित होंगे।

9. भारतीय नारी के विषय में समाज के संकीर्ण वैचारिक दृष्टिकोन की जानकारी से परिचित होंगें ।

10. परिवार में उभरते अविश्वास और नयी पीढ़ी के अलगाव की व्यथा से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका चंद्रकांता जी का पहला उपन्यास है– अंतिम साक्ष्य जिसका द्वितीय संस्करण सन 2015 ई. में अमन प्रकाशन की ओर से प्रकाशित हुआ है । इस उपन्यास में उपन्यासकार ने बदलते मानवीय संबंधों की संवेदना तथा प्रेम–संबंधों की आकांक्षा को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है । आधुनिक सभ्यता के प्रभाव एवं परिणामों से आत्मीयता की जगह औपचारिकता का प्रचलन बढ़ता गया और संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों का जन्म हुआ । व्यक्ति अपने ही स्वजनों से कटकर रिश्तों की निर्जीवता, अर्थहीनता को बढ़ावा देने लगा। चंद्रकांता जी ने प्रस्तुत कथानक को पारिवारिक व्यवस्था के बदलते प्रतिरूपों का आधार बनाकर स्नेह, अपनापन, विश्वास,आस्था आदि भाव–भावनाओं के माध्यम से रिश्तों की गहराई और उथलेपन को भी अत्यंत कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है ।

समीक्षकों के अनुसार अंतिम साक्ष्य उपन्यास जितना सामाजिकता से अपना सरोकार दर्शाता है। उतना ही व्यक्तिवाद और पारिवारिकता से गहरा संबंध भी निर्माण करता है । प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु मीना मौसी के इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है। जिससे इसे नायिका प्रधान उपन्यास की कोटि में रखा जा सकता है अथवा स्त्री–विमर्श के रूप में देखा जा सकता है ।

2.3 विषय विवरण :

2.3.1 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की कथावस्तु :

'अंतिम साक्ष्य' की कथा मीना नाम की एक छोटी सी लड़की की है जो आगे चलकर मीना मौसी नाम से जानी जाती है । माता-पिता के अभाव में बालिका मीना को चाचा-चाची संरक्षण देते हैं लेकिन उन्हें मीना को संभालने की इच्छा न थी, समाज के भय से उन्होंने मीना को अपने घर में रखा था । बारह साल की उम्र में मीना का एक पचास साल के बूढ़े लाला से जबरदस्ती विवाह किया जाता है । बूढ़े लाला की पहली पत्नी का देहांत हुआ है तथा उसके तीन-तीन जवान बेटे भी हैं । बुढा लाला शादी के बाद मीना को देखता है तो उसे अपराध बोध होता है । लाला के मन में दयाभाव जागृत होता है। उसे मालूम है उसके जवान बेटे मीना को माँ नहीं मानेंगे तथा उनकी गिद्ध दृष्टि का लाला को भय सताता है । मीना के विषय में बूढ़ा लाला अस्वस्थ और आतंकित होता रहता है । स्त्री को भोगने की लपलपाती भूख ने उसके दिमाग पर पर्दा डाला था । स्त्री का शरीर केवल भोगने के लिए होता है । इस जिद के कारण लाला ने शादी के लिए तुरंत स्वीकृति दी थी लेकिन मीना के चेहरे की मासूमियत तथा उसकी उम्र ने लाला को हराया । शादी के दो दिन बाद ही बूढ़ा लाला मीना के चाचा के घर जाकर मीनू को लौटाने की बात करता है ।

मीनू के चाचा के घर की बागडौर चाची के हाथ में थी और चाचा केवल मूक दर्शक थे । बूढ़ा लाला मीनू का ब्याह कही और करने की बात करते हुए कहते हैं कि, 'पोती की उम्र की लड़की को घर में न रखूंगा।' चाची को इस बात का क्रोध आता है और वह लाला को होश में आने की बात कहती है। लाला भी अपराधबोध की भावना से स्वयं को संभालकर चाची पर मीना की उम्र बारह की जगह बीस बताकर फंसाने का आरोप लगाता है । चाची भी इतनी सहजता से मीना को वापस घर में लेने के लिए तैयार न थी । लाला चाची के चेहरे पर उत्पन्न पैसों की भूख का नशा और सौदेबाजी का इरादा पहचानता है । चाची भी मुंह पर झूठा क्रोध और दुःख का मिला-जुला भाव लाकर पांच हजार नकद रकम लेकर राजी होती है ।

मीनू की उम्र इस योग्य न थी जो इस लेनदेन के 'व्यवहार' को समझ सके । चाची के घर जाते समय लाला का छोटा लड़का मीनू के सामने 'हवस' का प्रस्ताव रखता है। इस घटना से मीनू को क्रोध नहीं आता पर अपने दुर्भाग्य पर वह फूट-फूटकर रोती है । अपनी जन्म देनेवाली माँ को उसने नहीं देखा था पर उस पर अपनी जान छिडकनेवाले उसके बापू (पिताजी) का चेहरा, उनका प्रेम वह नहीं भूली थी । ईश्वर ने शायद मीनू को बचपन से ही माता-पिता के अभाव में ही जीने के लिए पैदा किया था । परायापन, बोझ की भावना की यातनामय स्थिति का असमय ही मीनू को अनुभव प्राप्त होता है । चाची के घर वापस आने पर मीनू के चरित्र पर चाची शक करती है, लाला के बेटे के साथ संबंध की बात कहती है । इतना ही नहीं पैदा होते ही माँ-बाप को खानेवाली डायन मानकर उसका तिरस्कार कर उसके बोझ से छुटकारा पाना चाहती है ।

नन्ही मीनू चाची के सामने दया की भीख मांगती है, घर का सारा काम करने, चाची की सेवा करने की बात भी कहती है। लेकिन चाची नहीं मानी उसने गुंडे जगन के साथ मीनू का ब्याह तय किया । चाचा भी मीनू

को समझाने तथा संभालने का प्रयास करते हैं मगर चाची के डर से चूप हो जाते हैं । जगन भीमकाय तथा यमदूत जैसा प्रतीत होता था । मीनू की मिन्नतों का चाचा पर कुछ भी असर नहीं हुआ और उसका हाथ जगन के हाथ में दिया जाता है । कुछ दिनों तक जगन के दानवी नोच-खसोट को मीना सहन करती है क्योंकि वह उसका पती था लेकिन जगन के मन में मीना के विषय में अपनेपन की भावना निर्माण ही नहीं हुई । मीनू जगन के काम में सहयोग देती थी । एक दिन जगन बड़े सबेरे मीनू को लेकर अपने मदनसिंह नाम के दोस्त के घर जाता है। मीनू ने जगन के दोस्त मदनसिंह का नाम पहली बार सुना था, वह आशंकित जरुर थी फिर भी पति के साथ होने के कारण निश्चिन्त भी थी । जगन ने पार्टी में जाने की बात कही थी लेकिन मदनसिंह के घर पार्टी का कोई आयोजन नहीं था । मदनसिंह तथा जगन मीनू को टैक्सी में बिठाकर एक कोठे पर लाते हैं । मदनसिंह एक दलाल है जो जगन को पैसे देकर मीनू को एक कोठेवाली के हवाले करता है । काम का बहाना बनाकर जगन तथा मदनसिंह वहाँ से भाग निकलते हैं । भोली मीनू को कुछ समझ नहीं आता और वह उस औरत से घर जाने की बात कहती है । वह औरत कोठे की मालकिन थी । मीनू की याचनाओं का उस पर असर नहीं होता वह आदेश के स्वर में कहती है । 'यहाँ जो एक बार आता है? वापस नहीं जाता । इस घर के दरवाजे के सिवा अब सभी दरवाजे तुम्हारे लिए बंद हो गए ।' यह शब्द सुनकर मीना के हृदय की गति ही मानो रुक जाती है । वह निराश्रित, भयाक्रांत दशा में रोई जा रही थी। लेकिन उसकी इस अवस्था से किसी को लेना-देना नहीं था । मीनू की नजरों के सामने चाची की कुटिलता, जगन की दानवी प्रवृत्ति की तस्वीरें नाचने लगी थी । मीनू को सचमूच बेचा गया था उसका दुबारा सौदा हुआ था । मीनू अब वेश्या बन गयी थी

कोठे की मालकिन ने व्यावसायिक स्वार्थ के कारण मीनू को धंधे को लगाने से पहले संगीत की तालीम देने की जिम्मेदारी एक संगीत मास्टर पर सौंप दी । संगीत मास्टर एक भला आदमी था । एक दिन मौका पाकर मास्टरजी मीनू को इस नरक से निकालकर शहर भाग जाते हैं । वहाँ जितना कुछ सिखाया जा सकता है, उतना मीनू को सिखाकर संगीत की अनेक परीक्षाओं में बिठाकर एक उच्च-स्तर की गायिका बनाते हैं । मास्टरजी मीना के लिए देवदूत थे, उनके सहयोग और प्रेरणा से मीना को कश्मीर रेडियो स्टेशन (आकाशवाणी) पर नौकरी मिलती है । मास्टरजी ही मीनू को कैलाश के घर का कमरा सस्ते किराए पर दिलवाते हैं ।

कैलाश और रमेश सुखी दाम्पत्य है, जो एक-दूसरे का सम्मान भी करते थे और एक-दूसरे पर जान भी छिडकते थे । उनके परिवार में निरंतर हँसी-मजाक का माहौल रहता था । कैलाश तो मीना को अपनी सहेली ही नहीं बल्कि बहन भी मानती थी । रमेश और कैलाश मीना को अपने परिवार का ही एक सदस्य मानकर उससे आत्मीयता से पेश आते थे । वे दोनों पति-पत्नी घूमने जाते समय, होटल में खाने जाते समय मीना को हमेशा अपने साथ ले जाते लेकिन ऐसे समय मीना बोझिल दशा का अनुभव करती है । मीना को अपना दुखमय अतीत याद आता रहता है । इसलिए वह रेडियो स्टेशन की नौकरी तथा कमरे का बंदी जीवन आदि के घेरे में ही स्वयं को व्यस्त रखने का प्रयास करती है । रमेश भी मीना के साथ छोटी बहन जैसा व्यवहार करके अपने यातनामय अतीत से बाहर आने के लिए उपदेश देता रहता है । मीना को डर लगता है कि कही उसका पुराना पति जगन या अतीत से सम्बन्धित कोई भी व्यक्ति इस शहर में दुबारा उसके जीवन को कुरेदने उपस्थित न रहे।

कैलाश तथा रमेश ने प्रेमविवाह किया था वे दोनों अलग-अलग जाति के थे । उन्होंने अपने परिवार का विरोध सहकर शादी की थी बाद में उन दोनों के परिवार ने उनके विवाह को स्वीकारा था । उन्होंने भी अपना प्रेमविवाह तथा दाम्पत्य जीवन सफल रूप में निभाया था । कैलाश तथा रमेश के जोड़े को देखकर मीना को जीने की प्रेरणा मिलती है । उसके जीवन में मास्टर जी के बाद कैलाश और रमेश ने ही आत्मीयता से रंग भरने का कार्य किया था । वे दोनों पति- पत्नी मीना को हर जगह अपने साथ लेकर जाते । उनके कारण ही मीना को एक नई जिंदगी प्राप्त हुई है ऐसी मीना की धारणा थी । कैलाश और रमेश दोनों भी मीना का अतीत जानते हैं । इसलिए अपने जीवन के वर्तमान क्षणों को यादों तथा चिंताओं के घेरे से बाहर निकालकर नये रूप से जीने की सलाह देते हैं । रमेश मीना को समझाते हुए कहता है, ''तकलीफ भरी यादें किसी के लिए भी कष्टकारी होती है । रोना-धोना, अपमान-तिरस्कार यह तो घर-घर चलता है । यह तो जिंदगी की सच्चाईयां हैं । इनसे आदमी भागकर किस गुफा में जाएँगे?''

रमेश खाने के शौकीन थे । इतवार के दिन कोई ना कोई प्रोग्राम बनाकर अपने परिवार के साथ हँसी-मजाक से खुशियाँ बांटते रहते । मीना भी इस परिवार से जुड़कर अपने जिंदगी का अर्थ ढूंढने के प्रयास करती है । उसे लगता है उसके जीवन के दुखमय क्षण बीत चुके हैं । उसमें आशा का संचार होता है, नये रिश्ते, सम्बन्ध उसके सामने नया रूप लेकर उसे घेरने लगे थे । उसे सबकुछ एक सुंदर सपने की तरह लगने लगा । लेकिन सहज, सुंदर और मधुर जीवन के क्षण मीना के जीवन में लिखना शायद भगवान भूल गया था।

कैलाश और रमेश के परिवार के साथ मीना घुलमिल गयी थी । वे दोनों पति-पत्नी मीना को अपने परिवार तक सीमित नहीं रखते बल्कि अपने नजदिकी रिश्तेदारों से भी उन्होंने अपने और मीना के संबंधों की जानकारी दी थी। ठाकुर प्रतापसिंह (बाऊ जी) और उनकी पत्नी से भी मीना की मुलाकात कैलाश और रमेश के कारण ही होती है । प्रतापसिंह की पत्नी जिसे सभी बीजी कहते हैं, वह कैलाश की कोई रिश्तेदार नहीं थी और उसके बिरादरी की भी नहीं थी। फिर भी दोनों में बहन जैसा रिश्ता था।

ठाकुर प्रतापसिंह (बाऊ जी) के परिवार में उनके साथ उनकी पत्नी बीजी, बड़ा बेटा सुरेश और छोटा विवेक जिसे सभी विकी कहते थे, ये चार सदस्य रहते हैं । ठाकुर प्रतापसिंह दफ्तर में काम करते थे, घर की स्थिति अच्छी थी और गाँव के लोग भी उन्हें मानते थे। बाऊ जी के दफ्तर के इंजीनीअर साहब ने सड़क मजदूर दया को प्रतापसिंह (बाऊ जी) के घर छोटे-मोटे काम करने के लिए रखा था । दया घर के अनेक काम करता फिर भी बीजी उन्ही कामों को दुबारा अपने ढंग से करती । बीजी सुबह से शाम तक घर कार्यो में व्यस्त रहती। बाऊ जी, सुरेश बीजी को हमेशा टोकते क्योंकि नौकर दया द्वारा पूरे किए कामों को दुबारा करने की आवश्यकता न होने पर भी बीजी दिनभर उन्हीं कामों में व्यस्त रहती थी । जिसके कारण आराम करने के लिए उसे फुर्सत भी नहीं मिलती और आराम करना उसके स्वभाव के खिलाफ भी था । बीजी निरंतर अत्यंत बारीकी से घर के सभी गतिविधियों पर ध्यान देती। उसकी नजरों से कोई भी बात नहीं छूटती थी । सुरेश निरंतर आवारापन का व्यवहार करता है । पड़ोस की सरोज नाम की लड़की को चुपके से अपने घर बुलाता है लेकिन बीजी से ये बात छूप नहीं पाती । बीजी सरोज को ही दोष देती है । सरोज छत पर पढाई का बहाना करके आती है

और बार-बार सुरेश की तरफ झाँककर देखती है । ये सब बीजी को पता है इसलिए वह सरोज के पिता को लड़की के इश्कबाजी के बारें में बताना चाहती थी क्योंकि वह बिना माँ की लड़की है और भाभियाँ उसकी तरफ ध्यान नहीं देती ' लेकिन विकी उसे मना करते हुए कहता है, ''दुनिया में हजारों झंझट हैं । किस-किस का भला-बुरा सोचेगी? अपने ही सिर दर्द क्या कम हैं? सुरेश अपनी हरकतों से बाज नहीं आता । पड़ोस की पंडिताइन को भी वह नहाते समय झाँककर देखता है तब भी बीजी पंडिताइन को टोकती है । उस समय पंडिताइन बीजी को कहती है, ''अपने मुंडे को रोक लो न बीजी।'' इसका बीजी को गुस्सा आता है और वह पंडिताइन को डाँटते हुए कहती है, ''मुंडों का काम ताक-झांक करना है । औरत को शर्म चाहिए ।'' एक दिन बीजी के सामने ही सुरेश पंडिताइन की पीठ पर मजाक में ढेला मारता है । इस घटना से बीजी को काफी गुस्सा आता है और वह भूख-हड़ताल करती है । बाऊ जी उसे समझाकर खाने के लिए तैयार करते हैं फिर भी सुरेश को इस बारे में भला-बुरा नहीं लगता । विकी जब तक माँ खाना नहीं खाती तब तक खाना नहीं खाता । सुरेश इस परिवार की दुखती रग था । अनेक बार समझाने पर भी उसकी आवारापन की हरकते कम नहीं होती । विकी को सभी अच्छा लड़का मानते हैं लेकिन सुरेश के व्यवहार से सभी चिंतित और आशंकित थे । बीजी जल्दी से जल्दी सुरेश की शादी करना चाहती है क्योंकि घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी पड़ने पर उसके आचरण में परिवर्तन होने की वह बात सोचती है ।

ठाकूर प्रतापसिंह (बाऊ जी) अपने बेटों के भविष्य को लेकर काफी आशावान है इसिलिए उनकी पढाई के लिए घर में स्वतंत्र कमरा तैयार करना चाहते हैं । उन्होंने अपने बेटों के विषय में काफी योजनाएँ बनायी थी। बाऊ जी सुरेश को आर्मी का बड़ा अफसर बनाना चाहते थे और छोटे विकी को चीफ इंजीनिअर । बीजी आर्मी की लड़ाइयों से घबराती थी इसलिए बेटे को आर्मी में भेजने उत्सुक न थी, इस पर बाऊ जी कहते हैं, ''राजपूत के बेटे न लड़ेंगे तो क्या ब्राह्मण-बनिये लड़ेंगे ।'' ''मेरे बेटे हैं । ठाकूर प्रतापसिंह के बेटे । क्लर्की-मास्टरी करने के लिए पैदा नहीं हुए।'' बाऊ जी ने बेटों की अच्छी पढाई के लिए घर पर ही ट्यूशन शुरू की थी । इतना ही नहीं खुद भी बेटों को पढ़ाते थे । बाऊ जी शिकार के शौकीन थे । वे सुरेश को बचपन से ही शिकार पर ले जाते हैं । बारह साल की उम्र में ही सुरेश बंदूक चलाना सिख गया । लेकिन सुरेश का पढाई में मन नहीं लगा । वह अपने पिता की सभी योजनाओं को नाकाम बनाता रहा ।

कैलाश के कारण ही मीना की ठाकूर प्रतापसिंह के परिवार से पहचान होती है । कैलाश और रमेश हमेशा पिकनिक, खरीदारी, मंदिर की सैर, रात का डिनर, फिल्म देखना आदि प्रसंगों पर मीना को साथ लेकर चलते। मीना पहली बार कैलाश के साथ ही सुरेश की मँगनी पर ठाकूर प्रतापसिंह के घर आती है । वहाँ मीना की पहचान एक रेडियो कलाकार के रूप में करायी जाती है । मँगनी के अवसर पर गाने-बजाने के समय मीना एक गजल सुनाती है । ठाकूर प्रतापसिंह मीना के आवाज के प्रशंसक बन जाते हैं । कैलाश की फरमाइश पर मीना अनेक गीत सुनाती हैं । ठाकूर प्रताप मीना के गीतों तथा गजलों के विषय में अतिरिक्त उत्साह दिखाते हैं । रात के समय में भी ठाकूर प्रतापसिंह के हृदय में मीना का सुरीला स्वर गुंजता रहता है जिससे वह सो न सके।

बीजी के आदेश से सुरेश और विकी मीना को 'मीना-मौसी' कहने लगे । दो-तीन बार कैलाश के कारण ही प्रतापसिंह के परिवार से मीना की भेंट होती है। बीजी तथा मीना में अच्छी घनिष्ठता बढ़ती है । बीजी केवल मीना के साथ मित्रता नहीं निभाती बल्कि उसके साथ बहन जैसा व्यवहार करती है । मीना का अतीत जानकर बीजी को बूरा लगता है । बीजी अपने पति प्रतापसिंह को मीना की दर्दनाक स्थिति से अवगत कराती है और उसके प्रति सहानुभूती प्रकट करती है । प्रतापसिंह का हृदय मात्र इस लडकीनुमा स्त्री की ओर आकर्षित होता है । मीना के जीवन में उनका आगमन अप्रत्याशित रूप से होता है । वैसे वे अपनी जिंदगी में सुखी थे। खुद का मकान, सरकारी नौकरी तथा दो बेटे, हर दम उनकी चिंता करनेवाली पत्नी, दफ्तर में मान-सम्मान, घर के आसपास के लोग भी उन्हें मानते थे । सबकुछ था उनके पास लेकिन मीना से आंतरिक खिंचाव निर्माण होता है और वे अपने आप को रोक नहीं पाते । दिनभर पारिवारिक जिम्मेदारी तथा बच्चों में व्यस्त रहनेवाली बीजी के कारण प्रतापसिंह अपने हृदय की खाली जगह में मीना को देखते हैं । मीना ने भी असमय ही संबंधों का बीभत्स रूप केवल देखा नहीं बल्कि भोगा था। परिमाण स्वरुप वह अपने आप को इस आत्मीय संबंधों से अधिक समय दूर नहीं रख सकी । प्रतापसिंह के साथ जुड़े आत्मीय संबंधों से मीना के हृदय में दुबारा प्रेम की लालसाएँ निर्माण होती है और नैतिक-अनैतिकता के बंधनों का विचार न करते हुए उनकी तृप्ति भी करती है।

मीना अकेली रहती थी इसलिए बीजी कई बार उसे अपने घर आकर रहने की बात कहती है लेकिन मीना नकार देती है । मीना को पता था कि एक ही घर में रहते हुए प्रतापसिंह और उनके बीच का आकर्षण बढ़ने की संभावना थी । मीना कई बार प्रतापसिंह को समझाती है कि वे उससे दूर रहे । वह उनके और बीजी के जीवन में दरार उत्पन्न करना नहीं चाहती फिर भी प्रतापसिंह उसकी बातों का मर्म समझकर भी स्वीकारने के लिए तैयार न थे । अपने काम की जगह मजदूर, ठेकेदार, इंजीनिअर आदि के बीच समझदारी का व्यवहार करनेवाले प्रतापसिंह अपने वैयक्तिक जीवन को नासमझ बनकर अंजान दिशा की ओर प्रवाहित करते हैं ।

प्रतापसिंह के व्यवहार में अव्यक्त परिवर्तन होने लगा । बीजी भी अनायास उसे महसूस करती है लेकिन किसी तर्क तक वह पहूँच नहीं पाती । एक दिन बीजी विकी को लेकर बाजार में सूट का कपड़ा खरीदने निकलती है । रास्ते में सोचती है कि मीना को साथ लेकर चलते हैं क्योंकि उनकी पसंद अच्छी होती है । बीजी विकी को लेकर अचानक मीना के घर पहुँचती है । दरवाजा केवल बंद था छूने-भर से ही खुल गया । अंदर का दृश्य देखकर बीजी के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गयी, विकी अपनी माँ को पीछे खिंचने लगा । अंदर मीना के पलंग पर प्रतापसिंह लेटे थे और मीना मौसी उनके पास ही अधलेटी उनका माथा सहला रही थी मीना मौसी अपने शरीर के तमाम आवरणों से बेखबर भावाकाश में उड़ाने भर रही थी ।

बीजी की अकस्मात उपस्थिति से मीना हडबड़ाकर उठ खड़ी हुई और अपने कपड़े संभालने लगी । बीजी के मन में तूफान उत्पन्न हुआ था । प्रतापसिंह भी पलंग पर संभलकर बैठ गए थे लेकिन उनके चेहरे पर किसी गलती का भाव न था । पत्नी के बेवक्त उपस्थिति से प्रतापसिंह झुँझला गए थे । अपनी गलती को महत्त्वहीन मानते हुए पत्नी पर ही आरोप लगाते हुए बोले, ''क्या जासूसी करने आई थी।'' बीजी इस शर्मनाक स्थिति से काफी दुखी हुई थी और ऊपर से पति का आरोप जिससे उसका पूरा शरीर भावावेश से कांपने लगा । विकी

माँ की दशा देखकर भय से ग्रस्त हो रहा था । उसे लगा माँ कुछ भी करेगी । विकी माँ की बाँह पकड़कर खिंचने लगा । बीजी ने हृदय में उठनेवाले ज्वालामुखी के उद्रेक जैसे भाव से मीना मौसी को देखा और कहा, ''उम्र भर का जहर तूने मेरे लिए ही संजो रखा था सर्पिणी।'' इतना कहकर बीजी वहाँ से लगभग भागती हुई लौट पड़ी और विकी भी अपनी माँ की आंदोलीत दशा से घबराकर उसके साथ-साथ भागता रहा । घर आकर बीजी अपने कमरे में घुस गई और उसने विकी को भी मिलने से मना किया । रात होने पर विकी को कुछ अघटित होने की संभावना से डर लगने लगा और वह जागता रहा।

दूसरे दिन बीजी अपने दैनिक कार्यों में उलझी रही । दया को उसने काम से निकाल दिया । दिनभर घर के कार्यों में ही वह व्यस्त रहने लगी । बाऊ जी भी उस दिन की अप्रत्याशित घटना के बाद हर-रोज घर जल्दी लौटने लगे परंतु बाऊ जी और बीजी के बीच का वार्तालाप लगभग खत्म हो गया था । बीजी नाश्ता, खाना बनाती, कपड़े धोती, बाजार जाती लेकिन खाली नहीं बैठती । विकी हरसंभव दोनों के बीच बातचीत का पुल बनने की कोशिश करता परंतु बाऊ जी और बीजी के बीच की दूरी बढ़ती ही गयी । बाऊ जी महीने-भर के टूर के लिए चले गए परंतु दोनों के मुख से एक भी वाक्य नहीं निकला। जिस घर में हर घटना पर बाऊ जी को प्रतिक्रिया देनेवाली बीजी आज शब्दविहीन काम करनेवाली यंत्र बन गयी थी । बाऊ जी को विकी स्टेशन पर छोड़ने जाते समय बीजी बहुत रोई थी।

बीजी दिन-रात सोचती रहती, किसी से कुछ बात नहीं करती उसे अपने-आप से शिकवा होने लगा। जन्म से ही मध्यवर्गीय संस्कारों से भरा उसका मन तथा आदर्श, शील, संस्कार, मूल्यों का महत्त्व जानने एवं समझनेवाली बीजी को एहसास हुआ की उसके पती ने ही उसके अस्तित्व को नकारा है । वह इस घर की फालतू चीज बन गयी है । स्वयं के विचारों में व्यस्त रहनेवाली बीजी को ध्यान भी नहीं रहता कि वह क्या कर रही है । माँ की दशा देखकर विकी भी निराश होता । अपनी माँ को निराशा के घेरे से बाहर निकालने के लिए वह माँ को कहता है, ''तुम ऐसे रहोगी, तो मैं बोर्डिंग चला जाऊंगा।'' यह वाक्य सुनकर बीजी के हृदय को ठेंस पहुँचती है और वह रोती है । बीजी विकी को कहती है- ''विकी घर तो तुम लोगों का ही है । अच्छा या बुरा,जैसा भी समझो । अभी तो मैं जिंदा हूँ, मेरे रहते घर छोड़ने की बात कैसे करता है रे तू?'' माँ की दयनीय दशा देखकर उसे बाऊ जी पर क्रोध आता है । इतनी समर्पित माँ के साथ उन्होंने धोका, छल, कपट किया था। मीना मौसी के विषय में भी विकी के मन में जहर उत्पन्न होता है क्योंकि बीजी मीना मौसी को बहुत मानती थी। उनके साथ बहन का रिश्ता जोड़ा था और उन्होंने बदले में क्या दिया, केवल विश्वासघात।

घर की जिम्मेदारी की चक्की में दिन-रात पिसनेवाली बीजी को अपनी निरर्थकता का अहसास स्वस्थ बैठने नहीं देता और वह अंदर ही अंदर कुढती रहती है । चिंता नाम की बीमारी से ग्रस्त बीजी अचानक बिस्तर की साथी बन जाती है । बीजी के बिस्तर पकड़ने पर बाऊ जी ने खूब सेवा की । मामूली-सा बुखार तपेदिक का रूप धारण कर गया । शायद मरने से पहले बीजी की जीने की इच्छा ही मर गयी थी ।और दो महीने के भीतर ही बीजी दुनिया से चल बसी।

बीजी की मृत्यु के बाद बाऊजी का घर हमेशा के लिए टूट गया जो अंत तक जुड़ न पाया । बीजी की

मृत्यु के बाद सभी कर्म- अनुष्ठान करने का बुआ ने आग्रह किया और बाऊ जी ने भी इसका विरोध नहीं किया। पूजा-पाठ, ब्राह्मण भोज, भगवत गीता का पाठ, दान-धर्म सभी रीती-नीति का पालन किया गया।

पत्नी की मृत्यु से बाऊ जी एकाकी बन जाते हैं, सुरेश आवारागर्दी की सारी हदें पार करता है तो विकी बिना खाये-पिये निराश अवस्था में कभी दोस्तों के यहाँ तो कभी बुआ के घर पड़ा रहता है । बाऊ जी को लगता है उनका घर ढहने लगा है । उसे रोकने का उपाय उनके पास नहीं है फिर भी विचार करते रहते हैं। सभी रिश्तेदारों का अफ़सोस जताकर चले जाने के बाद बाऊ जी ने पत्नी की मृत्यु के तेरह दिन बाद ही मीना मौसी को अपने घर लाया । अब उनका मन इतना कठोर हो गया था कि किसी भी तरह की बेइज्जती से उन्हें अपने घर की चिंता अधिक सताने लगी । बेटे अपनी माँ की जगह मौसी को नहीं देंगे यह बात बाऊ जी को पहले से पता थी फिर भी उन्होंने यह निर्णय लिया था।

बीजी की मृत्यु ने प्रतापसिंह का घर वीरान बन गया था । दोस्त, रिश्तेदार आकर तसल्ली जताते थे, लेकिन इस सदमे से प्रतापसिंह, सुरेश, विकी अपने आप को संभालने में नाकाम रहे । विकी को तो एक पल भी माँ का अभाव सहन नहीं हो रहा था । मीना मौसी का प्रतापसिंह के घर में आगमन हर किसी को खटक रहा था। मीना मौसी को तो इस स्थिति का एहसास हुआ था इसलिए उसे लगा उसने बहुत बड़ी भूल की है । ठाकूर प्रतापसिंह के प्रस्ताव को वह नकार न सकी और इस परिवार के साथ जुड़ने का प्रयास करने लगी । सुरेश ने तो मीना मौसी के आगमन के क्षण ही उससे रिश्ता जोड़ने की बात को अस्वीकार करते हुए कहा- ''हमें क्या? बाऊ जी मीना मौसी को ले आएँ या पक्का ढंगा की रसूलन बाई को....'' विकी की अवस्था इससे अलग नहीं थी वह सोचता है जिस औरत को बीजी ने बहन बनाया उसने ही सौत बनकर बीजी की जिंदगी छीन ली है। उसे मैं कैसे बर्दाश्त कर सकता हूँ । मीना मौसी का इस घर में होना ही उसे असह्य लगने लगा।

सुरेश ने तो आवारागर्दी की सीमाएँ तोड़ दी । अब उसे बाऊ जी का डर नहीं लगता था और अब टोकने के लिए बीजी भी नहीं थी । परिणामस्वरुप जो चाहे करने का जैसा लाइसेन्स ही उसे मिल गया था । सुरेश दोस्तों को अपने घर बुलाकर महफिले जमाता, दिनभर घर में यार-दोस्तों का हुडदंग मचा रहता । विकी का पढ़ने में मन नहीं लगता । सुरेश ने तो अब लड़कियों को भी घर में लाना शुरू कर दिया । शराब और औरत के जिस्म की जैसे उसे लत ही लग गई हो । विकी को इस स्थिति में घर में रहना नामुमकिन लगने लगा । वह सोचता है बाऊ जी ने बचपन से ही सुरेश के प्रत्येक हठ को पूरा करने का प्रयास किया था जिसका यह परिणाम दिखाई दे रहा है । सुरेश ने तो बचपन से हाथ से निकलना शुरू किया था । छोटी उम्र में ही बाऊ जी की शराब की बोतलों में से वह एक-दो घूँट छूपकर पिता था । विकी को आज भी याद आता है बीजी ने सुरेश तथा बाऊ जी को अनेक बार समझाने का प्रयास किया था मगर सभी कोशिशें नाकाम हुई थी । बाऊ जी बच्चों पर अतिरिक्त बोझ डालना नहीं चाहते थे लेकिन सुरेश ने इसका गलत लाभ उठाया।

स्कूल कॉलेज से प्रोफेसरों की शिकायतें बाऊ जी के पास आने लगी तब बाऊ जी को सुरेश के कारनामों का परिचय हुआ । सुरेश ने प्रोफेसर गुप्ता के विषय में बाऊ जी से शिकायत की, तो बाऊ जी ने कहा- ''प्रोफेसरों को दोष मत दो। तीन साल से इंटर में बैठे हो । आगे न बढ़ने की जैसे कसम खाई हुई है ।'' बाऊ

जी की डाँट का उल्टा परिणाम हुआ । सुरेश पहले से ज्यादा आवारागर्दी करने लगा । प्रोफेसर गुप्ता ने कॉलेज का अनुशासन तोड़ने की शिकायत प्रिंसिपल से की । प्रिंसिपल ने सुरेश को कॉलेज से निकालने की नोटिस दे दी । दूसरे ही दिन सुरेश ने अपने दोस्तों को साथ लेकर प्रोफेसर गुप्ता के घर जाकर उस पर चाकू (से हमला लिया) चलाया । प्रोफेसर गुप्ता की बाँह से खून बहने लगा । उसी दिन पुलिस सुरेश को गिरफ्तार करने के लिए घर में आयी तो बाऊ जी के सभी सपने, योजनाएँ टूटकर ढह गए । उन्होंने स्वयं को संभालते हुए क्रोध में सुरेश को कहा- ''जा चला जा इसी वक्त! दुबारा घर में कदम न रखना । मैं समझूंगा, मेरा एक ही बेटा है ।''

बाऊ जी ने अपनी पहचान से एवं पुलिसों को पैसे देकर मामला रफा-दफा करवाया लेकिन घर आकर बेटे पर डंडे बरसाएँ । सुरेश और भी क्रोधित हुआ और अंदर जाकर आलमारी से भरी बंदूक निकालकर बाऊ जी पर निशाना साधना चाहता था। उसी वक्त विकी समयावधान रखते हुए उसके हाथों से बंदूक छीन लेता है। बीजी यह दृश्य देखकर अत्यंत भयभीत होती है और निचे गिर जाती है । उस दिन के बाद घर का वातावरण ही बदल जाता है। बाऊ जी ने सुरेश का जेब खर्च बंद किया । दीवान ने बेटी की मंगनी तोड़ने का ऐलान किया। सुरेश इस घटना से और भी उत्तेजित हो उठता है । बाऊ जी की अलमारी से पैसे चुराकर सुरेश एक रात दीवान की लड़की मीता को लेकर बम्बई भाग जाता है । इस घटना के लिए सभी लोग प्रतापसिंह को जिम्मेदार मानते हुए उनकी आलोचना करते हैं । उधर सुरेश को बम्बई में काम न मिलने से दर-दर भटकना पड़ता है । ग्लैमर की दुनिया में भूख-प्यास से बेहाल होकर वह तड़पता है । जितने पैसे पास थे वह ख़त्म होने पर जिंदगी का असली चेहरा रंग दिखाने लगा । मीता ने भी अपने पिता को पत्र भेज दिया और तीसरे दिन उसका भाई आकर मीता को ले जाता है।

सुरेश बम्बई के फूटपाथों पर रहते हुए संघर्ष करने लगा । तब मनीष नाम का दोस्त उसे सेना में भर्ती होने का सुझाव देता है । तमाम औपचारिकताओं के बाद सुरेश सिपाही के पद पर सेना में भर्ती होता है।

विकी का मन भी घर से दूर रहने के लिए मचल रहा था । जब तक बीजी थी तब तक अपनेपन की बेडी उसे घर से दूर जाने नहीं देती थी । लेकिन बीजी के चले जाने के बाद विकी गहरा अकेलापन महसूस करता है । इसलिए बाऊ जी से कहता है, ''मैं सोच रहा हूँ कि बोर्डिंग में रहकर पढ़ाई पूरी करूँ । इधर तो मुझसे रहा नहीं जाएगा अब।'' ठाकूर प्रतापसिंह बेटे की मनोदशा जानते थे । उन्हें पता था विकी की अपनी माँ के साथ घनिष्ठता थी । उन्होंने विकी को नहीं रोका, विकी घर छोड़कर होस्टल में रहता है । एम्एस-सी की परीक्षा के बाद वह कुछ दिन बुआ के घर रहता है लेकिन अपने घर नहीं लौटता । अख़बार पढ़कर विज्ञापन देखता है, नौकरी की तलाश करता है । एक मामूली-से वेतन पर दिल्ली में उसे नौकरी मिलती है । बाऊ जी को केवल सूचना देने के लिए मिलने जाता है, वह भी बुआ के कहने पर । बाऊ जी इतने कम पैसों पर नौकरी करने राजी विकी के निर्णय से संतुष्ठ न थे । वे उसे इतने पैसे तो घर में रहते हुए भी दे सकते हैं, ऐसी बात कहते हैं लेकिन विकी कहता है, ''मैं कहीं दूर जाना चाहता हूँ, बाऊ जी।'' बाऊ जी जान गए थे, उनका बेटा अब वापस नहीं लौटेगा । विकी को एक प्राइवेट कॉलेज में लेक्चरर का काम मिला था।

विकी के साथ काम करनेवालों ने विकी को इस पद पर काम कनेवालों की तथा यहाँ के विभागप्रमुख के बारें में जानकारी दी लेकिन विकी अपने निर्णय पर अडिग रहता है । उसके लिए सुरक्षा, सम्मान, अधिकार जैसे शब्द फालतू बन गए थे । उसे तो केवल काम चाहिए था छोटा-बड़ा, स्थायी-अस्थायी की उसने चिंता नहीं की दिल्ली में रहते हुए उसे बीजी, बाऊ जी, भाई सुरेश, अपना मकान तथा तनु की हमेशा याद आती है । बीजी के कहे गए शब्द हमेशा उसकी स्मृतियों में ताजा रहते हैं। 'घर तो तुम्हारा है, अच्छा या बूरा ।' ये वाक्य उसे निरंतर अतीत में ले जाते हैं।

दिल्ली में रहते हुए विकी को पंकज, रैना, मिस सिंह जैसे आत्मीय मित्र मिलते हैं । वे हमेशा विकी के कमरे में आकर विभिन्न विषयों पर बहस करते रहते हैं । कुछ समय के लिए विकी अपने अतीत और अकेलेपन से बाहर आता है लेकिन उनके चले जाने के बाद वही अतीत विकी को अपने में समा लेता है। मिस सिंह संगीत की अध्यापिका है, उसे देखकर विकी को तनु की याद आती है । तनु गुप्ता साहब की लड़की थी । कॉलेज के दिनों में विकी को तनु बेहद पसंद थी और तनु को भी विकी भा गया था । हर-रोज बिना कहे रास्ते में वह निश्चित मोड़ पर मिलते थे । रोज सुबह विकी तनु को उसकी दादी के साथ देखता था। तनु बहुत ही सरल और सीधी लड़की थी । विकी को आज भी याद आता है वह प्रसंग जब सुरेश ने बीजी का नाम लेकर तनु को एक दिन दोपहर को अपने घर बुलाया था और तब विकी कॉलेज से अचानक जल्दी घर लौटता है, तो देखता है तनु उसके घर में क्या कर रही है । विकी चौंक पड़ता है क्योंकि बीजी बुआ के पास गयी है, बाऊ जी काम पर गए है ऐसे समय उनके घर तनु की उपस्थिति अनेक शंकाओं को जन्म देती है । क्योंकि विकी को अपने भाई सुरेश की आवारागर्दी और नियत की जानकारी थी । वह तनु को डाँटते स्वर में पूछता है, ''क्यों आई हो?'' तनु जबाब देती है, ''बीजी ने बुलाया है।'' विकी क्रोध से ओतप्रोत होकर बोलता है- ''बीजी घर में नहीं है । सुरेश ऊपर है, चली जाओ।'' ''जा अपने घर इधर मत आना फिर कभी, कोई भी बुलाए, समझी ।'' तनु भयभीत हो गयी उसकी आँखों में आंसू तैरने लगे । लगभग भागती-सी तनु अपने घर लौट गयी । तनु के जाने के बाद सुरेश और विकी में झगड़ा होता है । सुरेश विकी को कहता है, ''तू बीच में टांग अडाना कब से सीख गया गधे।'' साथ ही मेरे निजी मामलों में दखलअंदाजी न करने का आदेश देता है, तब विकी सुरेश को सुनाता है- ''यह आपका मामला नहीं है। तनु यहाँ नहीं आएगी । मैंने उसे मना कर दिया है।'' तब सुरेश को विकी और तनु के दोस्ती की जानकारी प्राप्त होती है ।

विकी हमेशा इस बीते हुए कल को मन में ताजा बनाने का प्रयास करता है । नीला शौक के लिए लेक्चरशिप करती है । उसके पिता का शहर में बड़ा व्यवसाय है । पैसों की कोई कमी नहीं है । नीला हर हफ्ते में दोस्तों को लेकर रेस्तराँ जाकर डिनर, लंच लेती है । विकी को तो यह संभव नहीं था लेकिन नीला को पता था विकी के घर की स्थिति सामान्य है और वह घर छोड़कर यहाँ दिल्ली में रहता है । नीला हमेशा विकी को खाने के लिए अपने साथ ले जाने का प्रयास करती है । विकी को उसका बार-बार बिल चुकाना पसंद नहीं था ।

पहले-पहल विकी और नीला में दोस्ती हो जाती है । दो साल विकी और नीला एक साथ काम करते

हैं । उनके बीच आत्मीयता के संबंध दृढ़ होने लगते हैं । दोनों छुट्टी के दिन हमेशा एकसाथ घुमने जाते हैं एकांत में बैठकर बाते करते हैं । निला विकी को अपने पहले प्रेम के बारे में पूछती है तब विकी की नजरों के सामने तनु का चेहरा आता है लेकिन वह कुछ नहीं बताता । नीला अपने बारे में सब कुछ बता देती है । साथ ही उन दोनों के बीच प्रेम का नया रिश्ता निर्माण होता है, उसे दोनों भी स्वीकृति देते हैं ।

एक दिन अचानक नीला सिंह की माँ को हार्ट अटैक आता है तब पंकज और विकी उन्हें देखने अस्पताल जाते हैं । नीला की माँ को देखकर विकी को अपनी माँ बीजी की याद आती है । बिस्तर पर पड़ी, मौत और जिंदगी के बीच झूलती हुई । विकी अपने आप को संभालता है और नीला की माँ से आत्मीयता से बातें करता है । नीला की माँ भी विकी को अपने घर आने का निमंत्रण देती है । कुछ ही दिनों में नीला के परिवार के साथ विकी की घनिष्ठता बढ़ती जाती है । नीला और विकी एक-दूसरे के और भी अधिक करीब आ जाते हैं । दो ढाई साल दिल्ली में रहकर विकी अपने घर से एकदम कट-सा गया था । बाऊ जी को देखने की इच्छा होती पर हिम्मत नहीं होती । दोस्त पंकज उसे समझाता है, ''जाओ यार! कुछ दिन पिताजी के पास रहकर आओ।'' ''एक उम्र होती है भई, जब आदमी लाख वैरागी होने पर भी बाल-बच्चों से कुछ उम्मीदें रखने लगता है।'' विकी भी बाऊ जी को मिलने के लिए तैयार होता है । विकी बाऊ जी के लिए कुछ चीजें खरीद लेता है और घर जाने की तैयारी करने लगता है तभी अचानक विकी का मकान मालिक विकी को मीना मौसी का फोन आने की खबर देता है । मीना मौसी फोन पर विकी को बाऊ जी की तबीयत बिघड़ने की जानकारी देकर, विकी को देखने की बाऊ जी की इच्छा के बारे में बताती है ।

विकी तुरंत अपने घर आता है और अपने पिता की क्षत-विक्षत अवस्था देखकर अपने आप को संभाल नहीं पाता । एक सड़क दुर्घटना में बाऊ जी बूरी तरह से घायल हुए थे । जिंदा रहने की उम्मीद न थी । सफेद पट्टियों में बंधा सिर, जिस पर खून के लाल धब्बे उभर आये थे । बाऊ जी ने आँख से इशारा किया । विकी निचे उनके मुँह तक झुक गया । बाऊ जी ने अपनी होठों से विकी को दुलारा, उनकी आँखों में आंसू छलकने लगे और कमजोर आवाज में उनके मुँह से एक वाक्य निकला, ''वहाँ खुश तो है विकी !'' यह शब्द विकी का हृदय चीर रहे थे । विकी की आँखों से आंसू बहने लगे । वह सोचने लगा घर से दूर वह ख़ुशी ढूंढने गया था या अपने अस्तित्व को समेटने, यह वह तय नहीं कर पा रहा था ।

सुरेश को तार भेजकर बाऊ जी की दुर्घटना की खबर दी थी । सुरेश तब राजौरीपुंज की सीमाओं पर तैनात था । सुरेश को बाऊ जी की मृत्यु का समाचार दिया था और विकी को दिल्ली से बुलवाया था । वह सोचता है अपने अंतिम समय पर भी बाऊ जी को उसकी याद न आयी । उसे कोई नहीं चाहता । घर में वह हमेशा पराया माना गया यह विश्वास बाऊ जी की मृत्यु ने और भी दृढ़ कर दिया । पिताजी ने मृत्यु शय्या पर भी सुरेश को माफ़ नहीं किया यह सोचकर सुरेश अपमान और दुःख के तीव्र ताप में जलता रहा । जिस अदृश्य तार से वह घर से जुड़ा था वह हमेशा के लिए टूट गया था । अब केवल दंश भरी स्मृतियाँ शेष थी जिनके सहारे जीने का वह निर्णय लेता है । सुरेश पत्र लिखकर विकी को अपना निर्णय सुनाता है, ''सब कुछ ख़त्म होने के बाद मुझे मत बुलाओ । संस्कारों में मेरा विश्वास नहीं रहा । तुम अच्छे बेटे की तरह जिए, अच्छे बेटे की तरह

अंतिम इच्छाएँ भी पूरी करोगे मुझे पुरा भरोसा है .... वहाँ आने का अब कोई अर्थ भी नहीं । नहीं, अब मैं कभी नहीं आऊँगा ।''

विकी सोचता है बीजी की मृत्यु ने घर टूटने का आभास मिला था, सुरेश के पत्र ने उसे यथार्थरूप दे दिया था ।

सुरेश ने पत्र में लिखा था, ''उसे कुछ नहीं चाहिए वह उस जगह पर है, जहाँ पैसा इकठ्ठा करने का कोई महत्त्व नहीं है । अभी है, अभी नहीं ।'' बाऊ जी ने मृत्यु से पहले 'विल' लिखी है उसके अनुसार मीना मौसी के नाम कुछ रकम जमा है । मकान का एक कमरा उसे दिया था । बाकी घर किराये पर देने की बात थी और किराये के पैसे भी तीन हिस्सों में बाँटने की बात थी, एक मीना मौसी और दो बेटों के लिए ।

बाऊ जी के जाने के बाद उनका घर अब घर नहीं रहा। सुरेश ने स्वयं ही घर से संबंध तोड़ दिए । विकी घर में रहना नहीं चाहता तथा मीना मौसी का कोई सहारा ही नहीं था । एक समय बाऊ जी का यह घर परिवार के सदस्यों को जोड़नेवाली महत्त्वपूर्ण कड़ी थी। आज यह कड़ी कमजोर होकर टूट गयी थी । विकी मकान को किराये पर न देकर बिकने का निर्णय लेता है । मीना मौसी विकी के निर्णय का विरोध नहीं करती । वह तो उम्रभर बनजारन बनकर जी है । अब किस चीज का मोह और किस के लिए? ऐसा वह सोचती है ।

बाऊ जी के खास मित्र गुप्ता जी ने घर की नीलामी, खरीददार तय करना, ऋण का भुगतान आदि के लिए काफी दौड़-धूप करके विकी की मदद की थी । मकान का कुछ सामान धर्मार्थ संस्थावालों ने लिया था। वर्षों से जुड़े रहने के बाद निर्जीव वस्तुओं से भी लगाव तोड़ते जी टूटता गया था । कुछ जरुरी सामान बंधवाकर विकी और मीना मौसी ड्योढ़ी से बाहर आकर सीढियाँ उतरने के बाद विकी मुड़कर देखता है, उसका घर, बीजी, बाऊ जी के संस्कार, स्नेह, दुलार, सपने सब एक-एक करके नजरों के सामने नाच रहे हैं । विकी ने अपने जन्म से लेकर वर्तमान तक प्रत्येक क्षण का सुख-दुःख जिन दीवारों के अंदर भोगा उनको छोड़कर जाते समय कदम रुक गए। स्मृतियों के नन्हे-नन्हे हाथ विकी को पीछे की ओर खींचते हैं, पर विकी को आगे बढ़ना था । नई जिंदगी के लिए विगत से कटना था । मीना मौसी विकी का हाथ पकड़कर उसे आगे बढ़ा रही थी । वह पीछे नहीं देखती क्योंकि वह जानती है-कटना, जुड़ना, जख्मी होना, सभी अनिवार्य है, जीने के लिए ।

ढक्की का यह आखिरी मकान कई दिनों तक वीरान पड़ा रहा । उसकी एक-एक इंट खिसकती गयी । लोग कहते हैं खामोश रातों में यहाँ भूत-प्रेतों की सदाएँ गुंजती हैं । पलस्तर उतरी नंगी दीवारें और मलबे के ढेर मन में दहशत निर्माण करते थे । दोपहर में कुत्ते यहाँ आराम से सोए रहते थे । इस मकान के सहारे जीनेवाले कुछ मुसाफिर यात्रा कर चले गए, कुछ अलग-अलग राहों पर अपनी मंजिलों को तलाशने निकल गए । अजनबी भीड़ में अपनी जमीन से कटकर भी अपने वजूद को तलाश रहे हैं और यही तलाश सच है, शेष सब झूठा । क्योंकि यही तलाश जिंदगी है।

2.3.1 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता :

किसी भी साहित्यिक कृति की पहचान उसके शीर्षक से होती है। शरीर या देह में जो स्थान मस्तक का

होता है, वही स्थान किसी रचना के शीर्षक का होता है । शीर्षक का प्रभाव पाठकों पर सीधा पड़ता है । किसी भी रचना का शीर्षक जितना उत्सुकता, कौतुहल, उत्कंठा निर्माण करनेवाला हो उतना ही पाठकों का आकर्षण उस रचना के प्रति बढ़ता जाता है । केवल कौतुहल जगाना शीर्षक की भूमिका नहीं हैं अपितु कथा के अंत तक शीर्षक विषय वस्तु के संदर्भ में जुड़ा रहे अथवा चलता रहे तभी विषय का महत्त्व, गंभीरता, समर्पकता एवं सार्थकता कायम रहती है । इस दृष्टि से चंद्रकांता जी द्वारा रचित उपन्यास का शीर्षक अंतिम साक्ष्य सफल एवं सार्थक हुआ दिखाई देता है । उपन्यास का यह शीर्षक पढ़ते ही पाठकों के मन में कौतुहल निर्माण होता है, इसमें चित्रित विषयवस्तु को जानने की उत्कंठा पाठकों के मन में बैचेनी निर्माण करती है । यह शीर्षक प्रथमदर्शी ही पाठकों के मन में अनेकानेक प्रश्नों को उत्पन्न कर उसके जवाबों को जानने की मानसिकता तैयार करता है ।

प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक भावात्मकता का बोध करता है । इस उपन्यास के सभी पात्रों के बनते-बिघडते रिश्तों का ठाकूर प्रतापसिंह का मकान प्रत्यक्षदर्शी प्रमाण है । आत्मीय संबंध, प्रेम, स्नेह के रिश्ते, पारिवारिक मूल्य, साहचर्य की भावना आदि का अभिन्न घटक रहनेवाले इस मकान और उसकी दीवारों ने टूटते-कटते, खत्म होते रिश्तों का दुःख भी अनुभव किया था । बाऊ जी, बीजी, सुरेश, विकी इनको एकसूत्र में बांधकर रखनेवाला उनका यह घर मीना मौसी के आगमन से धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने लगता है । परिवार के सदस्यों के बीच का अलगाव मकान की ईंटो का खिसकने का बोध कराता है । ठाकूर के परिवार के ध्वस्त होने की अंतिम साक्ष्य उनका यह घर कथावस्तु के उतरार्ध तक आते-आते अंतिम सांसे लेता हुआ धर्मशाला का रूप धारण कर लेता है । बीजी तथा बाऊ जी की मृत्यु, सुरेश का घर से संबंध तोड़ना और अंत में विकी तथा मीना मौसी के द्वारा इस मकान को बेचकर इससे दूर जाने की घटना ने बावड़ा बाजार के ढक्की के इस अखिरी मकान की अब केवल स्मृतियाँ ही शेष बची रहने की साक्ष्य देता यह मकान । छोटी-बड़ी आकांक्षाओं, दुखों-तकलीफों और अकेलेपन की यातनाओं की अंतिम साक्ष्य देती नंगी दीवारों और मलबे के ढेर पर अथवा वीरान जगह पर धर्मशाला से बेहतर और क्या चीज बन सकती है?

प्रस्तुत उपन्यास स्त्री के लिए पुरुष की उपयोगिता कितनी महत्त्वपूर्ण है, तथा स्त्री को प्रेम, स्नेह, दया एवं करुणा से सामाजिक प्रतिष्ठा न मिलने का जब कि एक पत्नी बनकर मिलने की साक्ष्य है यह उपन्यास । पति-पत्नी के बीच तीसरे के आने से परिवार के टूटने और बिखरने की साक्ष्य है यह उपन्यास । नारी मन एवं नारी जीवन की पीड़ा की तथा प्रेम के कारण परिवार के बनने-बिगड़ने की साक्ष्य है यह उपन्यास । मीना के मनहूस एवं अभागी जीवन की तथा नारी अत्याचार तथा शोषण की साक्ष्य है यह उपन्यास । विकी, सुरेश, मीना, बीजी, बाऊ जी के जीवन के घात प्रतिघात की तथा मीना के अकेलेपन और बीजी के सूनेपन की तथा परिवार में टूटते विश्वास की अंतिम साक्ष्य है । हरा-भरा, फूला-फला घर से धर्मशाला बनने तक की सुखपूर्ण तथा दुखद घटनाओं की साक्ष्य है यह उपन्यास। विवाहपूर्व और विवाहेत्तर प्रेम संबंधों की तथा अनमेल-बेमेल विवाह की साक्ष्य है यह उपन्यास । स्त्री अस्मिता, अस्तित्व, अत्याचार, शोषण एवं जिजीविषा की, शोषण के विभिन्न स्तर तथा ध्वस्त हो रहे जीवन मूल्यों की साक्ष्य है यह उपन्यास।

खंडहर होती हवेली के धर्मशाला बनने की कल्पना से जुड़ी घटना जो अंतिम साक्ष्य है, यह केवल पारिवारिक विघटन की परिणति नहीं है, बल्कि ऐसा भी कहा जा सकता है कि विस्थापित होती पीढियों के कारण पूरी कश्मीरी संस्कृति की विरासत के रूप में कुछ भी शेष न रहने की । अंतिम साक्ष्य का अंश उन जर्जर होती हवेलियों का भी दर्द है जो उपन्यासकार के साथ-साथ वहाँ की अनेक पीढ़ियों ने भोगा है । इस तरह लेखिका द्वारा प्रस्तुत रचना को दिया गया शीर्षक कथावस्तु के माध्यम से बदलते संबंध एवं परिस्थितियों की पहचान कराने ने सफल हुआ दिखाई देता है । अत: उपन्यास का यह शीर्षक सार्थकता की दृष्टि से अत्यंत समीचिन लगता है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. अंतिम साक्ष्य ..... का उपन्यास है ।

2. अंतिम साक्ष्य उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र का नाम ..... है ।

3. माता-पिता के अभाव में बालिका मीना को ..... सँभालते हैं ।

4. बारह साल की उम्र में मीना का पचास साल के ..... से विवाह किया जाता है ।

5. बूढ़े लाला के ..... जवान बेटे है ।

6. मीना की शादी तोड़ने के लिए चाची बूढ़े लाला से ..... नकद रकम लेती है ।

7. मीना का दूसरा विवाह ..... से होता है ।

8. मदनसिंह पेशे से एक ..... है ।

9. कोठे से मीना को ..... बाहर निकालकर शहर भाग जाता है ।

10. मीना को कश्मीर ..... पर नौकरी मिलती है ।

11. रमेश की पत्नी का नाम ..... था ।

12. ठाकुर प्रतापसिंह की पत्नी को सभी ..... कहते थे ।

13. ठाकुर प्रतापसिंह के नौकर का नाम ..... था ।

14. ..... छत पर पढाई का बहाना करके आती है और बार-बार सुरेश की ओर झाँककर देखती है ।

15. ठाकुर प्रतापसिंह के दो बेटों में से .....अधिक आवारापन का व्यवहार करता है ।

16. बाऊजी सुरेश को ..... बनाना चाहते है ।

17. ..... के अवसर पर मीना पहली बार ठाकुर प्रतापसिंह के घर जाती है ।

18. मीना मौसी के विषय में विकी के मन में ..... उत्पन्न होता है ।

19. बीजी का बुखार ..... का रूप धारण कर लेता है ।

20. बीजी की मृत्यु के बाद बुआ ने ..... का आग्रह किया ।

21. पत्नी की मृत्यु के ..... दिन बाद ही बाऊजी मीना मौसी को अपने घर ले आते है ।

22. सुरेश अपने दोस्तों को साथ लेकर ..... पर चाकू से हमला करता है ।

23. सुरेश को ..... और ..... की लत गई थी ।

24. बाऊजी और सुरेश के झगड़े में ..... समयावधान रखते हुए सुरेश के हाथों से बंदूक छीन लेता है ।

25. पैसे चुराकर सुरेश दीवान की लड़की को लेकर ..... भाग जाता है ।

26. ..... परीक्षा के बाद विकी बुआ के घर रहता है ।

27. मनीष नाम का दोस्त सुरेश को ..... का सुझाव देता है ।

28. विकी को ..... में लेक्चरर का काम मिलता है ।

29. मिस सिंह ..... की अध्यापिका है ।

30. नीला ..... के लिए लेक्चरशिप करती है ।

31. मिस नीला सिंह और विकी के बीच ..... का रिश्ता निर्माण होता है ।

32. ..... दुर्घटना में बाऊजी बुरी तरह से घायल होते है ।

33. बाऊजी की दुर्घटना के अवसर पर सुरेश ..... की सीमाओं पर तैनात था ।

34. विकी मकान को किराये पर न देकर ..... का निर्णय लेता है ।

35. बाऊजी के घर की जगह ..... बनने जा रही थी ।

2.5 पारिभाषिक शब्दावली :

1) **नकद –** रोकड़, रुपया, पैसा

2) **बागडौर –** जिम्मेदारी

3) **भीमकाय –** विशाल आकारवाला

4) **डायन –** भूतनी

5) **माहौल –** वातावरण, परिवेश, परिस्थिति

6) **कुरेदना –** खरोंचना, उकेरना

7) **कुटिलता –** दृष्टता, धोकेबाजी, छल–कपट

8) **तालीम –** सीख, कवायत,सबक. शिक्षा–दीक्षा

9) **बिरादरी –** एक ही जाति के लोगों का समूह, जातीय समाज

10) **फरमाइश –** निवेदन, आग्रह

11) **इश्कबाजी** – प्रेम के खेल में पडना, प्यार का खेल

12) **अप्रत्याशित –** अनपेक्षित, असंभावित, आकस्मित

13) **लडकीनुमा –** कन्या, बेटी

14) **झुंझलाहट –** क्रोध, चिडचिडाहट

15) **तपेदिक –** एक बीमारी, टी.बी. दिक, यक्ष्मा

16) **हुडदंग –** ऊधम, उत्पात, उपद्रव

17) **ग्लैमर –** फैशन की दुनिया, आकर्षण, चकाचौंध, चमकदार

18) **रेस्तरां –** भोजनालय, होटल

19) **डिनर –** रात्रि का भोजन

20) **विल –** वसीयतनामा, इच्छापत्र

21) **दुलार –** लाड–प्यार

22) **नीलामी –** खरीदने–बेचने की क्रिया

23) **भुगतान –** निबटारा, भरपाई, चुकती

24) **ऋण –** कर्ज, उधार

25) **विस्थापित –** स्थानांतरन, अपने स्थान से हटा दिया गया

26) **विरासत –** पैतृक संपत्ति, उत्तराधिकार

27) **समीचिन –** उचित, सही, योग्य

2.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1. चंद्रकांता, 2. मीना मौसी, 3. चाचा–चाची, 4. बूढ़े लाला, 5. तीन, 6. पांच हजार, 7. जगन 8. दलाल, 9. संगीत मास्टर , 10. रेडियो स्टेशन, 11. कैलाश, 12 बीजी, 13. दया, 14 सरोज, 15. सुरेश, 16. आर्मी अफसर, 17. मँगनी 18. जहर, 19. तपेदिक , 20. कर्म– अनुष्ठान, 21. तेरह, 22. प्रोफेसर गुप्ता, 23. शराब, नारी जिस्म, 24. विकी, 25. बम्बई, 26. एम. एस–सी, 27. सेना भर्ती, 28. प्राइवेट कॉलेज, 29. संगीत, 30. शौक, 31. प्रेम, 32 सड़क, 33 राजौरीपुंज, 34 बिकने 35 धर्मशाला।

2.7 सारांश :

● यह उपन्यास हमारे देश की बदलती परिस्थितियों का लेखा-जोखा है ।

● इस उपन्यास में कश्मीरी संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक सभ्यता का भी चित्रण किया है ।

● पारिवारिक संबंधों में बंधे मनुष्य की स्त्री आकर्षण से बनी मानसिक उथल-पूथल को लेखिका ने यहाँ अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है ।

● भावनाओं में बहकर निर्णय लेने की मनुष्य की प्रवृत्ति के परिणामों ने पारिवारिक। व्यवस्था को खतरे के कगार पर लाकर खड़ा करने तथा परिवार बिखराव की समस्या का चित्रण किया है ।

● स्त्रियों के प्रति समाज एवं परिवार की नकारात्मक सोच एवं उनके शोषण का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास करता है ।

● इस उपन्यास में बीजी के चरित्र के माध्यम से भारतीय नारी के पारंपरिक स्थिति का चित्रण किया गया है ।

● यह उपन्यास स्त्री विमर्श के साथ-साथ परिवार विमर्श की भी हिमायत करता दिखाई देता है ।

● यह कथा युवाओं के उन्मुक्त आचरण और व्यवहार से उनके गिरते स्तर का यथार्थ चित्रण करता है ।

● यह उपन्यास स्त्री-पुरुष के संबंधों का सूक्ष्म रेखांकन है । आज के आधुनिक युग में विवाह पूर्व और विवाहेत्तर संबंध स्थापित हो रहे है। अनैतिक तथा अवैध संबंधों के बढ़ते प्रचलन से उत्पन्न तनावपूर्ण स्थितियों का परिचय यथार्थता के साथ किया है ।

● व्यक्ति के उपभोगतावादी प्रवृत्ति के परिणामस्वरुप पारिवारिक बिखराव, मूल्यों का ह्रास, अनैतिकता, अलगाव जैसी समस्याओं का जन्म हुआ । जिससे आदर्श सामाजिक रचना का स्वरुप कैसे बदलता- बिघडता गया इसका प्रमाण इस उपन्यास के माध्यम से प्राप्त होता है ।

2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न एवं दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) अंतिम साक्ष्य उपन्यास की कथावस्तु का सारांश लिखिए।

2) उपन्यास के तत्वों के आधार पर अंतिम साक्ष्य उपन्यास की समीक्षा कीजिए ।

3) मीना मौसी अंतिम साक्ष्य उपन्यास की प्रमुख स्त्री चरित्र है कथानक के आधार पर विवेचन कीजिए।

4) अंतिम साक्ष्य उपन्यास में चित्रित विकी (विवेक) की चारित्रिक विशेषताओं को लिखिए ।

5) अंतिम साक्ष्य उपन्यास बिखरते परिवारों का सजीव प्रमाण है । कथावस्तु के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

6) देश, काल, वातावरण की दृष्टि से अंतिम साक्ष्य की समीक्षा कीजिए ।

7) अंतिम साक्ष्य में वर्णित संवाद-योजना पर प्रकाश डालिए ।

8) अंतिम साक्ष्य उपन्यास में चित्रित ठाकुर प्रतापसिंह (बाऊजी) का परिचय दीजिए।

9) आदर्श पतिव्रता नारी के रूप में बीजी की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

10) अंतिम साक्ष्य उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

11) अंतिम साक्ष्य उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

आ) ससंदर्भ के प्रश्न :-

1) ''मीनू को लौटा रहा हूँ । उसका विवाह कहीं और कर दो । पोती की उम्र की लड़की को घर में न रखूँगा।'' (पृष्ठ-15)

2) ''बेटी ! लडकियों का अपना ही घर भला ! कब कैसा वक्त आए, किसे मालूम ? हम लोग भी क्या हमेशा बने रहेंगे?'' (पृष्ठ-17)

3) ''छि:- छि: यह कैसी बातें करती हो मीना ! न कहना चाहो, तो मत कहो; लेकिन मैं तुम्हारी बातों से सहमत नहीं हूँ, इतना जान लो ।'' (पृष्ठ-28)

4) ''तकलीफ-भरी यादें किसी के लिए भी कष्टकारी होती है । रोना-धोना, अपमान-तिरस्कार यह तो घर-घर चलता है, यह तो जिंदगी की सच्चाइयां हैं इनसे आदमी भागकर किस गुफा में जाएँगे?'' (पृष्ठ-29)

5) ''माई गॉड! इत्ती गर्मी में भी आराम करने का मुड नहीं । खुद को तो चैन नहीं, बेचारे जानवरों को भी पलभर दम नहीं लेने देगीं।'' (पृष्ठ-38)

6) ''उम्र-भर का जहर तूने मेरे लिए ही संजो रखा था सर्पिणी।'' (पृष्ठ-37)

7) ''क्या जासूसी करने आई थीं।'' (पृष्ठ-37)

8) ''विकी, घर तो तुम लोगों का ही है । अच्छा या बुरा, जैसा भी समझो । अभी तो मैं जिंदा हूँ, मेरे रहते घर छोडने की बात कैसे करता है रे तू?'' (पृष्ठ-40)

9) ''राजपूत के बेटे न लड़ेंगे, तो क्या ब्राह्मण-बनिए लड़ेंगे? मेरे बेटे हैं ... ठाकुर प्रतापसिंह के बेटे क्लर्की-मास्टरी करने के लिए पैदा नहीं हुए।'' (पृष्ठ-42)

10) ''हमें क्या? बाऊ जी मीना मौसी को ले आएँ या पक्का ढंगा की रसूलबाई को, हमें क्या फर्क पड़ने वाला?'' (पृष्ठ-55)

11) ''साला ! शिकायत करता है, मैं कोई बच्चा हूँ, जो बाऊ जी मुझे डांट-डपटकर पढ़ने को मजबूर करेंगे? जो जी में आएगा, करूँगा तेरे बाप का क्या जाता है?'' (पृष्ठ-60)

12) ''जा, चला जा इसी वक्त ! दुबारा घर में कदम न रखना मैं समझूँगा, मेरा एक ही बेटा है।'' (पृष्ठ-60-61)

13) ''यह आपका मामला नहीं है । तनु यहाँ नहीं आएगी । मैंने उसे मना कर दिया है'' (पृष्ठ-66)

14) ''दोस्त! कभी अपने को भूलकर खुली आँखों से दुनिया देखो । तुम-हम लाखों लोगों से ज्यादा खुसनसीब हैं । कम-से-कम हम जी तो रहे हैं । जिंदगी अपने-आप क्या कम खूबसूरत है?'' (पृष्ठ-76)

15) ''वहाँ खुश तो है विकी।'' (पृष्ठ-76)

16) ''बाऊ जी! तुम्हें अकेलेपन की यातना देकर हम किसी ऋण से उऋण तो ही हुए, तुम्हारे स्वप्नों की तसवीर को बदरंग करके हम खुद भी कोई नई तसवीर न बना पाए।'' (पृष्ठ-77)

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) 'संयुक्त परिवार - आदर्श परिवार' विषय पर निबंध लिखिए।

2) 'काश्मीरी संस्कृति और प्रकृति'पर निबंध लिखिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) 'अर्थान्तर' - चंद्रकांता।

2) 'चलती चाकी' - सूर्यनाथ सिंह।

3) 'पचपन खंबे लाल दिवारें' - उषा प्रियवंदा।

4) 'सूरजमुखी अँधेरे के' - कृष्णा सोबती।

●●●

इकाई 3

अंतिम साक्ष्य : पात्र या चरित्र–चित्रण तथा संवाद्

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय – विवरण

3.3.1 अंतिम साक्ष्य : मुख्य पात्र

3.3.2 अंतिम साथ्य : गौण पात्र

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

3.6 स्वयं – अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- उपन्यास में चित्रित मुख्य पात्र और गौण पात्रों से परिचित हो जाएँगे।
- पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं से अवगत हो जाएँगे।
- उपन्यास के संवाद से परिचित हो जाएँगे।
- उपन्यास में चित्रित पात्रों की मनोदशा से अवगत हो जाएँगे।

3.2 प्रस्तावना :

उपन्यास तत्त्वों में कथावस्तु के बाद चरित्र–चित्रण एवं संवाद दो तत्त्व महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। रचनाकार अपने पात्रों का चरित्र–चित्रण अनेक प्रकार से करता है। उपन्यास–कथा प्रस्तुतीकरण एक कला है, जिसमें आरंभ, विकास, संघर्ष, चरमसीमा और अंत होता है। इसमें पात्रों को खड़ा करना सबसे बड़ी चुनौती होती है। संवादों के उतार–चढ़ाव के अनुसार पात्रों की विशेषताएँ सामने आती हैं, जो पात्रों को स्थापित कर देती है। रचनाकार चरित्र–चित्रण के माध्यम से समस्त पात्रों का विवरण पाठकों के समक्ष सजीव बना देता है। दरअसल पात्र जीवन के सुख–दुःख संवादों के माध्यम से ही प्रकट होते हैं। रचनाकार पात्रों के द्वारा पाठकों के हृदय में जितनी उथल–पुथल पैदा करते हैं उतनी ही प्रबलता के साथ हमारी संवेदना जागृत होती है। पात्रों की बुनावट उपन्यास में सफलता के साथ हो जाती है तो ही उपन्यास सफल बन जाता है। चरित्र–चित्रण से पात्रों के मनोभाव, अच्छाई–बुराई और गुण–दोष का वर्णन होता है। वस्तुत: उपन्यास के पात्रों के क्रिया–कलाप द्वारा ही पात्र के गुण–दोष स्पष्ट हो जाते हैं। पात्रों के गुण–अवगुण संवादों के माध्यम से स्पष्ट हो जाते हैं। उपन्यास में पात्र या चरित्र–चित्रण एवं संवादों की भूमिका अहम् होती है। चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में पात्र या चरित्र–चित्रण तथा संवादों की बुनावट सफलता के साथ हो चुकी है; जिसका विवेचन–विश्लेषण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत है–

3.3 विषय विवरण :

प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य पात्र के रूप में मीना, बाऊ जी और गौण पात्र के रूप में बीजी, विकी, जगन, चाची आदि पात्रों का चरित्रांकन हुआ है।

3.3.1 अंतिम साक्ष्य : मुख्य पात्र :

3.3.1.1 मीना :

मीना चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की केंद्रीय पात्र है, पूरी कथा मीना के इर्द–गिर्द घूमती है। मीना अनाथ बालिका और मजबूर जीवन जीने वाली परित्यकता नारी के रूप में 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में चित्रित हुई है। साथ ही मीना नारकीय जीवन से छूटकारा पाने वाली आत्मनिर्भर नारी, लोकप्रिय गायिका तथा संपूर्ण प्रेमिका के रूप में भी चित्रित हो चुकी है; जिसका विवेचन–विश्लेषण निम्न लिखित रूप से प्रस्तुत है–

● **अनाथ बालिका :**

मीना जब छोटी थी तब उसकी माँ गुजर जाती है। तब उसकी जिम्मेदारी उसके पिता पर आ जाती है। मगर जब मीना की उम्र स्टापू खेलने की थी तब पिताजी उसे अकेला छोड़कर चल बसे। यही से मीना के अनाथ जीवन की विडंबना शुरू हो जाती है। उसके चाचा उसे अपने घर ले जाते हैं, मगर मीना को देखते ही चाची गुस्सा हो जाती है– 'उठा लाए क्या परेशानियों की कमी थी?' निष्ठुर चाची अनाथ मीना का खयाल नहीं रखती। अनाथ होने की वजह से ही चाची मीना पर अत्याचार करती है। बारह साल की अनाथ मीना चाची को बोझ लगने लगती है। अनाथ होने की वजह से ही मीना जीवन भर थपेड़े खाती रही। जब बूढ़े लाल उसे छोड़ देता है तभी वह अनाथ होने की वजह से फिर से अपने चाचा–चाची के पास रहने जाती है। चाचा–चाची जो फैसला मीना को लेकर करते हैं वही वह स्वीकार करती है। इसका मुख्य कारण मीना का अनाथ होना है।

● **मजबूर नारी :**

अनाथ मीना चाचा–चाची पर निर्भर थी। इसी वजह से वह चाची का हर फैसला स्वीकार करने के लिए मजबूर है। वह बारह साल की मीना की शादी पचास साल के बूढ़े रंडुवे लाला से करा देती है। शादी के बाद लाला को पता चला है कि पोती समान मीना की सुरक्षा वह अपने बेटों से नहीं कर पाएगा और वे मीना को माँ के रूप में भी स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए वह उसे चाची के पास वापस लौटा देता है। चाची इस बात को सामाजिक अपमान समझकर बूढ़े लाला की जीवन की जमापूँजी पाच हजार रुपए लेकर मीना को वापस लेती है। यहाँ भी मीना चाची के पास वापस आने के लिए विवश है। उसके बाद चाची मीना की शादी आवारा–लंपट जगन से करा देती है, पर मीना शादी करने और जगन के अत्याचार सहने के लिए विवश है। जगन उसे उपभोग की वस्तु मानता है और उपभोग लेने के बाद वह दोस्त मदन के हाथों कोठेवाली को बेच देता है। यहाँ पर मीना बेची जाने के लिए मजबूर है। संगीत मास्टर को वह छोड़ना नहीं चाहती, मगर संगीत शिक्षक की मजबूरी देखकर वह उसे छोड़ने के लिए मजबूर बन जाती है। आखिरकार बाऊ जी के प्रेम में फंसकर आखिर तक प्रेमिका या रखेल बनकर रहने में भी वह मजबूर है।

● **परित्यक्ता नारी :**

चाची मीना की शादी पचास साल के बूढ़े रंडुवे लाला से करा देती है, मगर लाला के बेटे उसे गिद्ध नजर से देखते हैं। बूढ़े लाला अपने बेटे से मीना की सुरक्षा नहीं कर पाएगा इसलिए वे मीना को चाची के पास वापस लौटा देते हैं। चाची उसे सामाजिक अपमान समझती है। तब बूढ़े लाला अपने जीवन की जमापूँजी पाच हजार रुपए देकर मीना की वापसी करा देता है। चाची सौदेबाजी कर मीना को वापस स्वीकार करती है और उसका लांछन मीना के चरित्र पर लगा देती है। तब मीना चाची के पास रहने के लिए मजबूर हो जाती है, मगर वह परित्यक्ता नारी बनकर रह जाती है।

● **नारकीय जीवन से छूटकारा :**

चाची मीना की दूसरी शादी आवारा–लंपट जगन के साथ करा देती है। मुशटंडे जगन से शादी कराकर चाची अपना पल्ला झाड़ देती है, मगर मीना जगन के अत्याचार से तंग आ जाती है। जगन मीना को भोग की

वस्तु समझकर भोगता है और उपभोग लेने के बाद वह ब्याहता पत्नी मीना को धन के लालच में दलाल मदन सिंह के हाथों एक कोठे वाली को बेच देता है। कोठे की मालकिन मीना को एक संगीत मास्टर के पास संगीत सीखाने के लिए भेज देती है। संगीत शिक्षा प्राप्त करते समय मीना भावात्मक रूप से संगीत शिक्षक के साथ जुड़ जाती है। संगीत शिक्षक भला आदमी था। मीना के जीवन में वह देवदूत बनकर आया था। वह उसे गाना-बजाना सीखा देता है और इस लोलुपता के बाजार से बाहर निकालता है। इतना ही नहीं; वह उसे रेडियो आर्टिस्ट बना देता है। रेडियो पर नौकरी दिलाकर और कैलाश के घर में किराये पर कमरा दिलवाकर वह विदा हो जाता है। इस प्रकार संगीत मास्टर मीना को नारकीय जीवन से छूटकारा देता है।

- **लोकप्रिय गायिका :**

जब जगन धन के लालच में दोस्त मदन सिंह के हाथों मीना को एक कोठे वाली से बेच देता है। कोठे की मालकिन उसे एक संगीत मास्टर के पास संगीत सीखाने के लिए भेज देती है। वह उससे अच्छी संगीत की शिक्षा प्राप्त करती है जिसके कारण वह लोकप्रिय गायिका बन जाती है। लोकप्रिय गायिका होने की वजह से ही उसे रेडियो पर संगीत आर्टिस्ट के रूप में नौकरी मिल जाती है। सुरेश की मँगनी में मीना को सब गीत गाने का अनुग्रह करते हैं और बाऊ जी भी ग़ज़ल सुनाने के आदी है। मीना के दर्दभरे गीत बाऊजी को अंदर से हिला देते हैं। मीना का गायन सुनकर बाऊ जी मीना की ओर आकर्षित हो जाते हैं। इस प्रकार मीना एक लोकप्रिय गायिका है।

- **संपूर्ण प्रेमिका :**

मीना बाऊ जी की संपूर्ण प्रेमिका बनकर रह जाती है। मीना मकान मालकिन कैलाश और रमेश के परिवार के माध्यम से बाऊ जी के परिवार से जुड़ जाती है। सुरेश की मंगनी में कैलाश और रमेश के साथ आई मीना के दर्दभरे गीत से बाऊ जी उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। मीना का दुःख और अकेलापन बाऊ जी को आकर्षित करता जाता है। बाऊ जी के सुखी एवं संपन्न परिवार में मीना को सहानुभूति मिल जाती है। बाऊ जी और मीना के प्रेम के बारे में बीजी को तब पता चलता है जब वह विकी को सूट का कपड़ा खरीदने के लिए मीना मौसी को साथ ले जाना चाहती थी इसलिए वह मीना के कमरे में पहुँच जाती है। तब से बीजी बाऊ जी के प्यार से कट जाती है और मीना के प्रति बाऊ जी का प्रेम निरंतर बढ़ता जाता है। मीना और बाऊ जी का प्रेम शारीरिक संबंध तक पहुँच जाता है। दरअसल बाऊ जी के जीवन में मीना का आगमन ही बीजी के मृत्यु का कारण बन जाता है। बीजी की मृत्यु के तेरहवें दिन ही वे मीना को घर ले आते हैं। माँ की मृत्यु के बाद बाऊ जी के दोनों बेटे घर छोड़ देते हैं मगर मीना बाऊ जी का अंत तक साथ नहीं छोड़ती। इसके पीछे कारण मीना का बाऊ जी के प्रति होने वाला प्रेम ही था। मीना चाहती तो बीजी के गुजर जाने के बाद पत्नी का सम्मान पा सकती थी, मगर अंत तक वह बाऊ जी या प्रतापसिंह की प्रेमिका बनकर ही रहना पसंद करती है। स्पष्ट है कि बीजी बाऊ जी की पत्नी नहीं बल्कि संपूर्ण प्रेमिका है।

- **आत्मनिर्भर नारी :**

चाची मीना की दूसरी शादी जगन के साथ करा देती है। आवारा-लंपट जगन धन के लालच में दोस्त मदन सिंह के हाथों मीना को एक कोठे वाली को बेच देता है। कोठे की मालकिन मीना को एक संगीत मास्टर

के पास संगीत सीखाने के लिए भेजती है। संगीत की शिक्षा प्राप्त कर वह एक लोकप्रिय गायिका बन जाती है। रेडियो पर संगीत आर्टिस्ट के रूप में नौकरी करती है। वह कैलाश और रमेश के पास किराये पर कमरा लेकर रहती है, मगर चाची के पास वापस नहीं आती। इस प्रकार मीना एक लोकप्रिय गायिका और आत्मनिर्भर नारी है।

सार यह कि मीना शुरुआत में अनाथ बालिका है। उसके बाद दिए धोखे से वह वह शादीशुदा बन जाती है, वह परित्यक्ता बन जाती है। उसके बाद वह दुबारा शादीशुदा बन जाती है और पति जगन उसे बेचकर वेश्या बना देता है। संगीत मास्टर की मदद से वह लोकप्रिय गायिका बन जाती है। रेडियो पर नौकरी पाकर वह आत्मनिर्भर नारी बन जाती है। वह बाऊ जी की प्रेमिका बनकर बीजी की मृत्यु का कारण बन जाती है। बीजी की मृत्यु के बाद वह बाऊ जी के परिवार का हिस्सा बन जाती है, मगर आखिर तक वह प्रेमिका यानी रखैल बनकर ही रह जाती है। यदि वह दिल से न सोचकर दिमाग से सोचती तो वह फिर से पत्नी का सम्मान पा जाती मगर वह आखिर तक संपूर्ण प्रेमिका बनकर ही रहना पसंद करती है और अपने प्रेमी प्रताप सिंह यानी बाऊ जी का अंत तक साथ देती है।

3.3.1.2 बाऊ जी ऊर्फ प्रतापसिंह :

बाऊजी ऊर्फ प्रतापसिंह 'अंतिम साक्ष्य'उपन्यास के नायक है। वे बीजी के पति है और सुरेश तथा विकी के पिताजी है और मीना से प्रेम करनेवाले प्रेमी है बाऊजी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति यानी इज्जतदार इन्सान है। अपने पत्नी से अपार प्रेम करने वाले बाऊ जी पेशे से ठेकेदार है। उनके व्यक्तित्व में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है–

- **ईमानदार पति और जिम्मेदार पिता :**

बाऊ जी ईमानदार पति और जिम्मेदार पिता है। वे अपनी पत्नी को देशी नाम से पुकारते थे। दिनभर की थकान वे पत्नी को देखकर भूल जाते हैं। शुरुआती दिनों में वे अपनी पत्नी से ईमानदार पति के रूप में सामने आते हैं। वे दोस्तों की महफिलों में ताश के साथ शराब–कबाब के दौरे करते थे मगर अपने बच्चों की जिम्मेदारियाँ बढ़ते ही उसे कम कर देते हैं। वे अपने बच्चों को होशियार समझते हैं। खूब पढ़ाना चाहते हैं और एक को आर्मी ऑफिसर और दूसरे को चीफ इंजीनियर बनाना चाहते थे। वे अपने दोनों बेटों के जरिए जीवन की महक को मुट्ठी में लिए सुखद भविष्य की कामना करते हैं। शांत–सौम्य मनस्थिति में घंटों बैठकर खुले आसमान के नीचे अपने सपनों के ताने–बाने बुनते रहते हैं। वे अपने दोनों बेटों के खुशहाल तथा सुरक्षित भविष्य की कामना करते हैं। बाऊ जी शिकार के शौकिन थे।

- **मेहनती :**

बाऊ जी एक मेहनती इन्सान है। सुखद भविष्य के लिए वे कड़कती धूप में दिन भर सड़कों पर खड़े–खड़े मजदूरों से चख–चख करते हैं, काट्रैक्टरों–इजीनियरों की समस्याओं में सिर खपाते हैं और पसीने से तर–बतर होकर घर वापस लौटते हैं। पत्नी को देखकर वे दिन भर की थकान भूल जाते हैं। अपने परीवार के खुशहाल सुरक्षित भविष्य के लिए दिनभर मेहनत करते रहते हैं।

● **मीना मौसी के प्रति गहरा आकर्षण :**

बाऊ जी और बीजी के बेटे सुरेश की मंगनी में कैलाश और रमेश के साथ उनकी किरायेदार मीना भी बाऊ जी के घर आ जाती है। मीना रेडियो आर्टिस्ट है। मीना को सब गीत गाने का अनुनय करते हैं और बाऊ जी भी ग़ज़ल सुनाने की इच्छा प्रकट करते हैं। मीना के दर्दभरे गीत बाऊ जी को आकर्षित करते हैं। मीना का दुःख और अकेलापन सुनकर वे मीना की ओर अधिक ही आकर्षित हो जाते हैं। इस आकर्षण का पता बीजी को तब चलता है जब वह विकी को सूट खरीदने मीना मौसी के कमरे में पहुँच जाती है। मीना मौसी के प्रति बाऊ जी का यह आकर्षण निरंतर बढ़ता ही जाता है। इसी कारण बीजी की मृत्यु के तेरहवें दिन ही वे मीना मौसी को घर ले आते हैं। इस अनहोनी घटना के बाद दोनों बेटे बाऊ जी का घर छोड़ देते हैं, मगर मीना मौसी हर हाल में बाऊ जी का साथ नहीं छोड़ती जबकि अंत तक वह उनके साथ रहती है। इस प्रकार बाऊ जी मीना मौसी के प्रति आकर्षित थे।

● **रंगीन मिजाज :**

मीना मौसी के आगमन से बाऊ जी का रंगीन मिजाज शुरू हो जाता है। वे बंधना न चाहकर भी अनायास ही मीना मौसी के प्यार में बंध जाते हैं। नारी नाम की जादूई छड़ी से आकर्षित होना बाऊ जी की जबरदस्त कमजोरी थी। मीना मौसी के प्यार ने बीजी के प्यार का आसन हिला दिया और बाऊ जी के जीवन में अनायास ही मीना मौसी का आगमन हो गया। पत्नी द्वारा घर-गृहस्थी का सबकुछ मिलने के बावजूद बाऊ जी के भीतर का कोई कोना खाली था, जो मीना मौसी के संपर्क में आते ही भर गया। भीतर के खालीपन से त्रस्त बाऊ जी मीना मौसी को उस नितांत वैयक्तिक कोने में समेटते गए। बीजी विकी को जब सूट खरीदने जा रही थी। रास्ते में उसे मीना मौसी का खयाल आया। माँ-बेटे मीना मौसी के कमरे में पहुँचे तो वे देखते है कि अंदर बाऊ जी पलंग पर लेटे थे और मीना मौसी उनका माथा सहला रही थी। इससे बाऊ जी का रंगीन मिजाज सामने आता है।

● **महत्त्वाकांक्षी :**

बाऊ जी बहुत महत्त्वाकांक्षी इन्सान थे। उनकी महत्त्वाकांक्षा अपने काम के प्रति थी। उनकी महत्त्वाकांक्षा अपनी प्रेमिका मीना के प्रेम के प्रति थी। प्रेम की खातिर ही बाऊ जी की पत्नी बीजी गुजर जाती है। इसके बावजूद बाऊ जी अपना प्रेम का आकर्षण नहीं छोड़ते। उनकी महत्त्वाकांक्षा के आगे बीजी गुजर जाती है। बीजी के जोने के बाद दोनों बेटे घर त्याग देते हैं, मगर बाऊजी अपनी महत्त्वाकांक्षा नहीं छोड़ते। वे घर में मीना के साथ ही रहने लगते हैं। बिना शादी किए वे मीना को बीजी के मरने के तेरहवें दिन ही घर लाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि बाऊ जी बहुत महत्त्वाकांक्षी इन्सान थे और वे घर में अपनी ही चलाते थे।

● **संगीत प्रेमी :**

बाऊ जी संगीत प्रेमी व्यक्ति है। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से मीना मौसी को ग़ज़ल गाने की फरमाईश की थी। मीना मौसी की ग़ज़लों से ही वे ताड़ लेते हैं कि मीना के सीने में कोई कसक है। संगीत के रसिया होने के

कारण ही प्रताप औरतों के बीच आकर जम जाते हैं। मीना का दर्दीला स्वर तथा संगीत की ऊँची-ऊँची लहरियाँ वे मंत्र-विद्ध होकर सुनते रहें। उनका अतिरिक्त उत्साह मीना की ओर मोहाविष्ट करता रहा। रात के अंधेरे को चीरता मीना का दर्दभरा स्वर उनके दिलों में हूक भरता रहा, जिससे वे सो न सके। वे मीना के दर्दीले स्वर को अपने सीने के भीतर महसूसते रहें। इस प्रकार प्रताप संगीत प्रेमी थे।

- **संवेदनशील व्यक्ति :**

बाऊ जी एक संवेदनशील इन्सान है। मीना के घर से वे बिना खाना खाए घर लौट जाते थे क्योंकि कहा करते थे कि देशी राह देखती होगी। मीना और बाऊ जी के नाजायज संबंध का पता जब बीजी को चल जाता है उसी दिन से वे हररोज शाम घर जल्दी आने लगे, शांत रहने लगे। पत्नी की मृत्यु के बाद तेरहवें दिन वे मीना को घर ले आते हैं मगर वे उसे पत्नी का सम्मान नहीं दे पाते क्योंकि वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे। उनकी संवेदना अपनी पत्नी बीजी से गहराई के साथ जुड़ी हुई थी।

सार यह कि बाऊ जी सूझबूझ से काम लेने वाले दूरदर्शी व्यक्ति थे। वे शिकार के शौकीन व्यक्ति थे। भावनाओं के वश में होकर वे मीना से प्रेम करने लगते है। उन्होंने पत्नी और बच्चों के साथ धोखा देने का साहस किया; जिसमें वे अपनी पत्नी को खो बैठे। बाऊ जी मीना मौसी से प्रेम करते रहें जो उन्हें बीजी से न मिलता रहा। वे प्रेमिका और पत्नी के बीच उलझते रहे। उनके जीवन की सूझबूझ, समझदारी मीना के प्रेम के आगे छोटी पड़ गई। बीजी के जाने के बाद परिवार बना रहे इसलिए वे मीना मौसी को घर लाते हैं, मगर लाख चाहने पर भी वे परिवार को जोड़ न सके। विकी और सुरेश घर छोड़कर चले गए। बाऊ जी का परिवार मीना मौसी के आगमन से दरकता गया, जो आखरी तक जुड़ नहीं पाया। संक्षेप में बाऊ जी एक ईमानदार पति और जिम्मेदार पिता, मेहनती, महत्त्वाकांक्षी, संवेदनशील और संगीत प्रेमी व्यक्ति है जो मीना मौसी के प्रति काफी आकर्षित थे। रंगीन मिजाज के बाऊ जी आखिरकार अपने दरकते परिवार को बचाने में असफल रहे दिखाई देते हैं।

3.3.2 अंतिम साक्ष्य : गौण पात्र :

3.3.2.1 बिजी :

चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की बीजी प्रतापसिंह ऊर्फ बाऊ जी की पत्नी है। वह सुरेश और विकी की माँ है। बीजी उन भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है, जो अधिकांश समय अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ संभालने में बिताती है। अन्य महिलाओं की तरह वह आसपास के घरों में अपना समय नहीं गँवाती। बीजी कोमल दिल की सहनशील नारी है। वह ऊँची आवाज तक सह नहीं पाती। पति, घर और बच्चे ही बीजी की दुनिया है। गृहिणी, पत्नी और माँ की लक्ष्मण रेखाओं को वह कभी नहीं लाँघती। घर, परिवार और बच्चों की छोटी-मोटी जरूरतें पूरी करना और हँसी-मनुहार में संतुष्टि मानना ही बीजी की खासियत है। वह एक निष्ठावान कामकाजी औरत है, जो अपने काम से काम रखती है। दिन भर वह अकेली खटती रहती है। मध्यवर्गीय शील-संस्कारों से भरीपूरी नारी बीजी बहुत ही महत्त्वाकांक्षी नारी नहीं है।

बीजी बहन कैलाश दवारा किरायेदार मीना की दर्दभरी कहानी सुनकर व्यथीत हो जाती है। बीजी के आदेश पर ही विकी-सुरेश मीना को 'मीना मौसी' कहते हैं। वह अपने पति प्रताप से मीना के बारे में संवेदना प्रकट करती है, मगर एक दिन जब विकी के लिए सूट का कपड़ा खरीदने जा रही थी तब वह मीना को भी साथ लेकर चलना चाहती थी। इसलिए वह मीना के कमरे पर जाती है तब वह देखती है कि 'भीतर बाऊ जी पलंग पर लेटे थे और मीना मौसी अपने शरीर के तमाम अवरणों से बेखबर जाने किस भावाकाश में उड़ाने भर रही थीं।' बीजी को देखकर मीना हड़बड़ाकर उठ खड़ी हो गई। इन दोनों के प्रेम संबंधों का पता बीजी को तुरंत चल जाता है। प्रतापसिंह पर उसका कोई असर नहीं हुआ, बल्कि वे बीजी को ही डांटते हैं-'क्या जासूसी करने आई थी?' वह अपने पति से कुछ बोल नहीं पाती, मगर मीना से जरूर कहती है कि 'उम्रभर का जहर तूने मेरे लिए ही संजो रखा था सर्पिणी।' इस घटना के बाद बीजी और बाऊ जी का संवाद ही खत्म हो जाता है। बेटा विकी दोनों के बीच पुल बांधने का प्रयास जरूर करता है, मगर बीजी का मन मीना और प्रतापसिंह के प्रेम संबंधों को स्वीकार नहीं करता। परिणामी बीजी हमेशा दुःखी रहने लगती है। उसे महसूस हुआ कि उसका अपना आदमी उसके अस्तित्व को नकार रहा है। अपने को महत्त्वपूर्ण समझने वाली बीजी, घर की चक्की में चाक की तरह घूमती बीजी को इन दुर्भाग्यभरे दिनों में लगा कि वह एकदम फालतू हो गई है। बीजी पर हुए मानसिक आघात के कारण उसका प्रेरणास्रोत अचानक सूख जाता है। दरअसल बीजी मीना और बाऊ जी के नाजायज संबंध का पता चलने पर वह जीवन से हार जाती है। उसका मामूली बुखार असाध्य तपेदीक बीमारी में तब्दील हो जाता है। उसकी जीने की इच्छा मर जाती है। प्रताप और मीना का विश्वासघात वह सह नहीं पाती। पराजय की पराकाष्टा हो जाती है। परिणामी वह अंदर ही अंदर घुटकर रह जाती है और अंतत: शरीर भी उसका साथ छोड़ देता है। इस घटना से बीजी का घर उजड़ जाता है। बीजी के जाने के बाद सुरेश और विकी घर छोड़ देते हैं। पश्चातापदग्ध बाऊ जी इस बीच गुजर जाते हैं। बाऊ जी के मकान को घर बनाने का काम बीजी ने ही किया था, मगर उसके जाने के बाद उनका घर, घर नहीं रह पाता जबकि बिखर जाता है, दरकता जाता है। बीजी का घर बिक जाता है और सामान नीलाम हो जाता है। बीजी की तड़प ही उपन्यास में अंतिम साक्ष्य बनकर रह जाती है।

3.3.2.2 विकी :

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के गौण पात्र में विकी एक महत्त्वपूर्ण पात्र है। बाऊजी की मृत्यू के बाद सुरेश का घर न आने का निर्णय मायूसी भरे अपने घर में विकी कुछ सोचता हुआ नजर आता है तथा बीजी के न होने के कारण घर की दुर्दशा तथा बीजी के रहते घर की सुव्यवस्था आदि घटनाक्रम को विकी मूक दर्शक बनकर भोक्ता हुआ पूरे उपन्यास में उपस्थित है। विकी बीजी और प्रताप का बेटा है। वह अपनी माँ बिजी से बहुत प्यार करता है। विकी जब छोटा था तब उसके बालमन पर टूटते पारिवारिक घटनाओं का आघात होता है। दरअसल विकी बहुत ही संवेदनशील लड़का है। अपने माता-पिता का बहुत खयाल रखता है। वह माँ के सुख-दुःख का साथी है, पिता प्रतापसिंह का लाड़ला बेटा है और अपने माता-पिता का आज्ञाकारी बेटा है। विकी अपनी पढ़ाई-लिखाई की ओर ध्यान देता है और अपनी बड़े भाई सुरेश की आवारागर्दी पर रोक लगा देता है।

तनु के प्रति विकी के मन में संवेदना के तार जुड़ जाते हैं, मगर उस पर कोई आंच आए, ऐसी कोई हरकत वह नहीं करता। हर हाल में वह अपनी माँ का साथ नहीं छोड़ता। बीजी की मृत्यु के बाद घर त्यागकर दिल्ली के एक कॉलेज में नौकरी करता है जहाँ उसकी मुलाकात मिस नीला सिंह से हो जाती है। कुछ ही दिनों में वह सिंह परिवार का सदस्य बन जाता है। बाऊ जी के मृत्यु के बाद विकी घरबार बेचकर सदा के लिए दिल्ली चला जाता है।

3.3.2.3 जगन :

जगन 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास का गौण पात्र है। जगन मीना का दूसरा पति है। बूढ़े लाला से मीना की शादी टूट जाती है। उसके बाद चाची मीना की शादी आवारा-लंपट जगन से करा देती है। जगन का शरीर मुशटंडे जैसा है। हर-दम एक तुर्श खुरदुरा भाव जगन के भयानक चेहरे पर मढ़ा रहता था। वह एठी हुई तीखी मूछे रखता है। चौक पर छोले उबालकर बेचने का व्यवसाय करता है, जिसमें पत्नी मीना उसका साथ देती है। वह मीना के साथ अमानवीय व्यवहार करता है। वह मीना को उपभोग की वस्तु मानता है। इसी कारण वह उसका उपभोग लेने के बाद ब्याहता पत्नी मीना को धन के लालच में मदन सिंह के हाथों एक कोठेवाली को बेच देता है। जैसा स्वभाव जगन का है वैसी ही उसकी सोच है। दरअसल वह सोचता है कि वह कब तक गरीबी में जीवन बिताएगा, इसलिए वह मीना को बेच देता है। मीना को लोलुपता के बाजार में धकेलनेवाला कोई और नहीं जगन ही था। वह इतना बीभत्स था कि शाम होते ही मीना अनाम दहशत से घिरने लगती थी। मीना को याद भी नहीं कि उसने कभी उससे मुस्कराकर बात की होगी। उसका प्यार करने का ढंग बहुत ही कठोर था। जगन पर नशे का खुमार रात भर बना रहे, सुबह तक खर्राटे भरता रहे और उसे अकेला ही रहने दे, इसलिए वह भगवान से प्रार्थना किया करती थी ताकि उसके दुखते तन-मन को राहत मिले। इस तरह जगन की दहशत मीना को हमेशा बनी रहती थी।

3.3.2.4 चाची :

चंद्रकांता कृत 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मीना की चाची गौण पात्र है। चाची अपने घर में चाचा की एक चलने नहीं देती बल्कि परिवार की सारी बागड़ोर संभालती है। वह झूठी औरत है। बूढ़े लाला से शादी कराते समय मीना की उम्र बीस साल बता देती है। वह बारह साल की मीना को बोझ समझकर उसकी शादी पचास साल के रंडुवे लाला से कराती है। जब वे पहली बार मीना का मुँह देखते हैं तब उसे अपने पोती की याद आती है। लाला के बेटे उसे माँ के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। पोती समान उम्र की मीना पर जब अपने बेटों की गिद्ध दृष्टि पड़ती है तब लाला उसे वापस लौटा देता है, मगर इस बात को चाची सामाजिक अपमान मानती है और लाला के साथ सौदे पर उतर आती है। यह सौदा वह पांच हजार रुपयों में तय करती है, मगर इसका लांछन मीना के चरित्र पर लगा देती है। फिर चाची मीना की शादी आवारा-लंपट जगन से करा देती है। असल में चाची के कारण ही मीना जीवनभर थपेड़े खाती रही। सार यह कि मीना की चाची हृदयहीन, निष्ठुर और मीना के साथ अमानवीय व्यवहार करने वाली औरत है।

3.3.2.5 सूरेश :

'अंतिम साक्ष' में सूरेश गौण पात्र के रूप में सामने आता है। प्रतापसिंह का बडा बेटा है वह। बहुत लाड-प्यार से वह बिगड गया है। बचपन से ही आवारा, चंचल, बेधडक और लडकियों के पीछे भागनेवाला है। आवारा गर्दी, मारपीठ और लडकियों को घुमाना उसका शौक है। सूरेश बाऊजी की तरह लंबा-चौडा और हट्टा-कट्टा नौजवान है। बचपन में वह पंडित की बीवी को नहाते हुए देखता रहता है। मर्यादा की सारी हदे वह पार करता है। अपने सरल-सीधे भाई विकी को वह चिढाता है। रातभर वह 'लवमशीन', 'डोलबेबी' जैसी पत्रिका पढता है। पिता की तरह रंगेल सूरेश नशापान भी करता रहता है। कॉलेज में वह मारपीट करता रहता है। कई साल कॉलेज में इन्टर की पढाई करता है। प्रतापसिंह के मीना मौसी के संबंधों के जानकर वह और बिगडेल बन घर में ही लडकियाँ लाता है। सूरेश के इस बिगडैल आचरण को देख बाऊजी उसका खर्चा पानी बंद कर देते है। अपनी चुगली करनेवाले प्रो. गुप्ता पर चाकू चलाता है। बाऊजी पर बंदूक तान देता है। बचपन से ही वह निडर है। उसके आवारा गर्दी से तंग आकर उसकी मंगनी टूट जाती है तो वह दीवान की बेटी मीना को भगा ले जाता है। बाऊजी के अलमारी से रुपये चुरा ले जाता है। जब रुपया खत्म हो जाता है और फाकाक्शी की नौबत आती है तो मीना उसे छोडकर चली जाती है। अंत में अपने मित्र की सलाह मानकर सूरेश फौज में भर्ती हो जाता है। बाऊजी की मृत्यु के बाद घर नहीं आता और विकी को घर की जिम्मेदारी संभालने कहता है।

इसके अलावा बीजी की मुँहबोली बहन कैलाश, कैलाश का पति रमेश, कोठे की मालकिन, संगीत मास्टर, मीना का चाचा, विकी की पहली प्रेमिका तनु, दूसरी मिंस नीला सिंह, कोठे का दलाल मदन सिंह आदि का भी गौण पात्र के रूप में चरित्र-चित्रण हो चुका है।

- **संवाद या कथोपकथन :**

पात्रों के पारस्पारिक वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। संवाद के कारण उपन्यास में वास्तविकता का आभास होता है। संवाद ही पात्रों के चरित्रों का उद्‌घाटन करते हैं, कथानक को गति देते हैं, समाज विशेष की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हैं, वातावरण की सृष्टि करते हैं और उपन्यास में सजीवता ला देते हैं। विचार एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए संवाद बड़े कारगर सिद्‌ध होते हैं। संवादों के कारण ही घटनाओं की कार्य-कारण श्रृंखला का बोध होता है। संवादों से ही पात्रों की बौद्‌धिक और मानसिक स्थिति का आभास पाठकों को किया जा सकता है। संवाद से ही पात्रों की संवेदना, क्रिया-प्रतिक्रिया, स्थलकाल की अनुकूलता-प्रतिकूलता के संकेत मिल जाते हैं। संवाद पात्रों के व्यक्तित्व को उजागर करते हैं, सार्थकता एवं स्वाभाविकता ला देते हैं, भावात्मकता एवं विचारात्मकता को बनाए रखते हैं। उपन्यास में संवादों के कारण ही सजीवता आ जाती है। चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में संवाद उक्त स्थितियों के कारण ही आए हुए हैं। हालाँकि प्रस्तुत उपन्यास के संवाद प्रासंगानुकूल एवं पात्रानुकूल है जो वास्तविकता का आभास देते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के संवाद कहीं-कहीं लंबे-लंबे तो कुछ-कुछ स्थानों पर संक्षिप्त बन पड़े है तो कुछ कुछ स्थानों पर बोझिल हो चुके हैं। लेकिन एक बात संवादों में अवश्य नजर आती है वह है रोचकता। इस संदर्भ में जगन और मीनू के संवाद उपन्यास में रोचक बन पड़े हैं। जगन जब मीनू को अपने दोस्त मदनसिंह की मदद से लोलुपता के बाजार

में धकेलना चाहता है उस दिन वह सुबह जल्दी उठता है, नहा-धोकर तैयार हो जाता है। तब मीना और जगन के संवाद रोचक बने हुए हैं- ''मीनू हड़बड़ाकर उठी 'सब खैर तो है?'

जगन मुसकराकर बोला, 'आज मदनसिंह के घर जाना है। मेरा पुराना यार है। कल ही बाजार में मिला। बाम्बे में फिल्म कंपनी में काम करता है। चलो, तुम भी तैयार हो जाओ।

'मैं? मैं क्या करूँगी जाकर? मैं तो उसे जानती भी नहीं।'

'कैसी जानोगी?' वह इधर थोड़े रहता है? साल-भर बाद आया है। आज कई दोस्तों को पार्टी दी है।'' (चंद्रकांता, अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ -18) उक्त संवादों से विदित होता है कि जगन अपनी जरूरत पूरी होने के बाद मीनू को धोखे से दलाल मदन सिंह को बेच देता है। पार्टी जाने का झांसा देकर उसे लोलुपता के बाजार में धकेल देता है। इसी कारण उपरोक्त संवाद रोचक, धूर्त एवं जिज्ञासावर्धक बने हुए है।

बीजी की मृत्यु के बाद बाऊ जी को अनिद्रा का रोग लग जाता है। वे रात भर जागते रहते थे, करवटे बदलते रहते थे। मीना और बाऊ जी के संवादों से दुःख और दर्दभरा माहौल उपन्यास में चित्रित हुआ है। बीजी के जाने के बाद बाऊ जी दोस्तों की महफिलें छोड़ देते हैं, दफ्तर जाते हैं और सीधे घर लौट आते हैं। वे सभी नाते-रिश्तेदारों से कटे-कटे रह जाते हैं, अपने आप में खोये-खोये से रहते हैं। रोजमर्रा के कामों को पूरा करने में मीना मौसी उन्हें साथ देती रहती है। बाऊ जी हमेशा चुप-चुप रहते हैं। कभी-कभी आधी रात वक्त-बेवक्त उठकर मीना को जगा देते हैं थे तब उनके संवादों से बेचैनी झलकती है; जैसे -

''सो गई क्या?'

मीना मौसी हल्की आहट से उठ बैठतीं-

'नहीं तो! पानी लाऊँ?'

'नहीं, पानी-वानी-कुछ न चाहिए। अगर नींद न आती हो तो...।'

'नहीं आती है, कहो?'

'वह ग़ज़ल सुना दोगी? तुम्हारे गले से अच्छी लगती है।' बाऊ जी गुनगुनाने लगते, ''खत्म होकर रहेगा सफर ही तो है, खम-ब-खम ही सही, रहे गुजर ही तो है।' मीना मौसी रुंधे गले से बाऊ जी का साथ देतीं। आँखों में पानी छलक आता, तो बाऊ जी के सीने पर टिकाकर भीतर फूटती रुलाई को होठ काटकर रोक लेती।'' (चंद्रकांता, अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ-47) उक्त सार्थक संवाद प्रसंगानुरुप और वातावरण की आवश्यकतानुरुप उपन्यास में प्रयुक्त हो चुके हैं। बाऊ जी और मीना की दर्दभरी ग़ज़ल के संवादों से दुःख के प्रसंग की अभिव्यक्ति हो चुकी है।

बाऊ जी अपने एक बेटे को आर्मी ऑफिसर बनाना चाहते हैं और दूसरे को चीफ इंजीनियर बनाना चाहते हैं। यही बात वे अपनी पत्नी बीजी को बताना चाहते हैं जो प्यार से उसे देशी कहते हैं। बीजी लड़ाइयों की डर की वजह से अपने बेटे को आर्मी में भेजना नहीं चाहती। तब बाऊ जी हंसकर बीजी को समझाते हैं, उस समय

आत्मालाप करते संवाद लंबे-लंबे हो जाते हैं- ''लड़ाइयाँ क्या हमेशा होती हैं देशी? अगर हों भी तो मुल्क के लिए मरने वाला शहीद कहलाता है। मैं तुम्हें अखबार के समाचार इसीलिए तो सुनाता हूँ कि तू दिल जरा बड़ा कर। वियतनाम में जिन माँओं के लाल काम आए, वे इतिहास में अमर हो गए।''अपने चौड़े सीने पर हाथ फेरकर वे चमकती आँखों से जैसे आत्मालाप करते- 'राजपूत के बेटे न लड़ेंगे, तो क्या ब्राह्मण-बनिये लड़ेंगे?' बीजी सोच में पड़ जाती। बाऊ जी का गर्व-भरा स्वर उनमें आतंक-सा जगाता 'मेरे बेटे हैं। ठाकुर प्रतापसिंह के बेटे। क्लर्की-मास्टरी करने के लिए पैदा नहीं हुए।'' (चंद्रकांता- अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ-42) उक्त संवादों में बाऊ जी का क्षत्रियों होने का अहं तथा आत्मालाप स्पष्ट झलकता है। यहाँ लेखिका बीजी की मन की बातें स्पष्ट कर देती है। उत्तर में बाऊ जी के आत्मालापी संवादों से अपने बेटे की होशियारी और गर्व प्रकट होती है।

कैलाश और रमेश मीना को घूमने के लिए ले जाते तब प्रस्तुत उपन्यास के संवाद काफी जिज्ञासावर्धक एवं कौतुहलवर्धक बने हुए हैं। डेढ़-दो मील चलने के बाद मीना के पैर दर्द करने लगे हैं तब रमेश भाई बहला-फुसलाकर उसे आगे खींचते ही जा रहे थे-'आहा! वह देखो क्या ठंडी हवाएँ चल रही हैं। अरे भई, तुम तो गुम्मट तक चलते-चलते ही थक गई। ऐसी नाजुक तो हमारी कैलाश भी नहीं रही।'

'हटो, मैं कभी नाजुक रही भी?' कैलाश ने रमेश को मीठा-सा झिड़क दिया। उलाहना भी शायद, 'थोड़ी-बहुत नजाकत जो थी भी पहले, तुम्हारे घर आते ही वह चूल्हे में झोंक दी।'

'चूल्हे में गई या बावड़ी में, सो तो मैं नहीं जानता; पर थे बड़े नखरे तुम्हारे।'

'क्या खामख्वाह झूठ बोलकर अपना ईमान खराब कर रहे हो? एक भी नखरे की बात की हो तो बता दो?' कैलाश ने अल्टीमेटम दिया।

'बता दूँ?'

'बिलकुल।'

'इजाजत?'

'हाँ-हाँ बोलो न। बोलोगे क्या, कोई बात भी हो?'

'अब देखा भई, तुम्हारी यह नई सहेली जी है, इनके सामने बोल दूँ तो कहोगी, पोल खोल रहा हूँ और तुम जानती हो, मैं तुम्हें नाराज नहीं करना चाहता। अपनी वाली तो एक ही है न?'

'हटो, ज्यादा मक्खन मत लगाओ। बात ही कुछ नहीं, तो क्या कहोगे?'

'अजी क्यों नहीं है बात? वह जब नयी-नयी घर में आई थीं, क्या बिहारी की नायिका लग रही थीं। वह घड़ी के पेण्डुलम की तरह हवा के झोंके से, हिलने लगती थीं। मैं तो खिड़कियाँ-दरवाजे बंद कर रखता था। कहीं जोर की हवा चली, तो हुजूर गश खाकर गिर न पड़ें और आप कह रही हैं, कोई नजाकत न थी।'' (चंद्रकांता, अंतिम साक्ष्य, पृष्ठ - 24-25) कैलाश और रमेश के उक्त संवाद जिज्ञासावर्धक, प्रेमियों की

नोकझोंक और कौतुहलवर्धक बने हुए हैं, जो उपन्यास में प्रसंगानुरुप प्रयुक्त हो चुके हैं। उक्त संवादों में संक्षिप्तता, रोचकता और जिज्ञासा अंत तक बनी हुई है।

सार यह कि 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल, प्रासंगानुकूल, संक्षिप्त, वास्तविकता का आभास पैदा करने वाले, कहीं-कहीं पर लंबे-लंबे तो कहीं-कहीं बोझिल बने हुए हैं, लेकिन संवादों में रोचकता, जिज्ञासा और कौतुहलवर्धकता अवश्य दिखाई देती है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1) बाऊ जी का नाम ..... है।

क) विकी ख) रमेश ग) प्रताप घ) सुरेश

2) मीना की पहली शादी उम्र के ..... साल में हुई थी।

क) 12 ख) 13 ग) 14 घ) 15

3) मीना की पहली शादी ..... के साथ होती है।

क) जगन ख) बूढ़े लाला ग) प्रताप घ) विकी

4) तेरी किस्मत अच्छी थी कि ..... ब्याह के लिए राजी हो गया।

क) विकी ख) बूढ़े लाला ग) प्रताप घ) जगन

5) बूढ़े लाला ने चाची को ..... हजार रुपए दिए।

क) चार ख) छह ग) पाच घ) सात

6) विकी ..... से प्रेम करता है।

क) मिस सिंह ख) मीना ग) चाची घ) कैलाश

7) जगन ने मीना को ..... के हाथों बेचा।

क) बूढ़े लाला ख) प्रताप सिंह ग) मदन सिंह घ) रमेश

8) बाऊ जी के बीमार होने की खबर विकी को ..... देती है।

क) कैलाश ख) तनु ग) नीला घ) मीना

9) सुरेश और विकी के पिता का नाम ..... है।

क) प्रताप ग) लाला ग) मदन घ) जगन

10) कैलाश के पति का नाम ..... है।

क) प्रताप ग) रमेश ग) मदन घ) जगन

11) कैलाश मीना को ..... की मँगनी में ले जाती है।

क) प्रताप ग) रमेश ग) सुरेश घ) विकी

12) छोटी उम्र में दुःख का भरपूर स्वाद ..... ने चखा था।

क) कैलाश ख) बीजी ग) नीला घ) मीना

13) मास्टर मीना को ..... में नौकरी दिलाता है।

क) दूरदर्शन ख) रेडियो ग) समाचार पत्र घ) कोठे

14) कैलाश ने मीना को ..... के परिवार से मिलाया।

क) कैलाश ख) बीजी ग) नीला घ) मीना

15) सुरेश ..... में नौकरी करता है।

क) पुलिस ख) कॉलेज ग) कंपनी घ) फौज

16) ..... के आदेश पर विकी-सुरेश मीना को 'मीना-मौसी' कहने लगे।

क) कैलाश ख) बीजी ग) नीला घ) मीना

17) कैलाश और रमेश के बेटे का नाम ..... है।

क) मिट्ठू ख) सुरेश ग) विकी घ) जगन

3.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) शहतीर - बड़ा और लंबा लट्ठा।

2) अन्यमनस्क - जिसका चित्त कहीं ओर हो, अनमना।

3) शऊर - तरीका, ढंग, सामान्य योग्यता या लियाक़त, विवेक, बुद्धि।

4) मुंडेर - मुँडेरा, खेत की मेंड़।

5) मजलिस - बैठने की जगह, सभा, जलसा।

6) ऊलजलूल -ऊटपटांग, अंड बंड, विसंगत, बेवकूफ, अशिष्ट।

7) वितृष्णा - तृष्णा का अभाव, विकट तृष्णा।

8) जहन्नुम - नरक।

3.6 स्वयं - अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) ग) प्रताप, 2) क) 12, 3) ख) बूढ़े लाला, 4) घ) जगन, 5) ग) पाच, 6) क) मिस सिंह, 7) ग) मदन सिंह, 8) घ) मीना, 9) क) प्रताप, 10) ग) रमेश, 11) ग) सुरेश, 12) घ) मीना, 13) ख) रेडियो, 14) ख) बीजी, 15) घ) फौज, 16) ख) बीजी, 18) क) मिट्ठू।

3.7 सारांश :

१. चंद्रकांता लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मुख्य पात्र के रूप में नायक प्रताप सिंह, नायिका मीना और गौण पात्र के रूप में बीजी, विकी, जगन, चाची आदि का चरित्र-चित्रण हुआ है।

२. विवेच्य उपन्यास की नायिका मीना अनाथ बालिका, शादीशुदा, परित्यक्ता, वेश्या, लोकप्रिय गायिका, रखैल, सच्ची प्रेमिका और आत्मनिर्भर नारी के रूप में पाठकों के सामने आती है। बीजी की मृत्यु के बाद वह बाऊ जी के परिवार का हिस्सा बन जाती है मगर आखिर तक वह प्रेमिका यानी रखैल बनकर ही रह जाती है। यदि वह दिल से न सोचकर दिमाग से सोचती तो वह फिर से पत्नी का सम्मान पा जाती, मगर वह आखिर तक संपूर्ण प्रेमिका बनकर अपने प्रेमी प्रताप सिंह का साथ देती है।

३. प्रस्तुत उपन्यास के नायक बाऊ जी ऊर्फ प्रतापसिंह सूझ-बूझ से काम लेने वाले दूरदर्शी, हमेशा कर्तव्य के प्रति सजग, ईमानदार पति, जिम्मेदार पिता, इज्जतदार इन्सान, मेहनती, महत्त्वाकांक्षी, संवेदनशील और संगीत प्रेमी व्यक्ति है जो मीना मौसी के प्रति काफी आकर्षित प्रेमी के रूप में चित्रित हैं। रंगीन मिजाज के बाऊ जी आखिरकार अपने दरकते परिवार को न बचा सके।

४. उपन्यास में गौण पात्र के रूप में बाऊ जी का बेटा सुरेश, बीजी की मुँहबोली बहन कैलाश, कैलाश का पति रमेश, कोठे की मालकिन, संगीत मास्टर, मीना का चाचा, विकी की पहली प्रेमिका तनु, दूसरी मिंस नीला सिंह, कोठे का दलाल मदन सिंह आदि का चरित्र-चित्रण हो चुका है।

५. 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल, प्रासंगानुकूल, संक्षिप्त, वास्तविकता का आभास पैदा करने वाले, कहीं-कहीं लंबे-लंबे तो कहीं-कहीं बोझिल बन पड़े हैं। इसके अलावा संवादों में रोचकता, जिज्ञासा और कौतुहलवर्धकता अवश्य दिखाई देती है।

3.8 स्वाध्याय :

- **दीर्घोत्तरी प्रश्न-**

1) मीना का चरित्र-चित्रण कीजिए।

2) बाऊ जी की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

3) बीजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4) अंतिम साक्ष्य उपन्यास के संवादों पर प्रकाश डालिए।

- **लघुत्तरी प्रश्न-**

1) विकी की चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

2) जगन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3) चाची के गुण-दोषों को रेखांकित कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) मीना जैसी अपने आसपास के नारी पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

2) भारतीय संस्कृति का प्रतीक बीजी जैसी नारी की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

3.9 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. अंतिम साक्ष्य - चंद्रकांता, अमन प्रकाशन, कानपुर।
2. चंद्रकांता कथा - साहित्य : समकालीन परिवेश तथा संदर्भ - डॉ. अमोल कासार, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
3. चंद्रकांता कथा - साहित्य - डॉ. जगदीश चव्हाण, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
4. चन्द्रकान्ता संपूर्ण साहित्य का अनुशीलन- डॉ. ममता रावत, विनय प्रकाशन, कानपुर।

●●●

इकाई 4

'अंतिम साक्ष्य' : देश काल तथा वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय – विवरण

- 4.3.1 'अंतिम साक्ष्य' : देश काल तथा वातावरण
- 4.3.2 'अंतिम साक्ष्य' : भाषा–शैली
- 4.3.3 'अंतिम साक्ष्य' : उद्देश्य
- 4.3.4 'अंतिम साक्ष्य' : समस्याएँ

4.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.5 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

- 4.8.1 लघुत्तरी प्रश्न
- 4.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न
- 4.8.3 ससंदर्भ व्याख्या के प्रश्न

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य :

इस इकाई का अध्ययन के बाद आप–

1. उपन्यास में चित्रित परिवेश से परिचित होंगे।
2. चंद्रकांता की भाषा–शैली से अवगत होंगे।
3. अंतिम साक्ष्य उपन्यास के उद्देश्य से परिचित होंगे।
4. पारिवारिक विघटन और उसकी कठिनाइयों से परिचित होंगे।
5. अंतिम साक्ष्य उपन्यास में चित्रित समस्याओं से अवगत होंगे।
6. चंद्रकांता द्वारा प्रयुक्त क्षेत्रीय भाषा के शब्दों से परिचित होंगे।
7. नारी जीवन की दर्दनाक पीड़ा को समझ जायेंगे।

4.2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास विधा सबसे प्रभावशाली विधा मानी जाती है। यह एक ऐसी गद्य विधा है, जिसमें मानवीय समाज का सर्वांगीण चित्रण सूक्ष्मता एवं वास्तविकता के साथ किया जाता है। चंद्रकांता द्वारा लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास इस बात का सही प्रमाण माना जाता है। 'अंतिम साक्ष्य' चंद्रकांता का प्रारंभिक उपन्यास है। यह उपन्यास पारिवारिक विघटन और नारी द्वारा अपने अस्तित्व को बनाए रखने की कोशिश करनेवाले पात्रों की कहानी है। इस उपन्यास के पात्र टूटते हैं, बिखरते हैं और बड़ी उम्मीद से फिर से खड़े होने का प्रयास करते हैं।लेखिका ने इस उपन्यास में रिश्तों और प्रेम संबंधों को बड़े मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास याने मीना मौसी की त्रासदी की कहानी है। इस उपन्यास में नारी के दर्दनाक जीवन को चित्रित किया है। यह उपन्यास भिन्न पारिवारिक परिवेश की सच्चाइयों से परिचित कराता है। पारिवारिक परिवेश की गहरी पकड़ चंद्रकांता के उपन्यासों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। जो उन्हें समकालीन कथालेखन में अपनी एक अलग पहचान देती है। इस उपन्यास में चित्रित कथानक को सजीव बनाने के लिए लेखिका ने देश काल तथा वातावरण तत्त्व का बड़ी सशक्तता से प्रयोग किया है। कश्मीर का प्राकृतिक वर्णन इस उपन्यास की कथावस्तु को सजीव बनाता है। इस तत्त्व के साथ लेखिका ने यहाँ भाषा और शैली के विविध प्रयोग प्रस्तुत करते हुए अपनी कुशलता का परिचय दिया है।पारिवारिक विघटन की बात को उद्देश्य तत्त्व के रूप में प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास नारी की दर्दभरी व्यथा को चित्रित करता है। प्रस्तुत इकाई में इस उपन्यास में चित्रित इन्हीं बातों की विस्तृत चर्चा की गई है।

4.3 विषय विवरण :

चंद्रकांता द्वारा लिखित 'अंतिम साक्ष्य' यह एक लघु उपन्यास है। समीक्षात्मक दृष्टि से इस उपन्यास के प्रति देखें तो पारिवारिक विघटन की सच्चाई चित्रित करनेवाली यह एक सफल रचना है। इसमें लेखिका ने कश्मीर की प्रकृति के साथ ही अनैतिक संबंध तथा विवाह बाह्य संबंध रखने के कारण सुखी परिवार टूटकर काँच के

समान बिखर जाने का। मार्मिक चित्रण अंतिम साक्ष्य उपन्यास के माध्यम से रेखांकित किया है। आज भी समाज में ऐसे ही सुखी परिवार किसी तीसरे के आगमन के कारण टूटते-बिखरतें दृष्टिगत हो रहे हैं। चंद्रकांता का यह उपन्यास समाज में एक परिवार का तथा संपूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई देता है।

4.3.1 'अंतिम साक्ष्य' : देश काल तथा वातावरण :

प्रत्येक साहित्यकार अपने युग का सच्चा प्रतिनिधि होता है। उनकी रचनाओं में जनजीवन का सच्चा चित्र प्रतिबिंबित रहता है। लेखक जिस परिस्थिति एवं वातावरण में रहता है, उस वातावरण का प्रभाव रचनाओं पर होना स्वाभाविक है। इस उपन्यास के पात्रों पर परिस्थिति एवं वातावरण का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। उपन्यास की कथावस्तु में सजीवता और स्वाभाविकता लाने के लिए वातावरण का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। वास्तविक वातावरण में पाठकों के मस्तिष्क पर पड़नेवाला प्रभाव, देश काल व्यक्ति की पारस्पारिक अनुरूपता से उपलब्ध होता है। चंद्रकांता द्वारा लिखित 'अंतिम साक्ष्य' इस उपन्यास का मूल्यांकन करते समय देश काल वातावरण या परिस्थिति की ओर अनदेखा नहीं किया या सकता।

लेखिका चंद्रकांता ने अपने लेखन द्वारा कश्मीर के वातावरण को चित्रित किया है। वहाँ के सांस्कृतिक और आँचलिकता के रंगों को उपन्यास में भर दिया है। तथा उनके अधिकतर उपन्यासों में कश्मीरी परिवेश का सफल अंकन हुआ है। वहाँ का जनजीवन, वहाँ की संस्कृति, वहाँ की प्रकृति को उपन्यासों के माध्यमसे प्रस्तुत किया है। लेखिका का बचपन कश्मीर की प्रकृति की छाया में बीता। इसलिए वह अपने आप को भाग्यशाली मानती है। लेखिका ने 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास देश काल की दृष्टि से जम्मू को केंद्र में रखकर लिखा है। उनके मन में कश्मीरी लोकजीवन से गहरा लगाव रहा है। इसलिए लेखिका वहाँ का जीवन और वहाँ की प्रकृति को अपनी रचनाओं में सुंदर रूप से उभारती है। लेखिका वातावरण के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में माहिर है। वातावरण निर्मिती में सामाजिक, प्राकृतिक और ऐतिहासिक घटनाएँ कार्यरत होती है। सामाजिक के अंतर्गत सामाजिक स्थिति, रीति रिवाज, वेशभूषा, पात्रों का स्तर एवं शिक्षा आदि का चित्रण होता है। प्राकृतिक के अंतर्गत पात्रों का परिवेश चित्रण होता है। ऐतिहासिक के अंतर्गत कालानुरूप वातावरण निर्मिती आवश्यक होती है। तीनों प्रकारों की वातावरण निर्मिती करने में लेखिका को सफलता हासिल हुई है। लेखिका चंद्रकांता द्वारा लिखित 'अंतिम साक्ष्य', 'अर्थांतर', 'ऐलान गली जिंदा है', 'अपने-अपने कोणार्क', 'यहाँ वितस्ता बहती है' आदि उपन्यासों में कश्मीर की प्रकृति का सुंदर वर्णन मिलता है।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास जम्मू नगर के परिवेश से संबंधित एक राजपूत (ठाकुर) परिवार की कथा है। यह उपन्यास जम्मू की ढ़क्कियों और एक डुग्गर परिवार ठाकुरी आन-बान के साथ भिन्न परिवेश की सच्चाइयों से परिचित कराता है। ढ़क्की के आखरी छोर पर बसी ठाकुर की हवेली आस्था और प्रेम से बसा 'घर' था। परंतु कालचक्र ने कुछ ही वर्ष में उसे खंड़हर में तब्दील कर दिया। यह उपन्यास मीना मौसी के संघर्ष की कहानी है। जिसकी माँ बचपन में ही चल बसीं और बाद में पूरा जीवन समस्याओं के साथ व्यतीत करना पड़ा। मीना की चाची पैसों के लालच में आकर उसकी शादी एक बुढ़े से कराती है। लेकिन बुढ़े को मीना अपने पोती जैसी नजर आती है।वह बुढ़ा लाला चाची को पाँच हजार रुपये देकर मीना को वापिस घर लौटाता है।तब चाची,

मीना का गुण्ड़े जगन के साथ दूसरा ब्याह कराती है। लेकिन एक दिन जगन दलाल के जरिए मीना को कोठेवाली से बेच देता है। तब संगीत मास्टर की कृपा से मीना को कोठे से बाहर निकाला जाता है। और वह रेड़ियो स्टार बन जाती है। फिर भी मीना के जीवन की कठिनाइयाँ न तो कम होती है और न ही खत्म होती है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि पारिवारिक दृष्टि से एक सुखी दाम्पत्य किसी तीसरे के आगमन से तनावग्रस्त बनता है। परिणामस्वरूप पूरा परिवार खेमों में बिख़र जाता है। परिवार के इस विघटन को ही लेखिका ने बड़े मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। इस उपन्यास की कथावस्तु जम्मू स्थान को केंद्र में रखकर लिखी गयी है।फिर भी उपन्यास की कथावस्तु में दिल्ली, बंबई और देश की सीमा का स्थान चित्रित हुआ है, जो कथा के विकास में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करता। बीसवीं सदी के नौवें दशक का चित्रण उपन्यास में आया हुआ है। अत:देश काल तथा वातावरण इस तत्त्व की दृष्टि से 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास सफल माना जाता है।

4.3.2 'अंतिम साक्ष्य' : भाषा–शैली :

भाषा का जन्म समाज में होता है। भाषा का संबंध भी समाज से ही होता है। भाषा मानव के भाव एवं विचार व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। मानव अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए जिन ध्वनि संकेतों का सहारा लेता है, उसे भाषा कहते हैं। जब एक भाषा बोलनेवाला समाज अन्य भाषिक समाज के संपर्क में आता है, तब इस जन संपर्क के कारण अन्य भाषाओं के शब्द अपनी भाषा में आते हैं। संसार की सभी भाषाओं में अन्य भाषाओं के शब्द प्रयुक्त होते हैं। प्रत्येक भाषा अपनी समकालीन भाषाओं से शब्द लेती हैं। सहित्यकारों के निजी अनुभव समाज तक पहुँचाने के लिए भाषा ही एक महत्त्वपूर्ण साधन है। प्रत्येक साहित्यकार द्वारा प्रयुक्त भाषा में तद्भव, तत्सम, देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग कम–अधिक मात्रा में होता रहता है। अंतिम साक्ष्य उपन्यास भी इस बात के लिए अपवाद नहीं है।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास भाषा शैली और संवाद योजना की दृष्टि से एक प्रौढ़ रचना मानी जाती है। पूरे उपन्यास में कथ्य संवादों से अधिक एकालाप से बढ़ते हैं। उपन्यास की लेखिका चंद्रकांता जी ने पात्रों की मनोभावाभिव्यक्ति को बड़ी चतुराई के साथ प्रस्तुत किया है। उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र मीना मौसी लगभग न के बराबर बोलती है। उनके आँखों से निकलने वाले आँसू सब कुछ व्यक्त करते हैं। मीना को कोठेवाली के चंगुल से रिहा करने के बाद संगीत शिक्षक और उसके बीच का संवाद इसका प्रमाण माना जाता है। उपन्यास के अंत में जब प्रताप सिंह की मृत्यु हो जाती है, तब अधखुली खिड़कियाँ, दरवाजों की संधों से फूटते तीखे–मीठे बोल, स्मृतियों के नन्हें–नन्हें हाथ विकी को पीछे की ओर खींचते हैं। तब मीना मौसी अपने मुँह से कोई भी शब्द न निकालते हुए विकी का हाथ पकड़कर उसे आगे बढ़ा रही है। यह बात बिल्कुल सही है कि, जब शब्द चुप हो जाते हैं, भाषा तभी आरंभ होती है। मीना मौसी की इस मूक अभिव्यक्ति ने शायद बुढ़े लाला, संगीत मास्टर, प्रताप सिंह और विकी सबको मनुष्य होने के लिए विवश कर दिया था।चंद्रकांता द्वारा लिखित अंतिम साक्ष्य उपन्यास में छोटे–छोटे सहज भारतीय भाषा में लिखे संवाद जम्मू की हिंदी की याद दिलाते हैं। जिनमें आँचलिकता के साथ–साथ उर्दू और हिंदी का मिश्रण भरे संवाद पूरे उपन्यास में दिखाई देते हैं।

लेखिका के भाषा की यह विशेषता रही है कि वे पाठकों को समझाती नहीं बतियाती जाती है। छोटे-छोटे बाहरी दृश्यों के साथ पाठक स्वयं उनके पात्रों के साथ चलता है। अंतिम साक्ष्य उपन्यास की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है। भाषा में जम्मू प्रदेश की एक आँचलिक पुट और अंग्रेजी शब्दों की भरमार स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। अत:वातावरण निर्माण में भाषा का अदभुत योगदान रहा है।

किसी भी साहित्य कृति की सफलता भाषा के साथ-साथ शैली पर भी निर्भर रहती है। भाषा को प्रस्तुत करने का ढ़ंग य़ाने शैली। शैली के लिए अंग्रेजी में Style शब्द का प्रयोग किया जाता है। साहित्य में लेखक के भावों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए शैली की आवश्यकता होती है। भाषा और शैली में परस्पर घनिष्ठ संबंध होता है। भाषा पर ही शैली की उत्कृष्टता निर्भर रहती है। चंद्रकांता के साहित्य में विविध प्रकार की शैलियों का प्रयोग दिखाई देता हैं।इसमें प्रमुखत:वर्णनात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, पूर्व दीप्ति शैली, चित्रात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, संवाद शैली आदि। लेकिन इनमें से वर्णनात्मक शैली, पूर्व दीप्ति शैली, पत्रात्मक शैली और संवाद शैली का प्रयोग अंतिम साक्ष्य उपन्यास में दिखाई देता है।

१) वर्णनात्मक शैली : इस शैली में किसी घटना या दृष्य का वर्णन किया जाता है। इस शैली में विवरण की प्रधानता रहती है। साथ ही घटना में क्रमबद्धता पाई जाती है। चंद्रकांता ने अंतिम साक्ष्य उपन्यास में इस शैली का प्रयोग किया है। मीना मौसी के जीवन में घटित घटनाओं का वर्णन लेखिका ने इस शैली का आधार लेकर किया है। नारी जीवन की सच्ची दास्तान इस शैली में वर्णित है। मीना के कई रूप इस उपन्यास में दिखाई देते हैं। जैसे-बारह साल की अनाथ मीना, बुढ़े लाला के साथ शादीशुदा मीना, लाला द्वारा वापिस घर लौटाई मीना, गुण्ड़े ज़गन से मीना का पुनर्विवाह, दलाल के सहारे कोठेवाली से बेची गई मीना, संगीत मास्टर के संपर्कवाली मीना, रेड़ियो स्टार मीना, प्रताप सिंह से प्रेम करनेवाली मीना, विकी के प्रति हमदर्दी दिखानेवाली मीना आदि। इसप्रकार मीना के कई रूपों का वर्णन इस शैली में चित्रित किया है।

२) पूर्व दीप्ति शैली – इस शैली का प्रयोग पात्रो की अतीत काल की घटनाओं के बार-बार उभरकर आने से होता है। इस शैली में घटी हुई किसी घटना का चित्रण किया जाता है।यह चित्रण पात्रों के द्वारा किया जाता है। इस शैली में बाद में घटित घटना को पहले दिखाया जाता है। अंतिम साक्ष्य उपन्यास पूर्व दीप्ति शैली में लिखा है। उपन्यास के आरंभ में ही प्रताप सिंह के घर का वर्णन आया है। मीना को घर शब्द के साथ अपना झोपड़ीनुमा कमरा याद आता है। विकी को माँ की मृत्यु के बाद बचपन की याद आती है। वही घर, जहाँ उसने जन्म लिया था। जहाँ कोनों अंतरों में उसके जन्म के शामियाने गूँजे होंगे। जहाँ के चप्पे-चप्पे पर उसके नन्हें आड़े-तिरछे पाँवों के साथ बीजी के सधे हुए पैरों के छापे पड़े होंगे, जहाँ जगह-जगह उसकी अनमोल यादें बिखरी थी। इस प्रकार लेखिका ने 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग सफलता पूर्वक किया है।

३) पत्रात्मक शैली – उपन्यास के पात्रों और घटनाओं का विकास पत्रात्मक शैली के माध्यमसे होता है। पत्र के द्वारा जब पात्र अपनी बात या विचार करते हैं, तब उसे पत्रात्मक शैली कहा जाता है। 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के प्रताप सिंह का बड़ा बेटा सुरेश जब सेना में भर्ती होता है, तब उन्हें छोटे भाई विकी का तार आता

है कि पिताजी अब नहीं रहे। तब विकी का पत्र पढ़कर सुरेश उन्हें पत्र लिखता है, ''सब कुछ खत्म होने के बाद गढ़े मुर्दे उखाड़ने के लिए मुझे मत बुलाओ विकी। संस्कारों में कभी मेरा विश्वास नहीं रहा। तुम अच्छे बेटे की तरह जिए,अच्छे बेटे की तरह बाऊ जी की अंतिम इच्छाएँ भी पूरी करोगे, मुझे भरोसा है। अब मेरे वहाँ पहुँचने में बहुत देर हो गयी है। वहाँ आने का अब कोई अर्थ भी नहीं रहा।अब मै कभी नहीं आऊंगा।''

४) संवाद शैली – कथा साहित्य में कथानक और चरित्र का विकास पात्रों का वार्तालाप तथा संवादों द्वारा होता है। इसे संवाद शैली कहा जाता है। वार्तालाप अपने-आप में उपन्यास का एक तत्त्व है। संवाद के कारण ही कथा साहित्य में सौंदर्य, व्यंजकता, नाटकीयता उत्पन्न होती है। अंतिम साक्ष्य उपन्यास के पात्र विकी और मिस सिंह दोनों दोस्त है।उनके बीच का संवाद- ''लेकिन एटिकेट भी तो कोई चीज है, पुरुष साथ हो, तो स्त्री.....।''

''अच्छा कह दिया न, अगला निमंत्रण तुम्हारी तरफ से, ठीक है न?''

4.3.3 'अंतिम साक्ष्य' : उद्देश्य :

प्रत्येक लेखक का अपनी रचना के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य होता ही है। कोई भी रचना कभी निरूद्देश्य नहीं होती। मनोरंजन, समाज जागृति, परिवर्तन दिखाना, समाज को अच्छी राह दिखाना, बुराइयों का पर्दाफाश करना आदि प्रमुख उद्देश्य से रचनाएँ निर्माण होती है। समाज में अपना जीवन अनुभव करते समय हर एक रचनाकार को भले-बुरे अनुभव आते हैं। उन्हीं अनुभवों को रचनाकार अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त करता है।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास द्वारा नारी को पुरुष के बराबरी का स्थान दिलवाना चंद्रकांता का प्रमुख उद्देश्य रहा है। यह उपन्यास पारिवारिक विघटन और नारी अपने अस्तित्व को बनाए रखनेवाले पात्रों की कहानी है। उपन्यास के पात्र टूटते हैं,बिखरते हैं और बड़ी उम्मीद से फिर से खड़ा होने का प्रयास करते हैं।इस उपन्यास का स्त्री पात्र बीजी दी गई परिस्थितियों में, गृहिणी के लिए तय किए गये पारम्परिक विधान के दायरे में अपने होने के अर्थ ढूँढ़ती है। जबकि मीना स्त्री के प्रति संवेदनहीन पुरुष सत्ताक समाज की लौह श्रृंखलाओं से लहूलुहान, रूढ़ नैतिकताओं की जकड़नों से मुक्ति के रास्ते तलाशती है। उम्र के पच्चीस वर्ष क्रूरता और शोषण सहती मीना के लिए ठाकुर का प्रेम संजीवनी बन जाता है। और तमाम विवशताओं के बीच जी रही मीना अपनी विवशताओं को अपनी शक्ति बनाकर टूटते संबंधों को जोड़ने में जीवन की सार्थकता पाती है। यही बात चंद्रकांता ने अंतिम साक्ष्य उपन्यास में दिखाई है।

लेखिका ने उपन्यास के विषय में कहा है - 'अंतिम साक्ष्य' जम्मू की ढ़क्कियों और एक डुग्गर परिवार की आन-बान के साथ भिन्न परिवेश की सच्चाइयों से परिचित कराता है। एक खंड़हर होती हवेली के धर्मशाला बनने की कल्पना से जुड़ी घटना जो 'अंतिम साक्ष्य' है, टूटते परिवार यह केवल परिवार के टूटने की परिणति नहीं है। इसलिए 'अंतिम साक्ष्य' रचना को मात्र स्त्री विमर्श की कृति न मानकर पारिवारिक विमर्श की कृति मानना अधिक उचित होगा। जो भारतीय समाज में युगों से चली आई कुरीतियों का परिणाम है। वास्तविक अंतिम

साक्ष्य यह चंद्रकांता का आरंभिक उपन्यास है। इसमें लेखिका ने स्त्री अस्मिता और उसके संघर्ष का चित्रण प्रस्तुत किया है। चंद्रकांता अपने उपन्यास के बारेमें लिखती हैं, ''इस उपन्यास में जहाँ बीजी की आस्थाओं का करुण अंत है, वहीं मीना मौसी की टूटे परिवार को जोड़ती अक्खड़ जिजीविषा भी है। मेरी स्त्री समर्थ होने की कोशिशों में संघर्षशील है, पर वह पुरुष का कहीं भी अस्वीकार नहीं करती, बस बराबर में एक सम्मान पूर्ण जगह चाहती है।'' इस उपन्यास में दिखाई गई सभी घटनाएँ समाज में भी दिखाई देती है। इसी करण उपन्यास में सजीवता, विश्वसनीयता, क्रमबध्दता और रोचकता दिखाई देती है।

अत: 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की कथावस्तु से यह स्पष्ट होता है कि यह एक ऐसे औरत की कथा है, जिसने जिंदगी में सब कुछ स्वीकार करने के बाद भी कुछ नहीं पाया। विवाह के बाद भी मीना दुल्हन नहीं बन सकी। उनका शरीर केवल भोग की वस्तु बना रहा। उसे प्रेम मिला किंतु प्रेमिका नहीं बन सकी। केवल रखैल बनकर रह गयी। और अंत में वह दुल्हन, प्रेमिका और रखैल कुछ भी नहीं रह सकी। यह उपन्यास टूटते परिवार के त्रासदी की कथा है। इस उपन्यास में नारी की पीड़ा को बड़े मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास नारी के दर्दनाक जीवन शैली को प्रस्तुत करता है।

4.3.4 'अंतिम साक्ष्य' : समस्याएँ :

'अंतिम साक्ष्य' यह चंद्रकांता का आरंभिक उपन्यास है। इस उपन्यास में उनकी लंबी रचनायात्रा के बीज विद्यमान है। कश्मीर और वहाँ के लोकजीवन का जो विस्तार उनकी अन्य कृतियों में मिलता है, उसके सभी सूत्र अंतिम साक्ष्य उपन्यास में दिखाई देते हैं। उपन्यास का पूरा कथानक मुख्य स्त्री पात्र मीना के इर्द-गिर्द घुमता है, पर वास्तव में उपन्यास की कथा का आरंभ पारिवारिक विघटन का बच्चों के मन पर पड़नेवाले प्रभाव से होता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने भारतीय समाज और कश्मीरियत दोनों को नयी पहचान देने की कोशिश की है। उसी तरह भारतीय समाज में दिखाई देनेवाली कुछ समस्याओं को चित्रित करने का काम उपन्यास के माध्यमसे किया है। वैसे देखा जाए तो लेखिका ने वर्तमान युग में दिखाई देनेवाली प्रत्येक समस्या पर अपनी रचना में बड़ी ईमानदारी के साथ भाष्य किया है। चंद्रकांता द्वारा लिखित अंतिम साक्ष्य उपन्यास में चित्रित समस्याएँ निम्नांकित है-

1. बालविवाह की समस्या
2. अनमेल विवाह की समस्या
3. विवाह बाह्य संबंधों का चित्रण
4. अंतर्जातीय विवाह की समस्या
5. अनाथ बच्चों की समस्या
6. परिवार विघटन की समस्या
7. बच्चों की आवारागर्दी
8. वेश्या समस्या
9. लिव इन रिलेशनशिप
10. नारी की पीड़ा

'अंतिम साक्ष्य' इस लघु उपन्यास में लेखिका ने उपर लिखित सभी समस्याओं पर बड़ी तटस्थता से प्रकाश ड़ालने की कोशिश की है। उनकी यह कोशिश भारतीय समाज में युगों से चली आई कुरीतियों का पर्दाफाश करने की है। उनकी यह रचना केवल स्त्री विमर्श की रचना नहीं है बल्कि पारिवारिक विमर्श की रचना

है। जो कश्मीरी संस्कृति लेखिका ने अपने बचपन में देखी थी,अब उसमें से विरासत के रूप में कुछ भी नहीं बचा। 'अंतिम साक्ष्य' के रूप में बची है केवल जर्जर हवेलियाँ, जिनकी नीव.में वैदिक गुफाएँ है। अंतिम साक्ष्य का अंतिम अंश उन हवेलियों का भी दर्द है, जो चंद्रकांता जी ने देखा और भोगा है। अत: इस उपन्यास में चित्रित समस्याओं का सामान्य परिचय इस प्रकार है –

1. बालविवाह की समस्या :

प्राचीन काल से ही बालविवाह की प्रथा प्रचलित है। उसके बाद के कालखंड़ में यह प्रथा मानो रूढ़ हो गई। आज हमें देश के किसी–न–किसी स्थान पर बालविवाह होते हुए दिखाई देते हैं। सरकार द्वारा बालविवाह को रोकने के लिए कई कानूनी प्रबंध भी किए गए। किंतु आज तक इस प्रथा पर हम सौ प्रतिशत रोक नहीं लगा पाए। कानून के अनुसार लड़के की उम्र इक्कीस साल और लड़की की उम्र अठारह होनी चाहिए। अन्यथा वह बालविवाह माना जाएगा। बालविवाह की प्रथा अनपढ़ लोगों में अधिक मात्रा में दिखाई देती है। आज माँ–बाप या परिवार के सदस्य लड़कियों से संबंधित जिम्मेदारियों से मुक्त होने के लिए बालविवाह जैसी प्रथा को बढ़ावा दे रहे है। अल्पायु में होनेवाले विवाह के कारण लड़कियों को बड़े परिणामों का सामना करना पड़ता है। समाज में प्रचलित कई बुरी बातों के कारण आज भी गाँवों में बालविवाह जैसी प्रथा को प्रोत्साहन मिल रहा है।चंद्रकांता ने अपने साहित्य में बालविवाह की समस्या को उद्घाटित किया है।

चंद्रकांता द्वारा लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में इस समस्या को रेखांकित किया है। उपन्यास का प्रमुख स्त्री पात्र मीना एक अनाथ लड़की है। चाचा–चाची उसकी परवरिश करते हैं। उनके घर में वह कपड़े धोती, बर्तन माँजना और नन्हीं–नन्हीं भूलों पर जबान और हाथों से कोड़े भी खाती है। रोती सूरत से आकाश की ओर निहारते हुए अपने बापू को याद करती है। वह घर के सारे काम करती है, फिर भी उसके चाचा–चाची बारह–तेरह साल की छोटी–सी उम्र में उनकी शादी एक बुढ़े से कराते है। शादी के बाद जब बुढ़ा मीना का घूँघट उठाता है, तब उसे नन्हीं मीनू के चेहरे में उसकी नन्हीं पोती का मुखड़ा झाँक आता है और वह मीना को वापिस घर लौटाता है।

मीना के चाचा–चाची दूसरी बार मीना का ब्याह गुण्ड़े जगन से तय करते हैं, तब चाची के पैर पकड़कर मीना कहती है, ''मुझे पड़ी रहने दो घर में चाची! सब काम करूँगी। खाना पकाऊँगी, कपड़े धोऊँगी, रात को तुम्हारे पाँव दाबूँगी।'' तब चाची चेहरे पर हँसी लाकर कहती है, ''हट पगली अब अपने घर खाना बनाना। कोई लड़की कभी हमेशा अपने माँ–बाप के घर रही है।'' तब मीनू चाची के पैर पड़ती है, तब चाची सिर पर हाथ फिराकर समझाती है, ''बेटी लड़कियों का अपना ही घर भला! कब कैसा वक्त आए, किसे मालूम? हम लोग भी क्या हमेशा बने रहेंगे?'' इस प्रकार उम्र के तेरह साल पूरे होने से पहले ही मीना का दूसरा विवाह जगन से होता है।

2. अनमेल विवाह की समस्या

गाँवो में प्रचलित एक प्रथा है, अनमेल विवाह देश में आजादी से पहले यह प्रथा भयानक रूप में प्रचलित थी। इस प्रथा में किशोरावस्था की लड़कियों को वृद्ध व्यक्ति के हाथ सौंप दिया जाता है। ऐसे विवाह के कारण

यौवन की लड़कियों के फूल खिलने से पहले ही मुरझाते हैं। वह लड़की जानवरों की तरह मौन रहकर सभी अत्याचारों को सहती रहती है। अधिकतर अनमेल विवाह दहेज प्रथा या आर्थिक निर्धनता के कारण ही होते हैं। दुल्हा और दुल्हन की आयु, रूचि और विचारों में होनेवाला अंतर को अनमेल विवाह कहा जाता है। भारतीय लोगों की यह धारणा रही है कि पति की तुलना में पत्नी की उम्र कम हो। जब समाज में इसी प्रकार के विवाह होते है, तब नारी को जीवनभर अंदर-ही-अंदर घुटना पड़ता है।

चंद्रकांता ने 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या को बड़े मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। इसतरह के विवाह में संतान की इच्छा कोई मायने नहीं रहती। मीना एक अनाथ लड़की है। मीना का पालन-पोषणचाचा-चाची ने किया है। लेकिन जब मीना बारह साल की हो जाती है, तब चाचा-चाची उसका विवाह पचास साल के रंडुवे के साथ कराते हैं। यही बात जब मीना बीजी को सुनाती है, तब बीजी उसांस भरकर कहती है, ''आह! कैसे कसाई होंगे वह चाचा-चाची। बारह वर्ष की लड़की को पचास साल के रंडुवे के पल्ले बाँध दिया।'' लाला के बेटे मीना के प्रति आकर्षित होते हैं। लाला का छोटा बेटा तो मीना के साथ संबंध रखना चाहता है। लाला अपने बेटों के व्यवहार से त्रस्त होकर और चाचा-चाची को पाँच हजार रुपये देकर आखिर मीना को वापिस लौटाता है। बाद में चाचा-चाची अधेड़ उम्रवाले जगन के साथ मीना का पुनर्विवाह कराते है। जिससे मीना दोबारा अनमेल विवाह का शिकार हो जाती है। जगन मीना को केवल एक भोग्या मात्र समझता है। वह एक दिन मदन सिंह दलाल से पैसे लेकर मीना को एक कोठेवाली से बेच देता है। इस तरह मीना के जीवन में दो विवाह होते हैं। उसको दोनों बार भी अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता है।

3. विवाह बाह्य संबंधों का चित्रण :

भारतीय समाज में विवाह को पवित्र बंधन माना जाता है। हमेशा विश्वास की नींव पर स्त्री-पुरुष के संबंध दृढ़ होते हैं। दाम्पत्य जीवन में तीसरे का आगमन हमेशा बाधक होता है। अनमेल विवाह, पति या पत्नी का कुरूप होना, संतान प्रप्ति में बाधा, यौन अतृप्ति, विचारों में भिन्नता आदि कई कारणों से पति या पत्नी विवाह बाह्य संबंध रखते हैं। विवाहोत्तर प्रेम संबंधों के कारण पति-पत्नी में तान-तनाव बढ़ जाते हैं। और यह समस्या उग्र रूप धारण करती है। भारतीय लोग कभी-कभी पाश्यात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते हैं, जिसकी वजह से यह समस्या बढ़ती जा रही है। इसी समस्या को लेखिका ने चतुराई से अपने साहित्य में चित्रित किया है।

चंद्रकांता ने 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में विवाह बाह्य संबंधों पर प्रकाश ड़ाला है और उसके परिणाम भी दिखाए है। बीजी और बाऊ जी का सुखी परिवार था। घर-गृहस्थी के सारे सुख परिवार के सभी सदस्यों को प्राप्त हो रहे थे। बाऊ जी के संपर्क में मीना आते ही कोई खाली कोना फोड़े की तरह उन्हें दुःख देने लगा। और प्रतापसिंह और मीना में अनैतिक प्रेम संबंध स्थापित होते हैं। इस बात का पता बीजी को होते ही वह मीना को सर्पिणी कहकर संबोधित करती है। जिसका जहर उसने उसके पति पर उकेरा था। इस घटना से बीजी जीते जी मर जाती है। अपने में होनेवाली कमी को तलाशते-तलाशते हमेशा के लिए उनकी आँखे बंद हो जाती है। मीना के कारण ही उनका सुखी दाम्पत्य जीवन, दुःख में तब्दील हो जाता है। पति का मीना के प्रति आकर्षण

पत्नी को कमजोर बनाता है। इस प्रकार विवाह बाहय संबंधो के कारण से भी परिवार टूटकर काँच के समान बिखर जाता है। आज भी समाज में ऐसे सुखी परिवार किसी तीसरे के आगमन से टूटते-बिखरते दिखाई दे रहे हैं। इसका मार्मिक चित्रण चंद्रकांता ने इस उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

4. अंतर्जातीय विवाह की समस्या :

भारतीय संस्कृति में अनादि काल से ही विवाह के बंधन कड़े थे। अपने जाति में ही विवाह करना अनिवार्य बात मानी जाती थी। मात्र मध्यकाल से ही अंतर्जातीय विवाह हमें दृष्टिगत होते हैं। आधुनिक युग में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार के कारण तथा पाश्यात्य संस्कृति के प्रभाव से अनेक विवाह जाति के बाहर किये जा रहे हैं। शिक्षा तथा नौकरी के कारण युवक-युवतियों का संपर्क, विचारों का आदान-प्रदान, प्रेमसंबंध, आधुनिक समाज माध्यम यह सभी बातें इस प्रकार के विवाह को बढ़वा दे रही है। शिक्षा के कारण जाति-पाति के बंधनों को तोड़कर कई अंतर्जातीय विवाह हो रहे हैं। आज भी कई माता-पिता ऐसे विवाहों को मान्यता प्रदान करने में हिचकिचाते हैं। वास्तविक सरकार भी अंतर्जातीय विवाह करनेवालों को प्रोत्साहित कर रही है। लेकिन समाज में भी ऐसे विवाह के प्रति नफरत की भावना दिखाई देती है। अंतर्जातीय विवाह सामाजिक दृष्टि से समस्या बनता जा रहा है।

इस उपन्यास में चंद्रकांता ने अंतर्जातीय विवाह की समस्या को चित्रित किया है। रमेश और कैलाश शिक्षा के कारण एक-दूसरे के संपर्क में आने से दोनों में प्रेम हो जाता है। दोनों में एक कायस्थ है, तो दूसरा ब्राह्मण है। दोनों विवाह करना चाहते हैं। परंतु रमेश की माँ ने उसके लिए कोई पैसोवाली बहू चुनकर रखी थी। इसलिए वह रमेश को विवाह करने के लिए इजाजत नहीं देती। तब रमेश माँ की उम्मीदों पर पानी फेर देता है। यहाँ पर दिखाया गया है कि घरवालों के विरोध में जाकर रमेश और कैलाश दोनों अंतर्जातीयविवाह करते हैं।

5. अनाथ बच्चों की समस्या :

भारत जैसे अधिक आबादीवाले देशों में अनाथ बच्चों की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। बच्चों के माँ-बाप जब किसी कारण मर जाते है, तब उनके बच्चों को अनाथ कहा जाता है। कभी नैसर्गिक आपत्ति, बाढ़, भूकंप, त्सुनामी, अकाल या किसी अन्य भयंकर बीमारी में माँ-बाप शिकार हो जाते है, परिणामस्वरूप बच्चें अनाथ होते हैं। आज देश में अनाथ बच्चों के लालन-पालन के लिए कई आश्रम चलाए जा रहे हैं। या ऐसे बच्चों की परवरिश कोई रिश्ते-नातेदार या परिवार से संबंधित व्यक्ति भी करते हैं। माँ-बाप के अभाव में बच्चे संस्कारहीन बनने की संभावना अधिक रहती है। बच्चे बिगड़ते हैं। बच्चों में निर्णय की क्षमता नहीं होती। कभी लिए गए निर्णय गलत साबित होते हैं। ऐसे बच्चों का दायित्व समाज द्वारा उठाकर उनकी परवरिश में अपना हाथ बँटाना चाहिए।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की प्रमुख स्त्री चरित्र मीना अनाथ बालिका है। उसकी परवरिश चाचा-चाची के घर में हो रही है। लेकिन चाचा-चाची मीना को हमेशा भला-बुरा कहते हैं, गालियाँ देते हैं। उनसे काफी काम करवाते हैं। मीना की भलाई का विचार न करते हुए उसकी शादी करना चाहते हैं। इस बात से मीना को

बहुत बुरा लगता है। वह खामोश रहकर आँसू बहाने के अलावा कुछ नहीं कर सकती। केवल रोती सूरत से बापू को याद करती है। मीना के चाचा-चाची पैसों के लालच से उनकी शादी पचास साल के रंडुवे से करते हैं। वह बुढ़ा आदमी चाचा-चाची को पाँच हजार रुपये देकर मीना को वापिस लौटाता है। सात-आठ महिने बाद मीना की इच्छा-आकाक्षाओं को न देखते हुए उनकी जगन से दुबारा शादी करते हैं। पति जगन के घर वह कुछ दिन रहती है, लेकिन एक दिन जगन मीना को मदन सिंह दलाल के जरिए कोठेवाली से बेचता हैं। मीना फिर एक बार गहरे संकट में फँस जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अनाथ बच्चों की परवरिश करने वाले लोग बच्चों की भलाई की बात नहीं सोचते। वह केवल अपने सिर पर होनेवाली जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते हैं। जिससे अनाथ बच्चों की समस्याएँ दिन-ब-दिन बढ़ती जाती हैं। बच्चे गलत राह का सहारा लेते हैं। ऐसे बच्चों का जीवन बनने के बजाय बिगड़ता जाता है।

6. परिवार विघटन की समस्या :

सृष्टि के निर्माण से ही स्त्री और पुरुष एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते दिखाई देते हैं। पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी के संबंधो को ही दाम्पत्य जीवन कहा जाता है। विवाह ही स्त्री-पुरुष और परिवार की आधारशीला है। समाज में पति-पत्नी के संबंधों को श्रेष्ठ माना गया है। विवाह द्वारा केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो दिलों का मिलन होता है। दाम्पत्य जीवन में निर्माण होनेवाली दरारें जीवन को संघर्ष की ओर ले जाती है। पति-पत्नी के विचारों में भेदभाव तथा संदेह जीवन में तनाव उत्पन्न करता है। दाम्पत्य जीवन बिखर जाता है और परिवार विघटन की प्रक्रिया आरंभ होती है।

चंद्रकांता द्वारा लिखित 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास परिवार विघटन की कहानी है। उपन्यास में बीजी और प्रताप सिंह एक सुखी दाम्पत्य है। इस कहानी के प्रमुख पुरुष पात्र प्रताप सिंह को बच्चे बाऊ जी कहकर बुलाते हैं। खुद का मकान, सरकारी नौकरी, पत्नी और दो बच्चों के पिता थे। सारे सुखों के बावजूद भी प्रताप सिंह के समग्र मन में कोई कोना खाली रह गया और न चाह कर भी वे मीना के प्रति खिंचते चले गये। परिणामस्वरूप खाली कोना फोड़े की तरह दु:ख देने लगता है। एक दिन बीजी विकी के साथ सुट का कपड़ा खरिदने के लिए जाते वक्त मीना के घर गयी, तो उसने देखा, ''भीतर बाऊ जी पलंग पर लेटे थे और मीना मौसी उनका माथा सहला रही थी। अधलेटी मीना मौसी अपने शरीर के तमाम आवरणों से बेखबर जाने किस भावाकाश में उड़ाने भर रही थी।'' इस दृश्य से परिवार विघटन की प्रक्रिया आरंभ होती है। एक दिन बीजी की मृत्यु से एक बार टूटा परिवार पूरी तरह से टूट जाता है। मतलब स्पष्ट है कि पारिवारिक सुखी दाम्पत्य के जीवन में किसी तीसरे का आगमन परिवार विघटन का कारण बन जाता है। अंतिम साक्ष्य उपन्यास में बीजी और बाऊ जी के बीच मीना का आगमन सुखी परिवार को खंड़हर में तब्दील कर देता है।

7. बच्चों की आवारागर्दी :

जिस परिवार में माँ-बाप संस्कारक्षम होते हैं, वहाँ बच्चे भी संस्कारशील होते हैं। बच्चों पर संस्कार करने में माँ-बाप का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। कुछ परिवार में माँ-बाप ही बच्चों के लिए भगवान होते हैं। बच्चों का पालन-पोषण करते समय उनपर घर-परिवार से संस्कार किये जाते हैं। लोग अक्सर कहते हैं कि, ''जैसे

माँ-बाप वैसे बच्चें।यह कहावत बिल्कुल सार्थक है। बचपन से ही बच्चों पर माँ-बाप का अधिक प्रभाव रहता है। घर का वातावरण शांत, विनम्र, अनुशासित, आध्यात्मिक हो, तो बच्चे संस्कारों को ग्रहण करते हैं। यदि हमें बच्चों को सुसंस्कृत बनाना है, तो माँ-बाप का जीवन आदर्श होना बहुत जरूरी है। बच्चों की जिज्ञासाओं का सही समाधान करने की क्षमता माता-पिताओं में होनी चाहिए। जिस घर में बच्चों पर अच्छे संस्कार नहीं किए जाते उस घर के बच्चे बिगड़ते जाते हैं। वास्तविक बच्चे तो कोरा कागज़ होते हैं। उसपर जो लिखा जाए वही प्रामाणिक होता है। इसलिए बच्चों के प्रति परिवार के सदस्यों का व्यवहार हमेशा अच्छा ही होना चाहिए।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में बच्चों के आवारागर्दी का चित्रण आया है। प्रताप सिंह के छोटे से परिवार में पत्नी बीजी और दो बेटे सुरेश और विकी बड़े सुख से जीवन यापन कर रहे थे। प्रताप सिंह की इच्छा थी कि उनके बेटे खूब पढ़े और ऊंचे पद पर काम करे। ''उनकी सोच थी कि मेरे बेटे होशियार है। खूब पढ़ेंगे।बड़े बेटे को आर्मी ऑफिसर बनाऊँगा और छोटे बेटे को चीफ इंजीनियर।'' पिताजा का यह सपना सपना ही रह गया। बीजी-बाऊ जी का जीवन सुख-दु:ख का समुच्चय है। परिस्थितियाँ मनुष्य को सबल और दुर्बल बनाती है। मनुष्य नियति के विधान का परिणाम है। बीजी बाऊ जी में एक दूसरे के प्रति प्रेम था। एक आदर्श पिता के रूप में बाऊ जी बच्चों की शिक्षा के प्रति संकल्पबद्ध थे। लेकिन बाऊ जी के मीना मौसी के साथ होने वाले अनैतिक संबंधों का पता चलते ही विकी और सुरेश ने आवारागर्दी की तमाम हदों को पार कर दिया। बड़ा बेटा सुरेश तो अपना अधिकतर समय आवारागर्दी में ही काटने लगा।

बीजी की मृत्यु के बाद पूरे परिवार का अनुशासन ही बिगड़ गया था। एक दिन प्रताप सिंह मीना को घर ले आए, तो सुरेश ने दूसरे ढ़ंग से अपनी प्रतिक्रिया देना आरंभ किया। बेअदब लापरवाही ही नहीं, जान-बूझकर घर में हंगामा खड़ा कर दिया। बाऊ जी के दफ्तर जाते ही वह यार-दोस्तों की महफिलें जमाता। हुड़दंग मचाता।उसकी खुराफातें हदें तोड़ने लगी थी। उसकी आवारागर्दी बढ़ती ही जा रही थी। सुरेश ने आवारा लड़कियों को घर लाना शुरू किया था। एक बार प्रोफेसर गुप्ता ने सुरेश के आवारागर्दी की खबर बाऊ जी को दी। तब अपनी शिकायत करने वाले गुप्ताजी पर चाकू से वार कर दिया। विकी भीड़ में खोए नन्हें बच्चे की तरह बचैन-रुआँसा, बिना खाये-पिये, कभी बुआ, कभी किसी दोस्त के यहाँ पड़ा रहता। सुरेश की आवारागर्दी देखकर दीवान साहब ने मँगनी तोड़ने का ऐलान किया । तब वह मीता को भगाकर बम्बई ले जाता है। कुछ महिने बाद मीता का भाई उसे वापिस ले आता है। मीता मुड़कर देखे बिना घर लौट आयी। इस घटना के बाद कुछ दिन की फाकाकशी के बाद बिगडैल सुरेश अपने मित्र के कहने पर फौज में भर्ती हो जाता है।

8. वेश्या समस्या :

हमारे समाज की एक ज्वलंत समस्या है, वेश्यावृत्ति। आदिम काल से ही स्त्री और सौंदर्य का अटूट रिश्ता रहा है। विधाता ने स्त्री को निसर्गत: सुंदर बनाया। सौंदर्य स्त्री की गरिमा है। परंतु भारतीय समाज ने विविध षड़यंत्रों द्वारा इस सौंदर्य को बाजारू वस्तु बनाया है। वेश्या समस्या का प्रमुख कारण है, आर्थिक परवशता। आम तौर पर देखा जाए तो स्त्री किसी-न-किसी कारणवश परिस्थिति से मजबूर होकर वेश्या बनती है। तो कभी-कभी

आर्थिक पराधिनतावश परिवार के सदस्य पैसा कमाने के लिए लड़कियों को बेचते हैं। आर्थिक परवशता मनुष्य को जानवर से भी हीन बनाती है। कभी-कभी स्त्रियों को पैसों का लालच दिखाकर उन्हें वेश्या व्यवसाय में लानेवाली दलालों की व्यवस्था भी समाज में कार्यरत होती है। नारियों का व्यापार भी होता रहता है। जिससे वेश्या व्यवसाय दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है।

प्रसिद्ध लेखिका चंद्रकांता ने अंतिम साक्ष्य उपन्यास में वेश्या समस्या पर प्रकाश ड़ाला है। मीना का पहला ब्याह बूढ़े लाला से होता है। लेकिन लाला कुछ ही दिनों में मीना को उसके घर वापिस लौटाता है। लाला से पाँच हजार रूपये लेकर चाचा-चाची मीना को घर लेने में राजी होते हैं। छह-आठ महिने बीत जाने के बाद चाचा-चाची मीना की शादी ठेलेवाले जगन से कराते है। जगन मीना को रूप की राशि समझता है। एकाध साल बीतते ही जगन अपनी योजनाओं को कार्यरूप देना चाहता है। एक दिन वह दलाल मदन सिंह की सहायता से मीना को कोठेवाली से बेचता है। दुल्हन से सजे हुए कमरे में रंगे चेहरे वाली एक अधेड़ महिला मीना का स्वागत करती है। तब मीना ड़री-सहमी उस भद्दी औरत के तौर-तरीके देखती रहती है। ना-नुकुर भी कर सकी। कोठे के कमरे की काँच वाली खिड़की से दो-चार उत्सुक चेहरे मीना को झाँक गये थे। उसकी ओर इशारा कर आपस में कुहनियाँ मार-मारकर कनबतियाँ करने का ढ़ंग उन्हें काफी चुभ गया। वह भीतर-ही-भीतर घबरा गयी थी। तब उसने घबराई आवाज में कोठेवाली से कहा, मौसी! मैं घर जाना चाहती हूँ। कोठेवाली के मुँह से यथार्थ का पता चला तब उसके रक्त प्रवाहक नसों-नाड़ियों में रक्त का संचार मानो एकदम रूक गया था। आतंक व दहशत की सरसराहटें पैरों से उठकर रीढ़ की हड्डी तक कांप रही थी। वह घुटनों में सिर दबाकर घंटो रोती रही। इस प्रकार लेखिका ने 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में वेश्यावृत्ति की समस्या को रेखांकित किया है।

9. लिव इन रिलेशनशिप :

लिव इन रिलेशनशिप एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें दो लोग जिनका विवाह नहीं हुआ वे साथ में रहतें है। या दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि जब बालिग लड़का और लड़की अपनी मर्जी से विवाह के बंधन में बँधे पति-पत्नी की तरह रहते हैं, उस संबंधों को लिव इन रिलेशनशिप कहा जाता है। इस तरह से जीवन बिताते समय एक-दूसरे पर गहरा विश्वास होना बहुत जरूरी होता है। आज-कल भारतीय कानून द्वारा इस प्रकार के संबंधो को मान्यता प्रदान की है। कानूनी तौर पर यह संबंध पूरी तरह वैध है। महिलाओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लिव इन रिलेशनशिप से संबंधित कानून बनाए गए हैं।इसमें कोई पुरुष केवल सेक्स संबंध के लिए रिलेशनशिप बनाता है, तो उसपर कानूनी कार्रवाई हो सकती है। प्रेम विवाह करने से पहले खुद को आर्थिक और मानसिक तौर पर सक्षम बनाने का काम इस रिलेशनशिप द्वारा होता है। कुछ लड़के या लड़कियाँ केवल मौज-मस्ती करने के लिए लिव इन रिलेशनशिप में रहते हैं।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में लेखिका चंद्रकांता ने लिव इन रिलेशनशिप के संबंधों पर प्रकाश ड़ाला है। बीजी और बाऊ जी का बड़ा बेटा सुरेश जब आवारागर्दी करता है, तब दीवान साहब अपने बेटी की मँगनी तोड़ देते है। एक रात सुरेश घर की आलमारी से बाऊ जी का महिने भर का वेतन चुराकर दीवान की बेटी को

लेकर बम्बई भाग जाता है; पर ग्लैमर की दुनिया में किसी भी फिल्म कंपनी ने उसे हीरो नहीं बनाया। एक्सट्रा की पंक्तियों में खड़ा वह महीनों भूख-प्यास के अहम् सवालों से जूझता रहा। मीता महीना-भर साथ रही; पर पूँजी खत्म होते ही भूख और भटकन का सामना होने पर वह सुरेश से पहले ही सपनों की रंगीन दुनिया से खुरदुरी धरती पर लौट आई। फिर एक दिन उसका भाई उसे लेने आया; और बिना मुड़कर देखे मीता घऱ लौट आई। तब सुरेश केवल दु:ख और अपमान सहता रहा।

बीजी बाऊ जी का दूसरा बेटा विकी दिल्ली के एक कॉलेज में अध्यापक की नौकरी करता है। जिससे मुश्किल से घर किराया निकलता था। उसी कॉलेज में पढ़ाने वाली अध्यापिका नीला सिंह से उनकी मुलाकात होती है। वह भी कॉलेज में संगीत पढ़ाने का काम करती थी।मिस सिंह तेज-तर्रार, विदुषी महिला थी। वह बड़ी सुलझी हुई लड़की थी। नीला सिंह के पिताजी का शहर में अच्छा-खाँसा व्यवसाय था और वह अपने पिता की अकेली संतान थी। इसी लड़की से विकी का परिचय हुआ। जल्द ही दोनों अच्छे दोस्त बन गए। दोनों ने एक-दूसरे को अपनी-अपनी प्रेम कहानी सुनाई। दोनों साथ में रहने लगे। इस तरह बाऊ जी के बेटे सुरेश ने मीता के साथ तथा विकी ने मिस सिंह के साथ लिव इन रिलेशनशिप संबंध स्थापित किये थे।

10. नारी की पीड़ा :

नारी की पीड़ा को आधुनिक काल के कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य का केंद्रीय विषय बनाया है। अधिकतर नारी रचनाकारों ने भी नारी की पीड़ा को अपने रचनाओं के माध्यम से उद्घाटित किया है। वर्तमान समय में ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही नारी शोषण का शिकार रही है। हिंदी साहित्य का आदिकाल तो नारी की अवनति का सूचक काल रहा है। मध्यकाल में भी नारी अन्याय-अत्याचार का शिकार होती रही। नारी केवल भोग का साधन है, यही धारणा नारी के संदर्भ में हमेशा रही है। उसके बाद साहित्य में नारी चेतना एवं नारी स्वतंत्रता की बातें होती रही। प्राचीन काल से ही नारी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी, वह हमेशा अपने अधिकारों से वंचित रही है।यही बात चंद्रकांता ने अपने उपन्यास के माध्यम से रेखांकित करने का प्रयास किया है।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास मीना मौसी की त्रासदी की कहानी है। मीना एक अनाथ लड़की है। चाचा-चाची ने उसकी परवरिश की है। चाचा-चाची अपनी जिम्मेदारियों से मुक्ति पाने के लिए मीना का विवाह पचास साल के रंडुवे के साथ कर देते है। लेकिन मीना में बुढ़े को अपनी पोती नजर आती है, तब वह चाचा-चाची को पाँच हजार देकर मीना को वापिस घर लौटाता है। फिर मीना का पुनर्विवाह जगन से होता है। जगन मीना को उपभोग का साधन मात्र समझता है।वह भी पैसों के लालच में आकर मीना को मदन दलाल के हाथों कोठेवाली से बेच देता है। वहाँ संगीत शिक्षक की सहायता से मीना कोठेवाली के चंगुल से बाहर निकलती है। फिर कैलाश के माध्यम से वह प्रताप सिंह से जुड़ जाती है और उसके बाद तो जुड़ने और जुड़कर टूटने में उनके साथ और भी लोग शामिल होते हैं। अंत में एक बार फिर अकेले होने के लिए। यह पूरा खेल चलता रहता है। उन्हें बाऊ जी का प्रेम मिला परंतु वह प्रेमिका नहीं बन सकी। मात्र बाऊ जी की रखैल बनकर रह गयी़। बाऊ जी की मृत्यु के बाद वह विकी का हाथ पकड़कर उसे आगे बढ़ाती है। क्योंकि वह जानती है कि

जीवन जीने के लिए कटना, जुड़ना, जख्मी होना सभी अनिवार्य होता है।इस प्रकार उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक मीना के जीवन की कहानी चित्रित है। जिसमें मीना के अनाथ जीवन से लेकर अंत में अकेले होने की घटना तक की सारी पीड़ाएँ लेखिका ने दर्शायी है। नारी की दर्दनाक जीवन शैली को उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने सफलता पूर्वक रेखांकित किया है। अत: नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है।उसका समाज द्वारा आदर करना चाहिए, तभी समाज की प्रगति होगी। यह बात भी लेखिका ने परोक्ष रूप में उपन्यास में दर्शायी है।

4.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1) **रंडुवा –** विधुर (वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो)।

2) **हुड़दंग –** ऊधम; तहलका

3) **खुराफातें –** शरारत, गालीगलौज, अश्लील बात

4) **ना–नुकुर –** इनकार; नामंजूर

5) **कनबतियाँ –** कानाबाती।

6) **खुरदुराऊबड़ –** ऊबड खाबड़।

7) **सरसराहट –** मर्मरध्वनि।

8) **मनुहार –** खुशामद; भिन्नत।

4.5 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. मीना मौसी पहली बार ..... की मँगनी पर प्रताप सिंह के घर आई थी।
   अ) विकी ब) सुरेश क) पंकज ड) रमेश

2. बीजी के आदेश पर विकी–सुरेश मीना को ..... कहने लगे।
   अ) मीना ब) मौसी क) मीना–मौसी ड) चाची

3. मीना का पुनर्विवाह ..... के साथ हुआ था।
   अ) जगन ब) लाला क) मदन ड) संगीत शिक्षक

4. मीना को मास्टर जी ने ..... रेड़ियो स्टेशन से नियमित अनुबंध दिलवाए।
   अ) कश्मीर ब) श्रीनगर क) दिल्ली ड) जम्मू

5. आदमी की मृत्यु के साथ उस आदमी की शरीर ही नहीं, उसका ..... भी मर जाता है।
   अ) काम ब) धाम क) नाम ड) साम

6. सुरेश मीता को लेकर ..... भाग गया था।
   अ) बम्बई ब) दिल्ली क) राँची ड) चेन्नई

7. नीला सिंह अपने पिता की ..... संतान थी।

अ) पहली ब) दूसरी क) चौथी ड) अकेली

8. विकी का असली नाम ..... था।

अ) विकास ब) विवेक क) विलास ड) विराट

9. अंतिम साक्ष्य उपन्यास ..... को केंद्र में रखकर लिखा गया है।

अ) श्रीनगर ब) कश्मीर क) जम्मू ड) दिल्ली

10. कटना, जुड़ना, जख्मी होना सभी अनिवार्य है, ... ।

अ) जीने के लिए ब) मरने के लिए क) पढ़ने के लिए ड) अपघात के लिए

4.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1. ब) सुरेश 2. क) मीना–मौसी 3. अ) जगन 4. ड) जम्मू
5. क) नाम 6. अ) बम्बई 7. ड) अकेली 8. ब) विवेक
9. क) जम्मू 10. अ) जीने के लिए

4.7 सारांश :

1. अंतिम साक्ष्य उपन्यास में लेखिका ने रिश्तों और प्रेम संबंधों का बड़े मार्मिक ढ़ंग से वर्णन किया है। यह नारी जीवन के संघर्ष की कहानी है।

2. यह उपन्यास जम्मू नगर के परिवेश से संबंधित एक राजपूत परिवार की कहानी है। जिसमें प्रताप सिंह, पत्नी बीजी, बेटे सुरेश और विकी सुखी जीवनयापन कर रह थे।

3. उपन्यास का प्रमुख स्त्री पात्र मीना एक अनाथ लड़की है। जिसकी परवरिश उसके चाचा–चाची द्वारा की जाती है।

4. मीना के परवरिश के बोझ से चाचा–चाची बचने हेतु बारह साल की मीना की शादी पचास साल के रंडुवे के साथ कर देते हैं। बारह–तेरह साल की मीना में लाला को अपनी पोती नजर आती है। वह मीना को वापिस घर लौटाता है।

5. मीना का पुनर्विवाह ठेलेवाले जगन से होता है। वह उसे भोग्या समझता है। एक साल बाद वह मीना को मदन दलाल की सहायता से कोठेवाली को बेच देता है।

6. कोठे की साज–सजावट, सजे–धजे कमरों को मीना विस्मित होकर देखती रहती है। संगीत मास्टर की कृपा से मीना कोठे से बाहर निकल आती है और वह रेड़ियो स्टार बनती है।

7. सुरेश के मँगनी के वक्त कैलाश के माध्यम से मीना, प्रताप सिंह से जुड़ जाती है। उसके बाद तो जुड़ने

और जुड़कर टूटने में उनके साथ और लोग भी शामिल हो जाते हैं। अंत में वह हमेशा के लिए अकेली हो जाती है।

8. उपन्यास में प्रताप सिंह और बीजी का सुखी परिवार चित्रित किया है। मीना इस सुखी परिवार में कबाब में हड्डी बनकर उसे नरक बना देती है। उसके परिणाम उसे खुद को भी भुगतने पड़ते हैं।

9. बाऊ जी की मृत्यु के बाद विकी अपना घर बेच देता है। तब घर की यादें उन्हें पीछे खींचती है। विकी को आगे बढ़ना है। विगत से कटना है। तब मीना मौसी उसका हाथ पकड़कर उसे आगे बढ़ा देती है क्योंकि वह जानती है, जीवन जीने के लिए कटना, जुड़ना, जख्मी होना सभी बातें अनिवार्य होती है।

10. इस उपन्यास में जहाँ बीजी की आस्थाओं का करुण अंत है, वही मीना मौसी की टूटे परिवार को जोड़ती अक्खड़ जिजीविषा भी है।

4.8 स्वाध्याय :

4.8.1 लघुत्तरी प्रश्न :

1) अंतिम साक्ष्य उपन्यास में चित्रित देश काल तथा वातावरण।

2) अंतिम साक्ष्य उपन्यास की भाषाशैली।

3) अंतिम साक्ष्य उपन्यास का उद्देश्य।

4) उपन्यास में चित्रित दो समस्याएँ।

4.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) उपन्यास के तत्त्वों के आधारपर अंतिम साक्ष्य उपन्यास में चित्रित देश काल तथा वातावरण तत्त्व की सोदाहरण चर्चा कीजिए।

2) चंद्रकांता द्वारा लिखित अंतिम साक्ष्य उपन्यास पर स्थानीय भाषा का प्रभाव रहा है। उपन्यास के भाषाशैली तत्त्व के आधारपर स्पष्ट कीजिए।

3) 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास नारी जीवन की दर्दनाक कहानी है। उपन्यास के उद्देश्य तत्त्व के आधारपर स्पष्ट कीजिए।

4) 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश ड़ालिए।

4.8.3 ससंदर्भ व्याख्या के प्रश्न :

1) ''मेरी बहन के घर मँगनी है, मेरी सहेली न जाए तो मुझे अच्छा थोड़े ही लगेगा।'' (पृ. 12)

2) ''अब घर-संसार को धंधों में लगना चाहिए। मृतक के साथ मरा थोड़े ही जाता है। यह जन्म-मरण का चक्कर तो चलता ही रहता है।'''' (पृ. 50)

3) ''बच्चा बड़ा हो रहा है, तू इसके साथ चिकचिक मत किया कर। ऐसे लड़का हाथ से निकल जाएगा।'' (पृ. 59)

4) ''जा, यार! मौज कर। दिल्ली तो रंगीन शहर है।'' (पृ. 65)

5) ''ऐसा दिल तो उसका कइयों ने तोड़ा होगा। सच मानो तो उस उम्र में दिल नाजुक होता है; पर होता है बड़ा इलास्टिकी। फैलता-सिकुड़ता ज्यादा है, टूटता बहुत कम।'' (पृ. 73)

6) ''दोस्त! कभी अपने को भूलकर खुली आँखों से दुनिया देखो। तुम-हम लाखों लोगों से ज्यादा खुशनसीब हैं। कम-से-कम हम जी तो रहे हैं। जिंदगी अपने- आप में क्या कम खूबसूरत है?'' (पृ. 76)

7) ''कटना, जुड़ना, जख्मी होना, अनिवार्य है, जीने के लिए।''(पृ. 79)

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) नारी की पीड़ा चित्रित करनेवाली हिंदी लेखिकाओं की सूची बनाइए।

2) नारी पर होनेवाले अन्याय-अत्याचारों को दर्शानेवाले नुक्कड़ नाटकों का आयोजन करने की कोशिश करें।

3) अपने क्षेत्र में मानवतावादी मूल्यों का प्रचार एवं प्रसार कीजिए।

4) संयुक्त परिवार के लाभ और परिवार विघटन से होनेवाली हानि की सूची तैयार कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) बूँद और समुद्र- अमृतलाल नागर (उपन्यास)

2) अलग्योझा प्रेमचंद (कहानी)

●●●